राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

अक्टूबर - 2025
मूल्य ₹ 50/-
RNI NO. : MAHHIN-2014/55532
www.swarnimumbai.com

आरक्षण की राजनीति!

ऑनलाइन कंपनियों का डार्क पैटर्न!

दिवाली
परंपरा, परिवर्तन और प्रकाश का पर्व...

JOB VACANCY

ADVERTISING & SALES EXECUTIVE

PRINT & DIGITAL MAGAZINE

Location: Mumbal (Field + Office)

Employment Type: Full-time / Part-time

ROLE & RESPONSIBILITIES

- Identify and approach potential advertisers across sectors (corpotates, SMEs, Government, Institutions)
- Present advertising options and packages for the magazine (print & digital)
- Maintain strongrelationships with existing and new clients to ensure repeat business

SALARY & BENEFITS

- Base salary- high commission structure
- Potential earnings ₹40,000–50.000/mont for achieving targets
- Performance-based incentives and bonuses

HOW TO APPLY:

Send a **swarnim mmbai@yahoo.in**

To: **9082391833**

SWARNIM
MUMBAI

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO.: MAHHIN-2014/55532

• वर्ष : 10 • अंकः 07 • मुंबई • अक्टूबर-2025

मुद्रक-प्रकाशक,संपादक
नटराजन बालसुब्रमणियम

कार्यकारी संपादक
मंगला नटराजन अय्यर

उप संपादक
भाग्यश्री कानडे,
संतोषी मिश्रा, एन.निधी

ब्यूरो चीफ
ओडिशाः अशोक पाण्डेय
उत्तर प्रदेशः विजय दूबे
पटनाः राय यशेन्द्र प्रसाद

टंकन व पृष्ठ सज्जा
ज्योति पुजारी, सोमेश

मार्केटिंग मैनेजमेंट
राजेश अय्यर, शैफाली

संपादकीय कार्यालय

Add: Tirupati Ashish CHS.,
A-102, A-1 Wing, Near
Shahad Station, Kalyan (W),
Dist: Thane, PIN: 421103,
Maharashtra.
Phone: 9082391833,
9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in
Website: www.swarnimumbai.com

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : बी. नटराजन द्वारा तिरुपति को.ऑप, हॉसिंग सोसायटी, ए-१ विंग १०२, नियर शहाड स्टेशन, कल्याण (वेस्ट)-४२११०३, जिलाः ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित व *महेश प्रिन्टर्स, बिरला कॉलेज, कल्याण से मुद्रित।*

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

सभी विवादों का निपटारा मुंबई न्यायालय होगा।

इस अंक में...

आईटी सेक्टर का संकटः 05

आरक्षण की राजनीति! 06

दिवाली परंपरा, परिवर्तन और प्रकाश का पर्व... 14

पकवान 18

ऑनलाइन कंपनियों का डार्क पैटर्न! 20

राशिफल 24

मुन्नारः चाय की वादियों में बसा स्वर्ग 26

सिनेमा 29

जीएसटी सुधार २०२५ः महाराष्ट्र की अर्थव्यवस्था को कैसे ... 30

कीट डीम्ड विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर का तीन दिवसीय वार्षिक... 32

भारत को अंतर्राष्ट्रीय मध्यस्थता का वैश्विक केंद्र बनाएगा कीट सेंटर फॉर ... 33

कीस की मेधावी छात्रा जामुनी झांकार बनीं चुकतिया भुंजिया... 35

दार्जिलिंग में भारी बारिश-भूस्खलन का कहर, पुल टूटा-रास्ते बंद . 36

जल्लाद 38

'दादी का आँगन' 44

रीढ़ की हड्डीः शरीर का जीवनदायिनी स्तंभ 50

जानलेवा खांसी सिरप! 54

गाजर की खेती... 56

सुविचारः

अच्छी बात बोलने में कंजूसी न करें! अपनी वाणी को मृदुल बनाएं!
तत्काल निर्णय लेने की अपनी अद्भुत क्षमता को कार्यरूप में परिणत करें!

कृषि ज़मीन का सिकुड़ता दायरा

कृषि भारत की अर्थव्यवस्था और समाज की रीढ़ है। लगभग आधी से अधिक आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से खेती पर निर्भर करती है। लेकिन हाल के वर्षों में एक गंभीर समस्या उभरकर सामने आई है–खेती योग्य ज़मीन का दायरा घटता जाना। यह केवल भारत की नहीं, बल्कि पूरी दुनिया की साझा चिंता है। बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण और जलवायु संकट ने कृषि भूमि को लगातार दबाव में डाल दिया है। भारत दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी कृषि भूमि रखने वाला देश है। लेकिन आँकड़े बताते हैं कि १९६० के दशक में जहाँ प्रति व्यक्ति ०.५ हेक्टेयर कृषि भूमि उपलब्ध थी, आज वह घटकर ०.१५ हेक्टेयर से भी कम रह गई है। सरकारी आँकड़ों के अनुसार, कृषि योग्य भूमि धीरे-धीरे निर्माण कार्य, सड़क, हाइवे और उद्योगों में बदल रही है। लगभग ३०% भूमि का गंभीर क्षरण हो चुका है, जिसमें उपजाऊपन घटने और बंजर होने की समस्या सबसे बड़ी है।

गाँवों और कस्बों की उपजाऊ ज़मीन तेजी से रिहायशी और व्यावसायिक परियोजनाओं में बदल रही है। 'स्मार्ट सिटी' और औद्योगिक कॉरिडोर जैसे प्रोजेक्ट्स सीधे खेतों पर कब्ज़ा कर रहे हैं। अत्यधिक रासायनिक खाद और कीटनाशकों का प्रयोग मिट्टी की प्राकृतिक उर्वरता को कम कर रहा है। भू-जल के अत्यधिक दोहन से मिट्टी में लवणता (salinity) बढ़ रही है। जलवायु परिवर्तन, बाढ़ और सूखा जैसी चरम मौसमी घटनाएँ लगातार उपजाऊ भूमि को प्रभावित कर रही हैं। तापमान बढ़ने से खेती की चक्रवृत्ति गड़बड़ा रही है।

लगातार बढ़ती आबादी और पारिवारिक बँटवारे के कारण खेत छोटे-छोटे टुकड़ों में बँट गए हैं, जिससे उपज और भूमि प्रबंधन दोनों कठिन हो गए हैं। संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) के अनुसार १९७० के दशक से लेकर अब तक दुनिया में कृषि योग्य भूमि में करीब २०% कमी दर्ज की गई है। अफ्रीका और एशिया के देशों में यह समस्या सबसे गंभीर है, क्योंकि यहाँ जनसंख्या तेज़ी से बढ़ रही है। दुनिया भर में लगभग ३३% उपजाऊ भूमि का क्षरण हो चुका है।

जब भूमि घटेगी और आबादी बढ़ेगी, तो भोजन की उपलब्धता पर संकट गहराएगा। खेती योग्य ज़मीन घटने से किसानों की आमदनी भी सिकुड़ेगी। खेती से गुज़ारा न होने पर लोग शहरों की ओर पलायन करेंगे, जिससे शहरी भीड़भाड़ और बढ़ेगी।

सैद्धांतिक रूप से यह बिल्कुल सही है कि औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के लिए बंजर/अनुपजाऊ ज़मीन का उपयोग होना चाहिए, न कि उपजाऊ कृषि योग्य भूमि का। लेकिन व्यवहारिक स्थिति क्यों अलग है? अक्सर बंजर ज़मीनें ऐसी जगह होती हैं जहाँ पानी, सड़क और बिजली जैसी बुनियादी सुविधाएँ नहीं होतीं। उद्योग और शहर ऐसी जगह चाहते हैं जहाँ परिवहन आसान हो और संसाधन पास मिलें। उपजाऊ ज़मीन आमतौर पर नदियों/सड़कों के पास होती है, इसलिए उस पर कब्ज़ा करना कंपनियों को आसान और सस्ता लगता है। बंजर ज़मीन को रहने योग्य/उद्योग योग्य बनाने में भारी निवेश करना पड़ता है (मिट्टी सुधार, पानी लाना, सड़क बनाना)। इसके मुकाबले उपजाऊ ज़मीन पहले से ही सपाट और उपयोग के लिए सुविधाजनक होती है।

कई बार राजनीतिक दबाव और रियल एस्टेट लॉबी के कारण उपजाऊ खेत ही अधिग्रहित कर लिए जाते हैं। किसान को अगर उद्योग/शहर बनाने वाली कंपनी से मोटी रकम मिलती है, तो वह उपजाऊ ज़मीन बेचने को तैयार हो जाता है। बंजर ज़मीन की कीमतें अपेक्षाकृत कम होती हैं, इसलिए मालिक उसे बेचना नहीं चाहता। कृषि योग्य ज़मीन की रक्षा करने वाला कानून सख्ती से लागू होना चाहिए। सरकार बंजर भूमि को बुनियादी सुविधाओं से लैस करके उद्योगों को उपलब्ध कराए। राज्य सरकारें बंजर ज़मीन का रजिस्टर तैयार करें और उद्योगों/शहर योजनाओं को उसी से ज़मीन आवंटित करें। जिस तरह जंगल बचाने की मुहिम होती है, उसी तरह खेती बचाने का भी आंदोलन चलना चाहिए। यानी, सही विकल्प यही है कि शहरीकरण और औद्योगिकीकरण बंजर ज़मीन पर हो, लेकिन ज़मीनी सच्चाई यह है कि सुविधा, पैसा और नीतिगत कमी के कारण खेती की ज़मीन पर ही बुलडोज़र चल जाता है।

खेती योग्य ज़मीन का दायरा घटता जाना केवल किसानों की समस्या नहीं, बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र की खाद्य सुरक्षा से जुड़ा हुआ संकट है। अगर आज ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो आने वाले दशकों में भारत सहित पूरी दुनिया में भूख और कृषि संकट गंभीर रूप ले सकता है। इसलिए यह आवश्यक है कि सरकारें, समाज और किसान मिलकर भूमि संरक्षण और सतत कृषि को सर्वोच्च प्राथमिकता दें। यही आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित भविष्य की गारंटी हो सकती है। ■

- मंगला नटराजन

आईटी सेक्टर का संकटः टीसीएस में छंटनी और कर्मचारियों की चुनौती

भारत की आईटी कंपनियाँ लंबे समय तक स्थिर रोजगार और आकर्षक वेतन पैकेज का प्रतीक मानी जाती रही हैं। टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) जैसे दिग्गजों ने लाखों युवाओं को करियर का सपना दिया। लेकिन हाल ही में जब टीसीएस ने बड़े पैमाने पर कर्मचारियों की कटौती शुरू की, तो इसने पूरे आईटी उद्योग की सुरक्षित छवि पर प्रश्नचिह्न खड़े कर दिए।

टीसीएस की छंटनी केवल एक कंपनी का निर्णय नहीं, बल्कि पूरे आईटी सेक्टर की दिशा बदलने का संकेत है। जहाँ एक ओर कंपनियाँ लागत घटाने और ऑटोमेशन पर भरोसा कर रही हैं, वहीं कर्मचारियों को अब अपनी योग्यता और कौशल को निरंतर निखारते रहना होगा। स्थिरता अब अनुभव पर नहीं, बल्कि नवाचार और अनुकूलनशीलता पर निर्भर करेगी।

कर्मचारियों की भरपाई (Compensation)

नोटिस पीरियड वेतन - जिन कर्मचारियों को तुरंत नौकरी छोड़नी पड़ी, उन्हें १-३ महीने का वेतन अतिरिक्त दिया जा रहा है।

सेवरेन्स पैकेज - नौकरी की अवधि के आधार पर कुछ अतिरिक्त भुगतान।

PF और ग्रेच्युटी - लंबे समय तक काम करने वालों को कानूनी रूप से इसका लाभ मिल रहा है।

हेल्थ इंश्योरेंस - कुछ समय तक कंपनी प्रायोजित मेडिकल सुविधाएँ जारी रहती हैं।

हालाँकि, भारत में यह पैकेज पश्चिमी देशों जितना उदार नहीं होता। कर्मचारियों को लंबी अवधि तक सहारा देने वाला कोई ठोस तंत्र अभी भी नहीं है।

छंटनी के कारण

वैश्विक मंदी - अमेरिका और यूरोप में खर्च कम होने से नए प्रोजेक्ट घटे।

ऑटोमेशन और एआई - जिन कामों के लिए पहले बड़ी टीम चाहिए थी, अब मशीन और सॉफ्टवेयर से निपट रहे हैं।

लागत कम करने की रणनीति - कंपनियाँ 'बेंच पर बैठे' यानी प्रोजेक्ट-रहित कर्मचारियों को हटाकर खर्च घटा रही हैं।

बिज़नेस मॉडल का बदलाव - आउटसोर्सिंग से हटकर अब क्लाउड, एआई और डिजिटल ट्रांसफ़ॉर्मेशन पर ध्यान है, जिसके लिए अलग कौशल चाहिए।

भारत सरकार आईटी सेक्टर को देश की अर्थव्यवस्था का आधार मानती है। इसलिएः कौशल विकास योजनाएँ शुरू की गई हैं ताकि कर्मचारी नई तकनीकों (AI, डेटा साइंस, साइबर सिक्योरिटी) में प्रशिक्षित हो सकें। स्टार्टअप इंडिया और डिजिटल इंडिया जैसे अभियानों के ज़रिए युवाओं को उद्यमिता की ओर प्रोत्साहित किया जा रहा है। लेकिन छंटनी नियमन को लेकर अभी भी स्पष्ट कानून नहीं है, जिससे कर्मचारियों के हितों की सुरक्षा अधूरी है। कुछ आईटी यूनियनें यह मांग कर रही हैं कि छंटनी से पहले कर्मचारियों को री-स्किलिंग का अवसर दिया जाए। न्यूनतम सेवरेन्स पैकेज को कानूनी रूप से बाध्यकारी बनाया जाए। अचानक नौकरी से निकालने की बजाय ट्रांज़िशन पीरियड दिया जाए।

इस संकट से एक बड़ा संदेश मिलता है नई तकनीक सीखना अनिवार्य हैः क्लाउड, एआई, मशीन लर्निंग, ब्लॉकचेन, और साइबर सिक्योरिटी में कौशल हासिल करना ही भविष्य सुरक्षित करेगा। कई आईटी प्रोफेशनल अब खुद छोटे टेक-उद्यम शुरू कर रहे हैं। वैश्विक प्लेटफ़ॉर्म्स पर काम करने का विकल्प बढ़ रहा है।

टीसीएस की छंटनी केवल एक कंपनी का निर्णय नहीं, बल्कि पूरे आईटी सेक्टर की दिशा बदलने का संकेत है। जहाँ एक ओर कंपनियाँ लागत घटाने और ऑटोमेशन पर भरोसा कर रही हैं, वहीं कर्मचारियों को अब अपनी योग्यता और कौशल को निरंतर निखारते रहना होगा। स्थिरता अब अनुभव पर नहीं, बल्कि नवाचार और अनुकूलनशीलता पर निर्भर करेगी।

आरक्षण की राजनीति!

अवसर, संघर्ष और समानता की तलाश'

महाराष्ट्र की राजनीति इन दिनों आरक्षण के नए मोड़ पर खड़ी है। मराठा समाज के आंदोलन के बाद सरकार ने ऐतिहासिक हैदराबाद गज़ेटियर को आधार बनाकर मराठों को कुंभी जाति का प्रमाण पत्र देने का रास्ता खोला। इस फैसले से मराठा समाज को ओबीसी (Other Backward Classes) वर्ग का लाभ मिलने की संभावना बढ़ गई है। लेकिन अब इस निर्णय का असर अन्य समुदायों पर भी दिखने लगा है–बंजारा समाज ने भी इसी गज़ेटियर के आधार पर खुद को अनुसूचित जनजाति (ST) वर्ग में शामिल करने की मांग तेज कर दी है।

राज्य में मुख्य रूप से गन्ना कटरने, ईंट भट्ठे और निर्माण श्रमिकों के रूप में काम करने वाला बंजारा समुदाय अनुसूचित जनजाति (एसटी) में शामिल होने की मांग को लेकर एक साथ आ गया है और जिले में लाखों रैलियां होने लगी हैं। समुदाय की मांग है कि हैदराबाद गजेटियर को मराठों की तरह लागू किया जाना चाहिए। राज्य में बंजारा समुदाय की एक बड़ी आबादी है। यह समुदाय मराठवाड़ा के सभी आठ जिलों में है और 'विमुक्त जाति-ए' श्रेणी में ३ प्रतिशत आरक्षण है। इस श्रेणी में कुल १४ प्रजातियां हैं, जिनमें से बंजारा एक है। इस समुदाय में १८ उपजातियां हैं जैसे गोर बंजारा, लंबाडा, लभान, लमन, कछवाकवाले बंजारा आदि। राज्य के बंजारा समुदाय के तीन विधायकों 'दिगरास' के संजय राठौड़, 'पुसद' के इंद्रनील नाइक और 'मुखेड' के तुषार राठौड़ ने अगस्त के अंतिम सप्ताह में मुंबई में मराठा आरक्षण के लिए आंदोलन किया था। इसके बाद 'समता परिषद' के अध्यक्ष और मंत्री छगन भुजबल के नेतृत्व में ओबीसी जातियों

हैदराबाद गज़ेटियर क्या है

हैदराबाद गज़ेटियर एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ है, जो हायदराबाद राज्य (Nizam's Hyderabad) के अधीन रहने वाले इलाकों - जिनमें आज महाराष्ट्र का Marathwada हिस्सा भी है - की जातियों, समाज, खेती-किसानी, व्यवसाय आदि की जानकारी इकट्ठा करता था।

हाल ही में महाराष्ट्र सरकार ने एक सरकारी प्रस्ताव (GR) पास किया है कि यदि कोई Maratha व्यक्ति इस गज़ेटियर में यह दस्तावेज जमा कर सकता है कि उसके पूर्वज Kunbi जाति से थे, तो उसे Kunbi प्रमाण पत्र मिलेगा जिससे वे OBC आरक्षण के दायरे में आ सकेंगे।

Banjara समुदाय की मांग

Banjara समुदाय का कहना है कि हैदराबाद गज़ेटियर में Banjara समुदाय को Scheduled Tribe (ST) जाति के रूप में दर्ज किया गया है। इसलिए यदि सरकार Marathas के लिए वह दस्तावेज़ मान रही है, तो उन्हें भी उसी तरह ST दर्जा मिलना चाहिए। फिलहाल Banjara समुदाय को महाराष्ट्र में Vimukta Jati / Nomadic Tribes (VJNT) श्रेणी में कुछ आरक्षण मिल रहा है (लगभग ३%) लेकिन ST श्रेणी के मुकाबले उनका आरक्षण कम है। वे मांग कर रहे हैं कि सरकार एक GR निकाले कि Banjaara समुदाय को ST दर्जा दिया जाए, और उनके आरक्षण का प्रतिशत ST सीमा (जो लगभग ७%) में लाया जाए।

किन बिन्दुओं पर बहस है

सरकार या विरोधी दल कहते हैं कि पुराने दस्तावेज़ (gazetteer) सिर्फ इतिहास के रिकॉर्ड हैं, उन्हें सीधे कानून का हिस्सा नहीं माना जा सकता जब तक संविधान या संसद/राज्य विधानमंडल द्वारा नहीं बनाया गया हो। Reservation यानी आरक्षण देने की प्रक्रिया संवैधानिक है; ST, SC, OBC श्रेणियाँ संविधान और कानून से तय होती हैं, सिर्फ ऐतिहासिक दस्तावेजों से नहीं। यदि ST समुदायों की संख्या बढ़ती है, तो उससे आरक्षण की कुल प्रतिशत सीमाएँ, लाभ वितरण और अन्य समुदायों के हक़ों पर असर पड़ सकता है।

Banjara समुदाय यह कह रहे हैं कि यदि सरकार हैदराबाद गज़ेटियर को Marathas के लिए लागू कर सकती है, तो उन्हें भी उसी न्याय (equal treatment) के आधार पर ST दर्जा मिलना चाहिए। यह मांग समानता (equality) और पिछले रिकॉर्डों को पुनः मान्यता देने की है।

ने एक साथ आकर मराठों को कुणबी प्रमाण पत्र दिए जाने के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। बंजारा समुदाय को इसमें जोड़ा गया है और यह समुदाय मराठों की तरह हैदराबाद गजेटियर को लागू करने की मांग कर रहा है।

अनुसूचित जनजातियों के लिए ७ प्रतिशत आरक्षण है। इस श्रेणी में नौकरियों में बहुत कम प्रतिस्पर्धा है। इसका फायदा उठाते हुए प्रदेश में फर्जी आदिवासी प्रमाण पत्र की धूम मची हुई है। विधानसभा और लोकसभा चुनाव में

भी आदिवासियों के लिए आरक्षण है। राज्य में धनगर समुदाय भी इस श्रेणी में आरक्षण की मांग कर रहा है। चूंकि मराठवाड़ा में बंजारा समुदाय का बहुमत है, इसलिए विधायकों ने बंजारा आंदोलन को अपना समर्थन दिया है। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के विधायक धनंजय मुंडे ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर बंजारा समुदाय के लिए आदिवासी आरक्षण की मांग की है।

१८८४ के ब्रिटिश गजेटियर में, निजाम के राज्य में बंजारा समुदाय को आदिवासी के रूप में उल्लेख किया गया है। राज्य सरकार ने इस गजेटियर के संदर्भ में मराठा समुदाय को कुनबी प्रमाण पत्र जारी करने का निर्णय लिया है। उधर, बंजारा समुदाय को इसी गजेटियर के आधार पर आदिवासी प्रमाण पत्र देने की मांग की जा रही है। हम केवल हैदराबाद गजेटियर के अनुसार आदेश नहीं दे रहे हैं। १९५६ में जब देश में द्विभाषी राज्य बनाए गए थे, तब निजाम के हैदराबाद राज्य के मराठवाड़ा के पांच जिलों को महाराष्ट्र में शामिल किया गया था। उस समय, बंजारा समुदाय को आश्वासन दिया गया था कि अनुसूचित जनजातियों का आरक्षण जो निजाम के राज्य में बंजारा समुदाय के लिए लागू था, महाराष्ट्र में भी लागू होगा। अब हम मांग करते हैं कि इसे लागू किया जाए। - हरिभाऊ राठौड़, पूर्व सांसद और बंजारा नेता

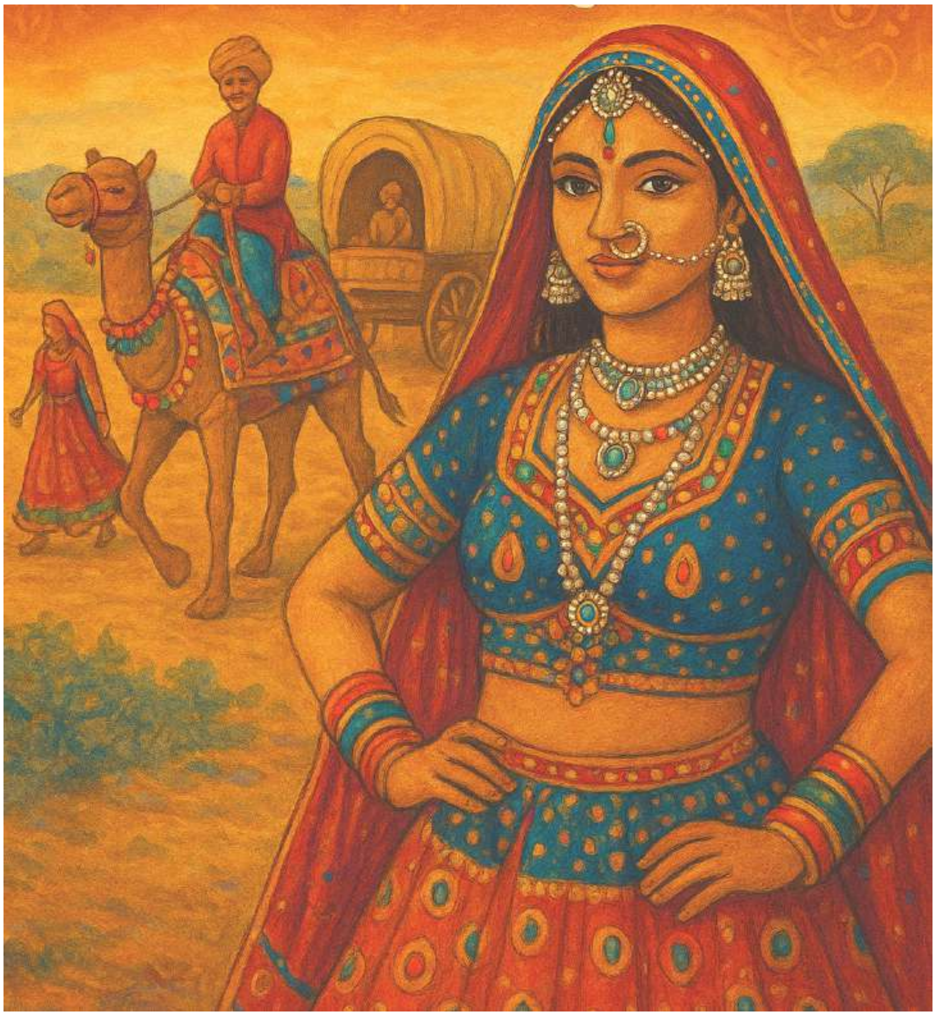

बंजारा समाज की स्थिति

महाराष्ट्र में बंजारा समुदाय को अभी विमुक्त जाति/घुमंतु जनजाति (VJNT) वर्ग में आरक्षण मिला है। इस वर्ग का आरक्षण प्रतिशत बहुत सीमित (लगभग ३%) है, जबकि अनुसूचित जनजाति (ST) वर्ग को लगभग ७% आरक्षण मिलता है। बंजारा समाज का दावा है कि हैदराबाद गज़ेटियर में उनका उल्लेख आदिवासी जनजाति के रूप में किया गया है। इसलिए यदि मराठों को गज़ेटियर के आधार पर ओबीसी दर्जा दिया जा सकता है, तो बंजारों को भी उसी आधार पर ST का दर्जा मिलना चाहिए।

विवाद और चुनौतियाँ

संवैधानिक प्रक्रियाः किसी भी जाति या समुदाय को ST, SC या OBC में शामिल करने के लिए केवल ऐतिहासिक दस्तावेज पर्याप्त नहीं हैं। इसके लिए राज्य सरकार की सिफारिश और केंद्र सरकार व संसद की मंजूरी आवश्यक है।

आरक्षण संतुलनः यदि नए समुदायों को ST में शामिल किया जाता है, तो पहले से लाभ ले रहे समूहों का हिस्सा कम हो सकता है। इससे सामाजिक तनाव और विरोध भी बढ़ सकता है। राजनीतिक असरः मराठा आरक्षण आंदोलन पहले ही महाराष्ट्र में राजनीति का बड़ा मुद्दा बना हुआ है। अब बंजारा, धनगर और अन्य समुदाय भी अपनी-अपनी मांगों को जोर-शोर से उठा रहे हैं।

बंजारा समाज का परिचय

बंजारों को लाम्बानी, गोर, लबाना, गोर-बंजारा जैसे नामों से भी जाना जाता है। इनकी उत्पत्ति के बारे में अलग-अलग मत हैं। कुछ इतिहासकार इन्हें राजस्थान के राजपूत वंशज मानते हैं, तो कुछ इनके मूल को मध्य एशिया या अफगानिस्तान से जोड़ते हैं। मध्यकाल में बंजारों ने बड़े-बड़े काफ़िलों में अनाज, नमक, मसाले, कपड़े और घोड़े की ढुलाई का काम किया। मुग़ल काल और बाद में निज़ामशाही तथा मराठा शासन में बंजारों की गाड़ियों (जिन्हें तांडा कहा जाता था) से सेनाओं को रसद मिलती थी।

जीवन शैली और संस्कृति

बंजारा समाज परंपरागत रूप से घुमंतु रहा है। ये लोग तंबुओं या अस्थायी बस्तियों में रहते थे, जिन्हें तांडा कहा जाता है। बंजारों की लाम्बानी बोली है, जो हिंदी, राजस्थानी, कन्नड़, तेलुगु, मराठी और अन्य भाषाओं का मिश्रण है। स्त्रियाँ अपने रंग-बिरंगे घाघरे, भारी चांदी के आभूषण और कढ़ाईदार कपड़ों के लिए मशहूर हैं। बंजारा समाज का लोकनृत्य और लोकगीत (खासकर लाम्बाडी नृत्य) भारत की लोकसंस्कृति का अनमोल हिस्सा है।

सामाजिक और आर्थिक स्थिति

पुराने समय में बंजारों का प्रमुख व्यवसाय अनाज और माल ढुलाई था। लेकिन आधुनिक परिवहन साधनों (रेल, ट्रक) के आने के बाद उनका पारंपरिक काम धीरे-धीरे खत्म हो गया। आज बहुत से बंजारा खेती, छोटे व्यापार, मजदूरी और सरकारी नौकरियों में लगे हैं। कुछ प्रदेशों में ये अभी भी सामाजिक और आर्थिक

रूप से पिछड़े माने जाते हैं। बंजारा समुदाय आज पूरे भारत में फैला है, विशेषकर महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात और छत्तीसगढ़ में इनकी बड़ी आबादी है। अनुमान है कि भारत में इनकी संख्या लगभग १ करोड़ से अधिक है।

आरक्षण और सरकारी दर्जा

विभिन्न राज्यों में बंजारा समाज को अलग-अलग श्रेणियों में आरक्षण दिया गया है।

महाराष्ट्र में: Vimukta Jati / Nomadic Tribes (VJNT)

कर्नाटक व तेलंगाना में: कुछ जगहों पर SC/OBC/ST वर्ग

राजस्थान में: OBC

अभी महाराष्ट्र में बंजारा समाज ST दर्जे की मांग कर रहा है।

प्रसिद्ध योगदान

बंजारों की कला और संस्कृति अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सराही गई है। लाम्बानी कढ़ाई आज हैंडलूम और हैंडीक्राफ्ट मार्केट में लोकप्रिय है। बंजारा लोकगीत और नृत्य अक्सर राष्ट्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों का हिस्सा बनते हैं। बंजारा समाज भारत की यायावर परंपरा, रंगीन संस्कृति और कठिन परिश्रम का प्रतीक है। परंतु आधुनिक समय में यह समाज अभी भी शिक्षा, रोज़गार और सामाजिक समानता की चुनौतियों से जूझ रहा है।

क्यों बढ़ रही है आरक्षण की मांग?

समाज के हर तबके में अमीर-गरीब का फर्क मौजूद है। जो जातियाँ परंपरागत रूप से अपेक्षाकृत मजबूत मानी जाती थीं, उनमें भी आज आर्थिक रूप से कमजोर परिवार हैं। ऐसे लोग आरक्षण को एक आर्थिक सुरक्षा और अवसर की गारंटी मानते हैं। उच्च शिक्षा और सरकारी नौकरियों में सीटें सीमित हैं, जबकि आवेदक बहुत ज़्यादा हैं। इससे जातीय समूहों में यह भावना बढ़ी है कि अगर उन्हें आरक्षण न मिला तो उनका अगली पीढ़ी में प्रतिनिधित्व कम हो जाएगा। आरक्षण सिर्फ शिक्षा-नौकरी का मामला नहीं है, बल्कि सम्मान और पहचान का मुद्दा भी बन चुका है। राजनीतिक दल जातियों की मांगों को चुनावी गणित से जोड़कर समर्थन देते हैं। इससे आंदोलन और भी तेज़ हो जाते हैं। जब एक जाति या समुदाय को आरक्षण का लाभ मिलता है, तो अन्य जातियों में भी समानता की भावना से मांग उठती है। उदाहरणः मराठा आंदोलन के बाद बंजारा और धनगर समुदाय की मांगें।

आज लगभग हर राज्य में कोई न कोई समुदाय आरक्षण की मांग लेकर आंदोलन कर रहा है–

महाराष्ट्र में मराठा, धनगर, बंजारा।

राजस्थान में गुर्जर।

हरियाणा में जाट।

कर्नाटक में लिंगायत और वोक्कालिगा।

आंध्र-तेलंगाना में कप्पू और अन्य समुदाय।

यह स्थिति दर्शाती है कि आरक्षण अब केवल पिछड़े वर्गों की सामाजिक न्याय की नीति नहीं रहा, बल्कि राजनीतिक और सामाजिक संघर्ष का सार्वभौमिक साधन बन चुका है।

चुनौतियाँ

संवैधानिक सीमाः सुप्रीम कोर्ट ने आरक्षण की सीमा ५०% तय की है, पर कई राज्यों में यह इससे ऊपर चला गया है।

सच्चे लाभार्थी तक पहुँचः कई बार आरक्षण का असली फायदा उन तक नहीं पहुँच पाता जिनकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत है।

समाज में तनावः जब एक जाति को आरक्षण मिलता है तो दूसरी जातियाँ विरोध करती हैं, जिससे समाज में असंतोष बढ़ता है। यह सही है कि आज हर जाति और समाज आरक्षण की मांग कर रहा है। यह स्थिति बताती है कि भारत में समान अवसर और न्याय का सपना अभी अधूरा है। आरक्षण ने पिछड़ों को आगे बढ़ने का मौका दिया, लेकिन साथ ही यह एक ऐसा मुद्दा बन गया है जिसमें हर समूह खुद को वंचित मानने लगा है। भविष्य में आरक्षण नीति को केवल जाति पर नहीं, बल्कि आर्थिक व सामाजिक दोनों आधारों पर संतुलित करने की ज़रूरत है।

अन्य देशों में आरक्षण...

आरक्षण का मुद्दा सिर्फ भारत का नहीं, बल्कि दुनिया के कई देशों का साझा अनुभव है। फर्क सिर्फ इतना है कि हर देश की ऐतिहासिक परिस्थितियों ने इसके स्वरूप को अलग बना दिया है। आरक्षण का मुद्दा केवल भारत तक सीमित नहीं है। दुनिया के कई देशों में सामाजिक समानता और ऐतिहासिक अन्याय को दूर करने के लिए इसी तरह की नीतियाँ चलाई जाती हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि भारत में यह जाति-आधारित है, जबकि अन्य देशों में ज़्यादातर जातीयता (ethnicity), नस्ल (race), लिंग (gender) या अल्पसंख्यक स्थिति पर आधारित है।

१. अमेरिका (USA)

वहाँ इसे Affirmative Action कहा जाता है। मुख्य रूप से अश्वेत (Black), लैटिनो (Latino), एशियाई (Asian) और महिलाओं के लिए शिक्षा व रोजगार में विशेष अवसर दिए जाते हैं। उद्देश्यः नस्लीय भेदभाव की ऐतिहासिक असमानता को कम करना। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने कॉलेज एडमिशन में affirmative action पर रोक लगा दी, जिससे बहस फिर तेज़ हो गई है।

२. दक्षिण अफ्रीका

अपार्थाइड (Apartheid) के दौर में अश्वेत आबादी को बहुत भेदभाव झेलना पड़ा। १९९४ के बाद वहाँ Black Economic Empowerment (BEE) नीति लाई गई। इसमें अश्वेत, coloured और भारतीय मूल के लोगों को शिक्षा, नौकरी, व्यापार में प्राथमिकता दी जाती है।

३. ब्राज़ील

ब्राज़ील ने २००१ के बाद से विश्वविद्यालयों में नस्लीय और आर्थिक आधार पर कोटा लागू किया। Afro-Brazilian और आदिवासी समुदायों को शिक्षा में सीटें आरक्षित हैं।

४. मलेशिया

यहाँ बुमिपुत्र नीति (Bumiputera Policy) लागू है।

मलय मुस्लिम समुदाय (जो बहुसंख्यक है) को शिक्षा, नौकरियों, जमीन और व्यापार में विशेष अधिकार दिए गए हैं। इसका विरोध चीनी और भारतीय मूल के लोग करते हैं।

५. नेपाल

नेपाल में आरक्षण जाति और समुदाय आधारित है। दलित, जनजाति, मधेसी और महिलाएँ इसमें शामिल हैं। सरकारी नौकरियों और शिक्षा संस्थानों में आरक्षण का प्रावधान है।

६. श्रीलंका

तमिल और सिंहली समुदाय के बीच लंबे समय तक शिक्षा व नौकरियों में असमानता का विवाद रहा। १९७० के दशक में सिंहली छात्रों के लिए विश्वविद्यालय प्रवेश आसान किया गया, जिससे जातीय तनाव और गृहयुद्ध जैसी स्थिति बनी।

तुलना भारत से

भारत में आरक्षण का आधार मुख्यतः जाति और सामाजिक पिछड़ापन है। दूसरे देशों में यह ज़्यादातर नस्ल, जातीय समूह, भाषा, लैंगिक समानता या आर्थिक स्थिति पर आधारित है। भारत में यह सबसे व्यापक और संवैधानिक रूप से स्थापित नीति है, जबकि कई देशों में यह नीतिगत प्रयोग (policy measure) के रूप में चलता है।

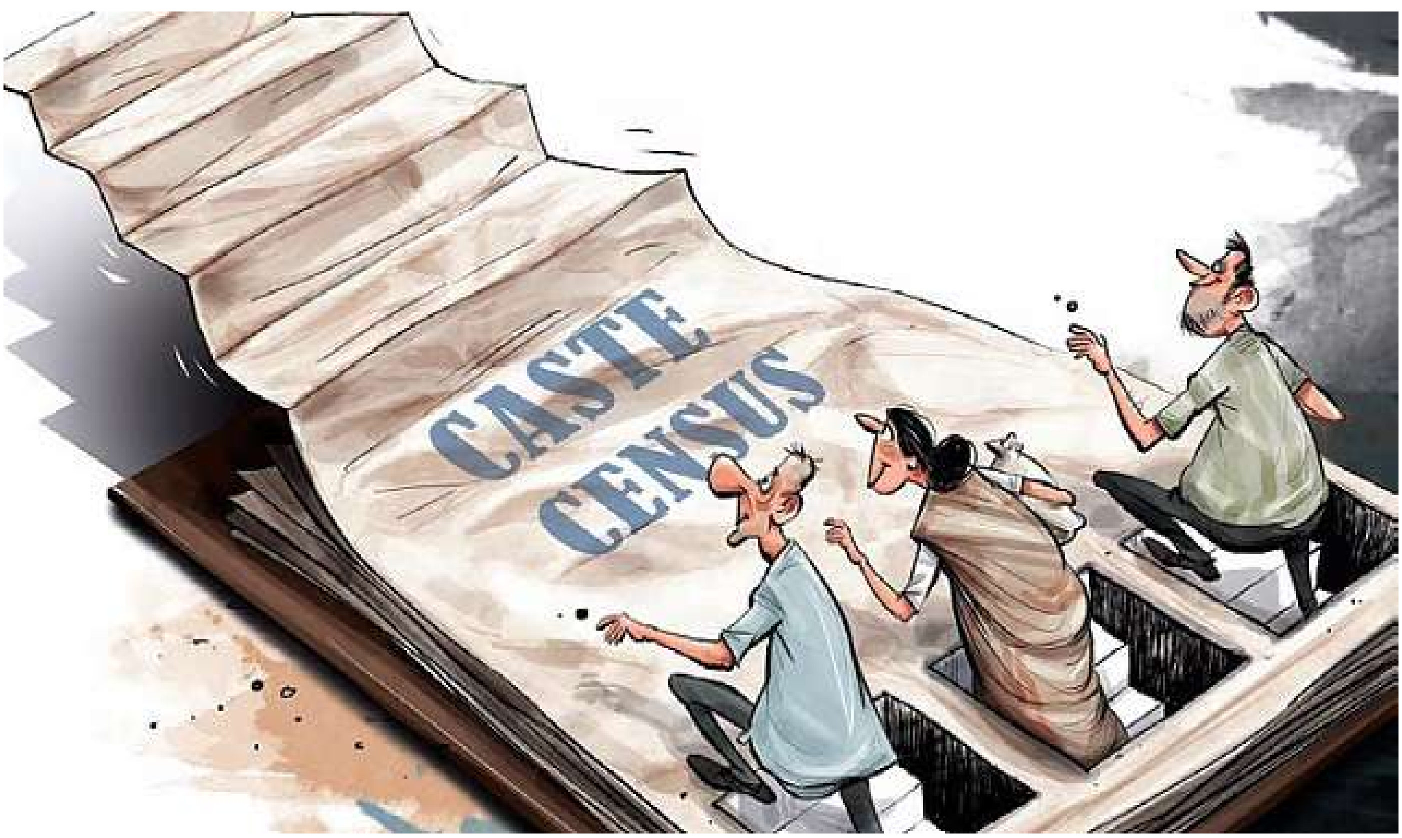

Wholesale Furniture Market

Ulhasnagar,Mumbai

सस्ते फर्नीचर के 5 थोक बाजार

फर्नीचर खरीदिए आधे दामों पर

एक से बढ़कर एक एंटीक आइटम

आरक्षण से कौन नुकसान में है, यह एक दृष्टिकोण (perspective) पर निर्भर करता है। आइए इसे विस्तार से देखें–

१. सामान्य वर्ग (General/Upper Castes)

सबसे ज़्यादा शिकायत इस वर्ग से आती है। इन्हें लगता है कि मेहनत और योग्यता के बावजूद सीटें और नौकरियाँ सीमित होने के कारण उनका हक़ छिन रहा है। प्रतियोगी परीक्षाओं में ज़्यादा अंक लाने के बावजूद चयन न होना इनके लिए सबसे बड़ा दर्द है। आर्थिक रूप से कमजोर सामान्य वर्ग के लोग (EWS) अक्सर कहते हैं कि जाति नहीं, गरीबी को आधार बनाया जाना चाहिए।

२. आरक्षित वर्ग (SC/ST/OBC)

देखने में लगता है कि उन्हें फ़ायदा मिलता है, लेकिन नुकसान भी है:

समाज का एक हिस्सा उन्हें कमतर या 'quota वाला' मानकर देखता है।

प्रतियोगी माहौल में उन्हें बार-बार अपनी क्षमता साबित करनी पड़ती है।

कई बार योग्य उम्मीदवार भी 'आरक्षण के सहारे आए हैं' कहकर मानसिक दबाव झेलते हैं।

३. मध्यवर्गीय और शहरी नौजवान

शहरी शिक्षित युवा (चाहे किसी भी जाति के हों) प्रतियोगी परीक्षाओं और नौकरियों में कम अवसर पाते हैं।

निजी क्षेत्र में आरक्षण सीमित है, इसलिए सरकारी नौकरियों में दबाव और बढ़ जाता है।

४. समाज और देश

अगर संतुलन न रहे तोः

योग्यता (merit) बनाम सामाजिक न्याय की बहस तेज़ हो जाती है। कभी-कभी समाज में जातीय तनाव और विरोध प्रदर्शन खड़े होते हैं। 'आरक्षण स्थायी होना चाहिए या धीरे-धीरे खत्म होना चाहिए' - इस पर कोई सर्वसम्मति नहीं है। आरक्षण का उद्देश्य समानता है, लेकिन अगर इसे संतुलित और समयानुसार संशोधित न किया जाए तो यह किसी एक वर्ग को नहीं बल्कि पूरी व्यवस्था को नुकसान पहुँचा सकता है।

'जिन्हें आरक्षण मिलता है, क्या वे देश की उन्नति के लिए उतना योगदान कर पाते हैं?'

१. योग्यता और अवसर का अंतर

आरक्षण का मूल उद्देश्य यही था कि ऐतिहासिक रूप से वंचित समुदायों को अवसर मिले। जब इन वर्गों को शिक्षा, नौकरी और प्रशासन में प्रवेश मिलता है, तो वे भी अपनी क्षमता दिखा सकते हैं। हज़ारों उदाहरण हैं जहाँ SC/ST/OBC पृष्ठभूमि से आए लोग वैज्ञानिक, आईएएस, डॉक्टर, इंजीनियर बनकर देश की प्रगति में योगदान दे रहे हैं।

२. सामाजिक बाधाएँ

शुरुआत में कई आरक्षित वर्ग के छात्रों/नौकरियों में आए युवाओं को सुविधाओं की कमी और सामाजिक भेदभाव के कारण दिक़्क़तें होती हैं। लेकिन एक बार शिक्षा और अनुभव का आधार मिलने पर वे आगे की पीढ़ियों के लिए role model बनते हैं।

३. वास्तविक योगदान

सरकारी सेवाओं, राजनीति, कला और खेलों में आरक्षित वर्ग से आए लोग अहम भूमिकाएँ निभा रहे हैं। कई उदाहरण बताते हैं कि अवसर मिलने पर ये वर्ग भी देश की प्रगति में उतना ही योगदान देते हैं जितना कोई अन्य वर्ग। हाँ, यह भी सच है कि कुछ लोग अवसर का सही उपयोग नहीं कर पाते, लेकिन ऐसा केवल आरक्षित वर्ग में नहीं होता – हर वर्ग में होता है।

४. समस्या कहाँ है?

जब आरक्षण का उपयोग 'वास्तविक रूप से पिछड़े' लोगों की बजाय अपेक्षाकृत सक्षम परिवार करते हैं, तब आलोचना बढ़ती है।

इससे समाज में यह धारणा बनती है कि 'आरक्षण लेने वाले काम नहीं कर पाते' जबकि सच यह है कि बहुत से लोग काबिलियत से आगे बढ़ते हैं।

आरक्षण पाने वाले लोग देश की उन्नति में योगदान करते हैं, परंतु यह योगदान उनकी व्यक्तिगत मेहनत और अवसरों पर निर्भर है। किसी वर्ग को सामूहिक रूप से 'देश के काम नहीं आता' कहना सही नहीं होगा। असली चुनौती यह है कि आरक्षण का लाभ वास्तव में ज़रूरतमंद तक पहुँचे, न कि सिर्फ़ उन तक जो पहले से स्थापित हैं।

प्रसिद्ध व्यक्तियों के उदाहरण

यहाँ कुछ प्रमुख प्रसिद्ध व्यक्तियों के उदाहरण दिए जा रहे हैं जो आरक्षित वर्ग (SC, ST, OBC आदि) से आते हैं और जिन्होंने भारत की उन्नति और पहचान में बड़ा योगदान दिया है:

☐ शिक्षा और प्रशासन

डॉ. भीमराव आंबेडकर (SC) - भारतीय संविधान के निर्माता, समाज सुधारक और भारत में सामाजिक न्याय की धुरी।

के.आर. नारायणन (SC) - भारत के पहले दलित राष्ट्रपति।

सुशील कुमार शिंदे (SC) - पूर्व केंद्रीय गृह मंत्री।

रामनाथ कोविंद (SC) - भारत के राष्ट्रपति

(२०१७-२०२२)।

□□ राजनीति और समाज

जगजीवन राम (SC) - स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और पूर्व उपप्रधानमंत्री।

मायावती (SC) - उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री और दलित राजनीति की महत्वपूर्ण नेता।

शिबू सोरेन (ST) - झारखंड आंदोलन के बड़े नेता और पूर्व मुख्यमंत्री।

हेमंत सोरेन (ST) - झारखंड के वर्तमान मुख्यमंत्री।

लालू प्रसाद यादव (OBC) - बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री, जिन्होंने ध्ं राजनीति को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई।

नितीश कुमार (OBC) - बिहार के मुख्यमंत्री, सुशासन और सामाजिक न्याय की राजनीति के लिए प्रसिद्ध।

□ कला और साहित्य

डॉ. नामदेव ढसाल (SC) - दलित पैंथर आंदोलन के संस्थापक और प्रसिद्ध कवि।

सावित्रीबाई फुले (OBC) - भारत की पहली महिला शिक्षिका और समाज सुधारक।

तुलसीराम (SC) - मुर्दहिया जैसी आत्मकथा लिखने वाले चर्चित लेखक।

सचिन अहिर (OBC) - सामाजिक और खेल क्षेत्र से जुड़ी हस्ती।

□ विज्ञान और सेवा

डॉ. कल्पना सरोज (एण) - 'दलित शेरनी' कही जाने वाली उद्यमी, कमानी ट्यूब्स की ण्ंि।

डॉ. सत्यपाल सिंह (ध्ं) - शिक्षा और पुलिस सेवा में योगदान।

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' (OBC) - पूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री और लेखक।

इन सभी उदाहरणों से स्पष्ट है कि आरक्षण के सहारे पहली सीढ़ी चढ़ने के बाद इन लोगों ने अपनी मेहनत, प्रतिभा और नेतृत्व से देश की राजनीति, शिक्षा, साहित्य, खेल और विज्ञान में गौरव बढ़ाया। यानी सवाल यह नहीं है कि 'आरक्षण वाले योगदान कर पाते हैं या नहीं', बल्कि यह कि उन्हें अवसर मिले तो वे उतना ही या उससे भी ज़्यादा योगदान कर सकते हैं। असल में संघर्ष (struggle) दोनों वर्गों के लिए अलग-अलग रूप में है–लेकिन अगर हम आज के सामाजिक और शैक्षणिक परिदृश्य को देखें तो सामान्य/जनरल वर्ग (General Category) को कुछ क्षेत्रों में ज़्यादा संघर्ष करना पड़ता है।

क्यों सामान्य वर्ग का संघर्ष अधिक माना जाता है?

उदाहरणः किसी परीक्षा में १ लाख लोग बैठते हैं, तो जनरल वर्ग को ४०-५०% सीटों के लिए प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है, जबकि आरक्षित वर्ग को उनके हिस्से की सीटें मिल जाती हैं।

अत्यधिक प्रतिस्पर्धा

जनरल वर्ग में छोटे अंतर (०.२५-०.५० अंक भी) से सफलता या असफलता तय हो जाती है।

कट-ऑफ अक्सर बहुत ऊँचा जाता है।

आर्थिक असमानता का आधार नहीं

बहुत से आर्थिक रूप से कमजोर सामान्य वर्ग के लोग केवल इसलिए वंचित रह जाते हैं क्योंकि उनकी जाति आरक्षण श्रेणी में नहीं आती।

हालाँकि अब EWS (Economically Weaker Section) आरक्षण लागू हुआ है, लेकिन वह भी १०% तक सीमित है।

आरक्षित वर्ग का संघर्ष कहाँ है?

सामाजिक भेदभाव

कई बार आरक्षण से लाभ लेने के बावजूद उन्हें समाज में 'quota वाला' कहकर नीचा दिखाया जाता है।

कार्यस्थलों या कॉलेजों में यह मानसिक दबाव उनकी प्रगति में बाधा बन सकता है।

ग्रामीण और बेहद गरीब आरक्षित परिवारों तक शिक्षा और स्किल डेवलपमेंट की सुविधा अभी भी कम पहुँचती है।यानी अवसर होने के बावजूद बुनियादी साधनों की कमी उन्हें रोकती है।

□ खेल

एम.सी. मैरीकॉम (ST) - मणिपुर की बॉक्सर, ओलंपिक पदक विजेता।

दीपा कर्माकर (ST) - जिम्नास्ट, जिन्होंने ओलंपिक में भारत का नाम रोशन किया।

सीमित अवसर

सरकारी नौकरियों और उच्च शिक्षा में आरक्षित वर्ग के लिए ४९.५% तक सीटें सुरक्षित हैं। जनरल वर्ग के लिए खुली सीटें कम हो जाती हैं, और प्रतियोगिता बहुत कठिन हो जाती है।

दिवाली परंपरा, परिवर्तन और प्रकाश का पर्व...

संस्कृति और परंपराओं की झलक

आज जब तकनीक और शहरीकरण तेजी से बढ़ रहे हैं, दिवाली का महत्व और भी गहरा हो रहा है। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि अंधकार चाहे कैसा भी हो, एक दीपक से भी उसे मिटाया जा सकता है। परंपरा और आधुनिकता का संतुलन ही समाज को सुंदर बनाता है। पर्यावरण-अनुकूल दिवाली आने वाली पीढ़ियों के लिए हमारी जिम्मेदारी है। दिवाली २०२५ केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति की जड़ों और भविष्य की दिशा का प्रतीक है। यह पर्व हमें सिखाता है कि अंधकार मिटाने के लिए बाहर की रोशनी से अधिक, भीतर के दीपक को जलाना ज़रूरी है।

दिवाली यानी दीपावली–भारत का सबसे बड़ा, जीवंत और लोक-आस्था से जुड़ा यह पर्व केवल एक उत्सव का दिन नहीं है, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक धरोहर, आध्यात्मिक मूल्यों और सामाजिक जुड़ाव का प्रतीक है। दिवाली पाँच दिनों तक मनाई जाएगी, यह पर्व केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि संस्कृति, आस्था और सामाजिक जुड़ाव का उत्सव है। हर साल दिवाली का पर्व कार्तिक माह की अमावस्या तिथि को मनाया जाता है. इस दिन मां लक्ष्मी की पूजा की जाती है. जिससे घर-परिवार में सुख-समृद्धि का वास होता है. दिवाली का पर्व पांच दिनों का उत्सव है जिसकी शुरुआत धनत्रयोदशी से होती है, दूसरे दिन नकर चतुर्दशी, लक्ष्मी पूजन (दिवाली), गोवर्धन पूजा और आखिरी दिन भाई दूज का पर्व मनाया जाता है. इस दौरान देवी लक्ष्मी, भगवान गणेश, और भगवान कुबेर की पूजा की जाती है. साल २०२५ में दिवाली का पर्व २० अक्टूबर को मनाया जाएगा. पांच दिवसीय पर्व में दिवाली का विशेष महत्व है. इस दिन मां लक्ष्मी की पूजा-अर्चना की जाती है. दीवाली का अर्थ है दीपों का उत्सव. इस दिन सूर्यास्त के बाद लक्ष्मी पूजा की जाती है. प्रदोष काल और अमावस्या तिथि को दिवाली पूजा के लिए विशेष माना जाता है.

कार्तिक अमावस्या २०२५ कब?

अमावस्या तिथि की शुरुआत २० अक्टूबर, २०२५ को सोमवार दोपहर ३ बजकर ४४ मिनट पर होगी. जो २१ अक्टूबर २०२५ को शाम ५ बजकर ५४ मिनट तक रहेगी.

दिवाली २०२५ पर लक्ष्मी पूजन का समय

इस दिन लक्ष्मी पूजन का समय शाम ७.०८ मिनट से लेकर रात ८.१८ मिनट तक रहेगा.

इस दिन प्रदोष काल शाम ५ बजकर ४६ मिनट लेकर रात ८ बजकर १८ मिनट तक रहेगा.

इस दिन वृषभ काल शाम ७ बजकर ०८

मिनट से लेकर रात ९ बजकर ०३ मिनट तक रहेगा. दिवाली भारत के साथ-साथ नेपाल, मॉरीशस, श्रीलंका, फिजी, त्रिनिदाद, ब्रिटेन और अमेरिका में भी धूमधाम से मनाई जाती है। दिवाली हमें यह सिखाती है कि प्रकाश केवल अंधकार मिटाने के लिए नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा देने के लिए है। यह पर्व भारतीय संस्कृति की आत्मा और भविष्य दोनों को आलोकित करता है।

ऐतिहासिक एवं धार्मिक आयाम

रामायण परंपरा - श्रीराम का अयोध्या लौटना।
लक्ष्मी पूजन - धन-समृद्धि का स्वागत।
काली पूजा (बंगाल) - शक्ति साधना।
जैन परंपरा - भगवान महावीर का निर्वाण।
सिख परंपरा - गुरु हरगोबिंद जी का प्रकाश पर्व।

दिवाली का सामाजिक परिदृश्य

परिवार और गृहस्थ जीवन - आधुनिक भागदौड़ के बीच यह पर्व रिश्तों को जोड़ने और साथ बैठने का अवसर देता है।

डिजिटल दिवाली - सोशल मीडिया पर शुभकामनाएँ, ऑनलाइन गिफ्टिंग, वर्चुअल पूजा।

पर्यावरणीय सोच - आतिशबाज़ी की जगह दीपक, LED और हरित पूजा सामग्री का प्रयोग बढ़ रहा है।

आर्थिक दृष्टि से - त्योहारों का सीजन भारतीय बाज़ार की रौनक लौटाता है। मिठाई, वस्त्र, सोना-चाँदी, इलेक्ट्रॉनिक्स, गाड़ियाँ तक की बिक्री चरम पर पहुँचती है।

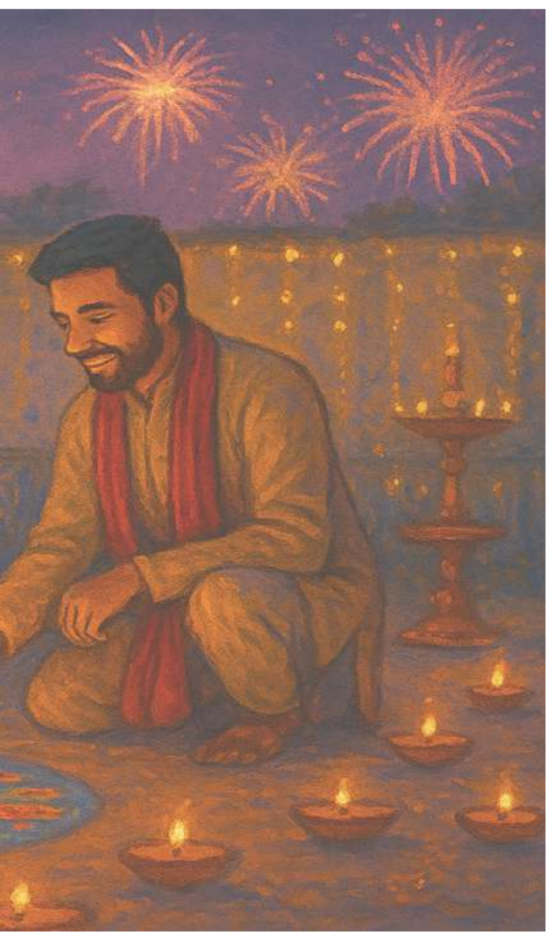

दिवाली पूजा की विधि

सामग्रीः
दीपक, धूप, अगरबत्ती
लाल या पीला कपड़ा, फूल और रोली
मिठाई और फल
गणेश एवं लक्ष्मी जी की मूर्ति या तस्वीर

विधिः
घर की सफाई और सजावट करें।
लाल कपड़ा बिछाकर गणेश जी और लक्ष्मी जी की प्रतिमा रखें।
दीपक और अगरबत्ती जलाएँ।
फूल, मिठाई और फल अर्पित करें।
धूप और मंत्रों के साथ पूजा संपन्न करें।
अंत में परिवार और मित्रों के साथ प्रसाद बांटें। रात के समय घर के मुख्य द्वार पर दीपक और रोशनी जरूर लगाएँ, यह समृद्धि और सुख का प्रतीक माना जाता है।

पारंपरिक दिवाली व्यंजन और रेसिपी

काजू कतली - काजू, चीनी, घी
लड्डू (बेसन/नारियल) - बेसन, नारियल, घी, शक्कर
मखाने की खीर - मखाने, दूध, चीनी, केसर
समोसा और कचौरी - त्योहारी स्नैक्स
चिवड़ा और नमकीन - शाम के नाश्ते के लिए

मिठाई बनाते समय हल्का सा केसर और इलायची डालें, यह स्वाद और खुशबू बढ़ाता है।

व्रत वाले परिवार मूंग की दाल और हल्के तले स्नैक्स का सेवन कर सकते हैं।

☐ पारंपरिक व्रत और उपवास

धनतेरस व्रत - धन और स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए।

दीपावली व्रत - लक्ष्मी पूजन के दिन उपवास करने से घर में सुख-समृद्धि आती है।

भाई दूज व्रत - भाई की लंबी उम्र और सुरक्षा के लिए बहन व्रत करती है।

दिवाली के पांच दिन

धनतेरसः धनतेरस का पर्व हर साल कार्तिक माह की कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को बड़े ही श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस दिन का विशेष महत्व इसलिए भी है क्योंकि मान्यता है कि समुद्र मंथन के दौरान इसी तिथि को भगवान धनवंतरी अमृत से भरे कलश के साथ प्रकट हुए थे। उन्हें आयुर्वेद के जनक और देवताओं के वैद्य के रूप में पूजा जाता है। धनतेरस को सेहत, समृद्धि और सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। इस दिन भगवान धनवंतरी के साथ-साथ धन के देवता कुबेर की भी आराधना की जाती है, जिससे घर में सुख-समृद्धि बनी रहे। परंपरा के अनुसार, इस दिन सोना-चांदी, बर्तन या अन्य धातु से जुड़ी वस्तुएं खरीदना बेहद शुभ माना जाता है, क्योंकि इसे लक्ष्मी आगमन का संकेत माना जाता है।

नरक चतुर्दशी / छोटी दिवाली : यह दिन रावण के भस्म होने और श्रीकृष्ण द्वारा नरकासुर वध की याद में मनाया जाता है। हिंदू धर्म में नरक चतुर्दशी व्रत और पूजा का विशेष महत्व है। हिंदी पंचांग के अनुसार, यह पर्व हर वर्ष कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को मनाया जाता है। इसे नरक चौदस, रूप चौदस, रूप चतुर्दशी और छोटी दिवाली जैसे नामों से भी जाना जाता है। यह दिन दीपावली से ठीक एक दिन पहले और धनतेरस के अगले दिन आता है। धार्मिक मान्यता है कि इस अवसर पर मृत्यु के देवता भगवान यमराज की पूजा करने से अकाल मृत्यु का भय समाप्त होता है और उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। क्योंकि यह त्योहार दिवाली से एक दिन पहले मनाया जाता है, इसलिए इसे छोटी दिवाली (Choti Diwali 2025) भी कहा जाता है। इस दिन शाम को चौमुखी दीपक जलाने की परंपरा है। मान्यता के अनुसार, सुबह सूर्योदय से पहले शरीर पर तिल्ली का तेल लगाकर और अपामार्ग (चिचड़ी) के पत्ते पानी में डालकर स्नान करने से नरक के भय से मुक्ति मिलती है और स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

दिवाली / लक्ष्मी पूजन : दीवाली का सबसे विशेष दिन लक्ष्मी पूजन का होता है। इस दिन

मां लक्ष्मी की आराधना की जाती है और इसे समृद्धि, सौभाग्य और नई शुरुआत का प्रतीक माना जाता है। विशेषकर मारवाड़ी समाज में इस दिन को नए वर्ष की शुरुआत के रूप में भी मनाया जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, कार्तिक अमावस्या को अयोध्यावासियों ने भगवान श्रीराम और माता सीता का दीप प्रज्वलित कर स्वागत किया था, जब वे १४ वर्ष के वनवास से लौटे थे। वहीं, एक अन्य मान्यता यह भी है कि इसी तिथि को भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी का विवाह हुआ था।

लक्ष्मी पूजन केवल धन की देवी की पूजा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पंच देवताओं का सामूहिक सम्मान भी है - माता लक्ष्मी, भगवान गणेश, माता सरस्वती, महाकाली और भगवान कुबेर। पूजा की शुरुआत परिवार के सभी सदस्यों और पुजारी के एकत्र होने से होती है, जब सभी मिलकर मां लक्ष्मी का आवाहन करते हैं और दीपावली की पूजा सम्पन्न करते हैं।यही कारण है कि लक्ष्मी पूजन न केवल धार्मिक परंपरा है, बल्कि यह परिवार में एकजुटता, सकारात्मक ऊर्जा और सुख-समृद्धि का संदेश भी देता है। मुख्य दिवाली दिवस और लक्ष्मी पूजन का दिन। धन, सुख और समृद्धि के लिए पूजा की जाती है। लाल कपड़ा बिछाकर गणेश और लक्ष्मी जी की स्थापना। दीपक, अगरबत्ती और फूल से पूजन। मिठाई और फल अर्पित करना। परिवार और मित्रों के साथ प्रसाद बाँटना। इस दिन रात में घर के सभी कोने और मुख्य द्वार पर दीप जलाना शुभ माना जाता है। पटाखे छोड़ने की परंपरा भी प्रचलित है, लेकिन अब पर्यावरण के प्रति सजगता बढ़ी है।

गोवर्धन पूजा / अन्नकूटः पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, ब्रजधाम में हर साल ग्रामीण इंद्र देव को प्रसन्न करने के लिए पूजा-अर्चना करते थे, ताकि समय पर वर्षा हो और खेती-खलिहान ठीक रहें। लेकिन भगवान श्रीकृष्ण ने उन्हें समझाया कि असली पूजन उस गोवर्धन पर्वत का होना चाहिए, जो रोज़ उनकी गायों को चारा, सुरक्षा और आश्रय प्रदान करता है। श्रीकृष्ण की सलाह मानकर ब्रजवासी इंद्र देव की जगह गोवर्धन पर्वत

की पूज़ा करने लगे। इससे नाराज़ होकर इंद्र ने लगातार मूसलधार बारिश बरसानी शुरू कर दी। तब श्रीकृष्ण ने अपनी छोटी उंगली पर पूरा गोवर्धन पर्वत उठाकर ब्रजवासियों और गौ-धन को वर्षा से बचाया। तभी से इस दिन गोवर्धन पर्वत का प्रतीक बनाकर उसकी पूजा करने की परंपरा चली आ रही है। महाराष्ट्र में इस दिन को बालि प्रतिपदा या बालि पड़वा के नाम से मनाया जाता है। मान्यता है कि भगवान विष्णु के वामन अवतार ने राजा बालि को पाताल लोक भेजने के बाद उसे यह वरदान दिया था कि वर्ष में एक दिन वह पृथ्वी लोक पर आकर अपनी प्रजा से मिल सके। इसलिए इस दिन उनका स्मरण किया जाता है। भगवान कृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत उठाने की स्मृति। अन्नकूट (कृष्ण को अन्न की बड़ी थाली) का आयोजन। सुबह गोवर्धन का पोटली/

मॉडल बनाकर पूजा। ५६ प्रकार के पकवान या पारंपरिक व्यंजन बना कर भोग लगाना। यह दिन पशुपालन और कृषि की समृद्धि का प्रतीक भी है।

भाई दूज : भाई दूज का पर्व कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को मनाया जाता है। यह खास दिन भाई-बहन के रिश्ते को और मजबूत बनाने का अवसर होता है। इस दिन बहनें अपने भाइयों को तिलक लगाकर उनके ल ंबे, सुखी और सफल जीवन की कामना करती हैं, जबकि भाई अपनी बहनों को उपहार देकर अपना स्नेह व्यक्त करते हैं। इस पर्व को भाऊ बीज, भात्र द्वितीया, भाई द्वितीया और यम द्वितीया जैसे कई नामों से भी जाना जाता है। इस दिन बहनें सुबह स्नान कर व्रत का संकल्प लेती हैं। भाई दूज के शुभ दिन पर तिलक करने के लिए सबसे पहले आटे से चौक बनाया जाता है। इस चौक पर भाई को पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठाना शुभ माना जाता है। तिलक करने से पहले भाई के सिर पर फूल, पान, सुपारी और धन रखा जाता है। इसके बाद बहन अपने भाई का तिलक करती है। तिलक के बाद भाई के हाथ में कलावा (रक्षासूत्र) बांधा जाता है और उन्हें पान खिलाया जाता है। इस पूरी विधि को भाई की लंबी उम्र, सुख-समृद्धि और घर में सौभाग्य लाने वाला माना जाता है। बदले में भाई बहनों को अपनी सामर्थ्य के अनुसार उपहार, वस्त्र या धन प्रदान करते हैं।

पालक पनीर

सामग्रीः
पालक - ५०० ग्राम
पनीर - २०० ग्राम (टुकड़ों में कटा)
प्याज़ - १ बड़ा (कटा हुआ)
टमाटर - २
अदरक-लहसुन पेस्ट - १ छोटा चम्मच
मसाले - हल्दी, मिर्च, धनिया पाउडर

विधिः पालक को धोकर २ मिनट उबालें और पीसकर पेस्ट बना लें। कढ़ाई में तेल गरम करके प्याज़, अदरक-लहसुन और टमाटर भूनें। इसमें मसाले डालकर पका लें और पालक का पेस्ट मिला दें। अब तले हुए पनीर के टुकड़े डालें और ५ मिनट पकाएँ। क्रीम या मक्खन डालकर गरमागरम परोसें।

मटर पनीर

सामग्रीः
ताज़ा मटर - १ कप
पनीर - २०० ग्राम
प्याज़ - २ (बारीक कटा)
टमाटर - २ (पेस्ट)
मसाले - हल्दी, लाल मिर्च, गरम मसाला

विधिः पनीर के टुकड़े हल्के सेंक लें। कढ़ाई में प्याज़ भूनें, टमाटर का पेस्ट और मसाले डालकर पकाएँ। अब मटर और थोड़ा पानी डालकर १० मिनट पकाएँ। पनीर डालें और ढककर ५ मिनट पकाएँ। हरे धनिए से सजाकर परोसें।

मूली का पराठा

सामग्रीः
गेहूँ का आटा - २ कप
मूली - २ (कद्दूकस की हुई)
मसाले - नमक, मिर्च, अजवाइन
घी/तेल - सेंकने के लिए

विधिः आटे में थोड़ा नमक डालकर गूँथ लें। मूली को निचोड़कर उसमें मसाले डालें। आटे की लोई बेलकर मूली भरें और पराठा बेलें। तवे पर घी/तेल लगाकर सेंकें। दही या अचार के साथ परोसें।

आलू-गोभी

सामग्रीः
गोभी - २५० ग्राम
आलू - २
प्याज़ - १
टमाटर - २
मसाले - हल्दी, मिर्च, धनिया

विधिः गोभी और आलू को टुकड़ों में काट लें। कढ़ाई में तेल गरम करके प्याज़-टमाटर का मसाला बनाएँ। उसमें मसाले डालें और फिर आलू-गोभी डालकर मिलाएँ। ढककर १५ मिनट धीमी आँच पर पकाएँ।
हरे धनिए से सजाएँ।

गाजर का हलवा

सामग्रीः
गाजर - १ किलो (कद्दूकस की हुई)
दूध - १ लीटर
चीनी - १५०-२०० ग्राम
घी - ४ बड़े चम्मच
इलायची पाउडर - ½ छोटा चम्मच
मेवे - २-३ बड़े चम्मच

विधिः गाजर धोकर छीलकर कद्दूकस करें। कढ़ाई में घी गरम करके गाजर डालें और ८-१० मिनट भूनें। अब इसमें दूध डालकर लगातार चलाते हुए धीमी आँच पर पकाएँ। जब दूध आधा रह जाए तो चीनी और इलायची डालें। मिश्रण गाढ़ा होने तक पकाएँ और ऊपर से मेवे डालें। गरमागरम परोसें।

गाजर का हलवा

सामग्रीः
मैदा - २ कप /२५० ग्राम
नमक - ½ छोटा चम्मच(स्वाद -अनुसार)
अजवायन - ½ छोटा चम्मच
तेल - ¼ कप (६०ग्राम) तलने के लिए
आलू - ३-४ उबले हुए (२५० ग्राम)
तेल - १ बड़ा चम्मच
अदरक - १ छोटा चम्मच, कद्दूकस किया हुआ
हरी मिर्च - २, बारीक कटी हुई
धनिया पाउडर - १ छोटा चम्मच
जीरा पाउडर - ½ छोटा चम्मच
हल्दी पाउडर - ¼ छोटा चम्मच
नमक - ½ छोटा चम्मच
लाल मिर्च पाउडर - ½ छोटा चम्मच
गरम मसाला - ½ छोटा चम्मच
अमचूर पाउडर - ½ छोटा चम्मच
हरा धनिया - २ बड़े चम्मच, बारीक कटा हुआ

विधिः- सबसे पहले कचौरी के लिए आटा गूंथ लें। एक बाउल में मैदा, नमक, अजवायन और तेल डालकर अच्छी तरह मिला लें। अब स्टफिंग के लिए, एक कढ़ाई में तेल गर्म करें। इसमें अदरक, हरी मिर्च, धनिया पाउडर, जीरा पाउडर, हल्दी पाउडर, नमक, लाल मिर्च पाउडर, गरम मसाला और अमचूर पाउडर डालकर अच्छी तरह मिला लें। फिर उबले हुए आलू डालकर अच्छे से भून लीजिए। आटा गूंथने के बाद, इसे थोड़ा सा तेल लगाकर मसल लें। फिर आटे को बराबर भागों में बांट लें। अब एक बेली हुई कचौरी के बीच में २ बड़े चम्मच स्टफिंग रखें। फिर कचौरी को बन्द करके दोनों किनारों को अच्छे से चिपका दीजिये । अब एक कड़ाही में तेल गर्म करें। जब तेल गरम हो जाए, तो कचौरी डालकर सुनहरी भूरी होने तक तल लीजिए। अब हमारा आलू खस्ता कचौरी तैयार है। अब गरमागरम कचौरी को चाट मसाला और हरा धनिया से गार्निश करके परोसें।

ऑनलाइन कंपनियों का डार्क पैटर्न!

☛ ग्राहकों को करते हैं गुमराह
☛ प्रोडक्ट खरीदने का बनाते हैं दबाव

हिडन फीस पहले से सेलेक्ट चेकबॉक्स और फर्जी काउंटडाउन टाइमर जैसे डार्क पैटर्न्स भारतीयों के ऑनलाइन शॉपिंग बुकिंग और ब्राउजिंग को प्रभावित कर रहे हैं। ये चालाक डिजाइन यूजर्स को अनजाने में फैसले लेने के लिए उकसाते हैं। सरकार अब इन पर सख्ती कर रही है। २८ मई को, उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय ने प्रमुख ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स के सीनियर प्रतिनिधियों के साथ एक हाई-लेवल मीटिंग की, जिसमें उन्हें डार्क पैटर्न्स नियमों का पालन करने, इंटरनल ऑडिट करने और ऑडिट रिजल्ट्स को पब्लिकली दिखाने का निर्देश दिया। उपभोक्ता मामलों के मंत्री प्रल्हाद जोशी ने कहा कि सरकार ने इस मुद्दे पर जांच के लिए एक जॉइंट वर्किंग ग्रुप बनाने का प्रस्ताव दिया है।

इस मीटिंग में Amazon, Flipkart, Swiggy, Zomato, Meesho, WhatsApp, Apple, Paytm, Ola, MakeMyTrip, Reliance Retail और अन्य कंपनियों के प्रतिनिधि शामिल हुए। ये भारत के कंज्यूमर प्रोटेक्शन फ्रेमवर्क के तहत चालाक डिजिटल डिजाइन को रोकने की सरकार की बढ़ती कोशिश का हिस्सा है।

डार्क पैटर्न्स क्या हैं?

डार्क पैटर्न्स यूजर इंटरफेस में छिपे डिजाइन एलिमेंट्स हैं, जो यूजर्स को ऐसे फैसले लेने के लिए प्रेरित करते हैं, जो वे पूरी जानकारी या इरादे के बिना नहीं लेते। ये पैटर्न्स यूजर्स को सर्विसेज के लिए साइन अप करने, ज्यादा पैसे खर्च करने या पर्सनल डेटा देने के लिए प्रेरित करते हैं- अक्सर बिना साफ-साफ समझे। ये विजुअल मिडडायरेक्शन, उलझाने वाली भाषा या नॉन-ट्रांसपेरेंट सेटिंग्स पर निर्भर करते हैं, जो लोगों के जानकारी प्रोसेस करने और फैसले लेने के तरीके का फायदा उठाते हैं।

नवंबर २०२३ में, उपभोक्ता मामलों के विभाग ने १३ प्रकार के डार्क पैटर्न्स को भारतीय कानून के तहत 'अनफेयर ट्रेड प्रैक्टिस' के रूप में परिभाषित किया था।

इनमें ड्रिप प्राइसिंग (जहां आखिरी चेकआउट

'Dark Patterns' ऐसे डिज़ाइन / UX (User Experience) तत्व होते हैं जो: उपयोगकर्ता को अनजाने में कुछ लेने के लिए प्रेरित करते हैं, जैसे कि कुछ खरीदना, सब्सक्रिप्शन लेना या अतिरिक्त डेटा शेयर करना, जानकारी छिपाते या भ्रमित करते हैं, जैसे कि फीस या शर्तों को अंतिम समय पर खुलासा करना, विकल्पों को इस तरह पेश करते हैं कि उपयोगकर्ता के लिए 'ना कहना' मुश्किल हो जाए (opt-out करना मुश्किल हो), इंटरफ़ेस में डर, समय सीमा या दबाव दिखाकर उपयोगकर्ता को जल्द निर्णय लेने के लिए उकसाते हैं।

डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भ्रामक सामान बेचना ...

झूठे दावे (False Claims)
प्रोडक्ट की क्वालिटी या फीचर्स बढ़ा-चढ़ाकर बताना।
'१००% ऑर्गेनिक' लिखना जबकि वास्तव में नहीं हो।
नकली छूट (Fake Discounts / Drip Pricing)
पहले कीमत बढ़ा देना और फिर '५०% ऑफ़' बताना।
checkout पेज पर जाकर छुपे हुए चार्ज जोड़ना।
फर्जी रिव्यू (Fake Reviews)
प्रोडक्ट को अच्छा दिखाने के लिए नकली रेटिंग या paid reviews डालना।
छिपी शर्तें (Hidden Terms)
Refund/Return policies को जटिल या छिपा देना।
ऑटो-रिन्यूअल सब्सक्रिप्शन बिना साफ़ बताए जोड़ना।
भ्रम पैदा करने वाले डिज़ाइन (Dark Patterns)
'Buy Now' बटन को बड़ा और 'Cancel' को छोटा/छुपाना।
जल्दी निर्णय लेने के लिए टाइमर / डर का माहौल ('Only 2 items left!')।

स्टेप पर अतिरिक्त फीस दिखती है), फॉल्स अर्जेंसी (जैसे फर्जी काउंटडाउन टाइमर), बैट एंड स्विच (एक चीज का विज्ञापन लेकिन दूसरी देना), कंफर्म शेमिंग (यूजर्स को गिल्ट के जरिए सहमत कराना) और सब्सक्रिप्शन ट्रैप्स (जो सर्विस कैंसिल करना मुश्किल बनाते हैं) जैसे टैक्टिक्स शामिल हैं। लिस्ट में दूसरे चालाक टैक्टिक्स जैसे फोर्स्ड एक्शन, इंटरफेस इंटरफेरेंस, डिसगाइज्ड ऐड्स, ट्रिक क्वेश्चन्स, SaaS बिलिंग, नैगिंग, बास्केट स्नीकिंग और रोग मैलवेयर जो वैलिड प्रॉम्प्ट्स की तरह दिखते हैं, भी शामिल हैं। ये प्रैक्टिस यूजर की स्वतंत्रता को कमजोर करती हैं और डिजिटल सर्विसेज में भरोसा घटाती हैं, खासकर जब ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स रोजमर्रा की जिंदगी का अहम हिस्सा बन गए हैं।

भारत में डार्क पैटर्न्स कितने आम हैं?

Advertising Standards Council of India (ASCI) की २०२४ की रिपोर्ट ने दिखाया कि डार्क पैटर्न्स भारतीय ऐप्स में कितने गहरे बसे हैं। रिपोर्ट में पाया गया कि भारत में सबसे ज्यादा डाउनलोड होने वाली ५३ में से ५२ ऐप्स ने कम से कम एक डिसेप्टिव डिजाइन का इस्तेमाल किया, जैसे छिपी हुई चार्जेस, पहले से चुने हुए कंसेंट बॉक्स, काउंटडाउन टाइमर या भटकाने वाले प्रॉम्प्ट्स। ये टैक्टिक्स अलग-थलग या गलती से नहीं, बल्कि कई डिजिटल सर्विसेज की सिस्टमैटिक फीचर्स थे। सिटीजन एंगेजमेंट प्लेटफॉर्म LocalCircles की १८ महीने की व्यापक जांच ने भी यही रिजल्ट निकाला।

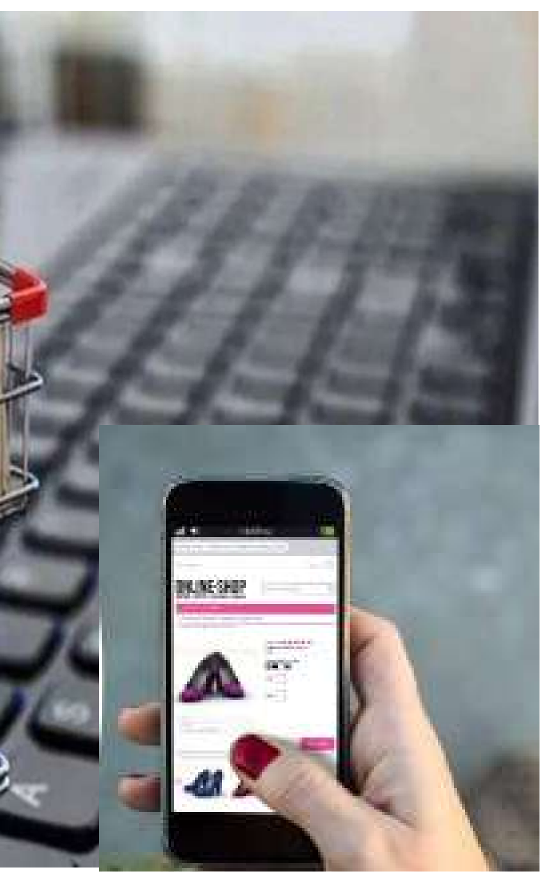

३९२ जिलों के २३०,००० से ज्यादा ग्राहकों के इनपुट्स और २२८ ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स की समीक्षा के आधार पर, सर्वे में पाया गया कि आधे से ज्यादा प्लेटफॉर्म्स ने फोर्स्ड एक्शन पैटर्न का इस्तेमाल किया, जहां यूजर्स को ऐप डाउनलोड करने या अनावश्यक पर्सनल जानकारी देने जैसे असंबंधित स्टेप्स लेने पड़े। ४८ प्रतिशत प्लेटफॉर्म्स में ड्रिप प्राइसिंग देखी गई, इसके बाद बैट एंड स्विच, सब्सक्रिप्शन ट्रैप्स और इंटरफेस इंटरफेरेंस थे। सबसे ज्यादा प्रभावित सेक्टर्स में एडटेक, ट्रैवल, एयरलाइंस, ई-कॉमर्स, क्विक कॉमर्स, डिजिटल बैंकिंग, राइड हेलिंग और स्ट्रीमिंग सर्विसेज शामिल थे।

सरकार ने अब तक क्या किया?

भारत ने डार्क पैटर्न्स से निपटने के लिए जून २०२३ में शुरुआत की, जब ASCI ने डिसेप्टिव ऐडवर्टाइजिंग और UI डिजाइन पर वॉलंटरी गाइडलाइन्स जारी कीं। नवंबर २०२३ में, उपभोक्ता मामलों के विभाग ने गाइडलाइन्स जारी कीं, जिनमें १३ डार्क पैटर्न्स को कंज्यूमर प्रोटेक्शन एक्ट, २०१९ के उल्लंघन के रूप में कानूनी तौर पर वर्गीकृत किया गया। सजा में २० लाख रुपये तक का जुर्माना और छह महीने तक की जेल शामिल है।

अगस्त २०२४ में, ASCI की रिपोर्ट ने इन प्रैक्टिसेस की व्यापकता का ठोस सबूत देकर इस मुद्दे को और गंभीरता दी। सरकार ने इसके बाद उपभोक्ताओं को सशक्त करने के लिए डिजिटल टूल्स की एक सीरीज लॉन्च की, जिसमें रिवैम्प्ड Jagriti App, Jago Grahak Jago App और Jagriti Dashboard शामिल हैं। ये प्लेटफॉर्म्स उपभोक्ताओं को डार्क पैटर्न्स पहचानने और शिकायत निवारण तक आसानी से पहुंचने में मदद करते हैं।

२८ मई की मीटिंग केंद्र की अब तक की सबसे सख्त कार्रवाई थी। मंत्रालय के मुताबिक,

स्टेकहोल्डर्स ने गाइडलाइन्स का पालन करने पर सहमति जताई। जोशी ने Ola, Uber, और Rapido जैसी राइड-हेलिंग ऐप्स पर 'एडवांस टिप' फीचर की हाल की शिकायतों को भी एड्रेस किया और कहा कि कंपनियों को सुधार के लिए कुछ समय दिया जाएगा। 'टिप सेवा के बाद प्रशंसा के तौर पर दी जाती है, न कि अधिकार के रूप में,' जोशी ने पहले X पर एक पोस्ट में कहा था।

ग्राहक कैसे अपनी सुरक्षा कर सकते हैं?

उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय द्वारा यूजर्स को Jagriti और Jago Grahak Jago ऐप्स का इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है ताकि डिसेप्टिव प्रैक्टिस की शिकायत करें और डिजिटल अधिकारों के बारे में जानें। ग्राहकों को चेकआउट पर बढ़ने वाली कीमतों, मना करने में मुश्किल बटन्स और ऑप्ट-आउट ऑप्शन्स छिपाने वाले फॉर्म्स जैसे आम चेतावनी संकेतों पर ध्यान देना चाहिए। ये समझना कि हर डील या नोटिफिकेशन असली नहीं होता, यूजर्स को अनजाने कामों से बचने में मदद कर सकता है। Jagriti Dashboard जैसे टूल्स शिकायतों के नतीजों को ट्रैक करने और नॉन-कंप्लायंट प्लेटफॉर्म्स की निगरानी को आसान बनाते हैं।

भारत में हाल की स्थिति

भारत में भी 'Guidelines for Prevention and Regulation of Dark Patterns, 2023' नाम की कुछ दिशानिर्देश होंगे या विचाराधीन हैं। CCPA (Central Consumer Protection Authority) ने ई-कॉमर्स प्लेटफार्मों से कहा है कि वे अपने इंटरफेस की जांच करें और सुनिश्चित करें कि Ùes dark patterns न हो।

क्या शामिल है इन guidelines में – कुछ प्रमुख बिंदु

यहाँ कुछ ऐसी ज़रूरी चीज़ें हैं जो dark pattern guidelines में आमतौर पर शामिल होती हैं:

पारदर्शिता (Transparency) उपयोगकर्ता को स्पष्ट सूचना देना कि कोई शुल्क, ऑटो-नवीनीकरण, डेटा साझा करने आदि की शर्तें क्या हैं।

स्वतंत्र सहमति (Freely given consent) सहमति को दबाव, अधूरी सूचना या गलत तरीके से प्रेरित ना किया जाए।

आसान opt-out / कैंसिलेशन यादि किसी सेवा से बाहर निकलना हो तो वह प्रक्रिया आसान हो, steps ज़्यादा जटिल न हों।

भ्रामक/छिपी जानकारी का निषेध जैसे की छोटे फॉन्ट में शर्तें छुपाना, रंग या लेआउट से उपयोगकर्ता की निगाह को हटा देना आदि।

ऑप्शन्स का संतुलन (balanced choice architecture) 'हाँ / ना' विकल्प स्पष्ट हो; 'ना' चुनने पर उपयोगकर्ता को दोषी महसूस न हो; ना चुनने पर विकल्प को छुपाया न जाए।

भविष्य की ज़िम्मेदारी और निगरानी

नियामक यह सुनिश्चित करें कि guidelines उल्लंघन होने पर कार्रवाई हो – जुर्माना, विज्ञापन बैन, आदि।

भारत में कानूनी स्थिति

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, २०१९ → भ्रामक विज्ञापन और अनुचित व्यापार प्रथाओं (Unfair Trade Practices) को प्रतिबंधित करता है।

CCPA (Central Consumer Protection Authority) → ऑनलाइन प्लेटफार्मों पर भ्रामक दावे या नकली छूट देने पर नोटिस और जुर्माना लगा सकती है।

Dark Pattern Guidelines, 2023 → ई-कॉमर्स, ऐप्स और वेबसाइट्स पर ऐसे डिज़ाइन प्रतिबंधित हैं जो उपभोक्ता को भ्रमित करें।

दंड (Penalties)

CCPA नियमों का उल्लंघन करने पर ₹१० लाख तक का जुर्माना (पहली बार), और बार-बार उल्लंघन करने पर ₹५० लाख तक।

भ्रामक विज्ञापन करने वाली कंपनियों को विज्ञापन रोकने का आदेश भी दिया जा सकता है।

कुछ मामलों में आपराधिक मुक़दमा भी चल सकता है।

उपभोक्ता क्या कर सकते हैं

National Consumer Helpline (NCH) नंबर १९१५ या consumerhelpline.gov.in पर शिकायत दर्ज करें।

CCPA पोर्टल या मोबाइल ऐप पर भ्रामक विज्ञापन/प्रोडक्ट की रिपोर्ट करें।

अगर धोखाधड़ी बहुत गंभीर है तो सीधे Consumer Commission (Consumer Court) में केस दाखिल कर सकते हैं।

राष्ट्रीय स्तर – प्रमुख मामलों का सार

Patanjali Ayurved

बार-बार ASCI/CCPA और अदालतों के नोटिस रहे; आरोपों में 'दवाओं/उत्पादों' के बारे में exaggerated/medicinal cure claims, miWranding और प्रतिस्पर्धियों के खिलाफ misleading comparative ads शामिल रहे। सुप्रीम कोर्ट ने Rule-170 (AYUSH विज्ञापन हेतु पूर्व-अनुमति) के सम्बन्ध में मामलों की सुनवाई की; हालिया अवधि में कुछ कार्रवाइयाँ और चेतावनियाँ दीं गयीं। ASCI की रिपोर्टों में Patanjali के कई विज्ञापन उल्लंघन सूचीबद्ध रहे (उदाहरणः FY24 में २८ उल्लंघन)।

Rapido

विज्ञापनः 'Auto in ५ minutes or get ₹50'— असल में ₹५० के स्थान पर सीमित वैधता वाले 'coins' दिए गये; शर्तें छिपी थीं। CCPA ने ₹१० लाख जुर्माना लगाया और

ऑफर-शर्तों को स्पष्ट करने व प्रभावितों को मुआवज़ा देने का निर्देश दिया।

VLCC, Sensodyne (GSK), Naaptol, Vedas Cure, आदि

VLCC के 'instant slimming' दावे पर CCPA ने जुर्माना लगाया। Sensodyne जैसी ब्रांडिंग/endorsement-style दावों पर भी कार्रवाई हुई। Naaptol व अन्य घरेलू कंपनियों पर misrepresentation व drip pricing सहित आरोप आये और नोटिस/जुर्माने हुए।

राज्य/ज़िला-वार केस स्टडीज़

महाराष्ट्र

रियल-एस्टेट विज्ञापनों में MahaRERA के मानदंडों का उल्लंघन व्यापक रूप से रिपोर्ट हुआ; ASCI-परिणामों में कई बिल्डर/डेवलपर्स के विज्ञापन समस्याग्रस्त पाए गए। जिला उपभोक्ता आयोगों ने कुछ बिल्डर्स पर मुआवज़े के आदेश दिए (डिले/वचनित सुविधाएँ न दी जाने के कारण)।

तमिलनाडु

Shankar IAS Academy पर CCPA/अन्य निकायों ने ₹५ लाख का जुर्माना लगाया – चयन/सफलता-संबंधी दावों में भ्रामकता के कारण। राज्य के coaching institutes के विज्ञापन अक्सर selective success stories दिखाते हैं; नियामक सक्रिय रहे हैं।

केरला (Ernakulam जिला) डिस्काउंट विज्ञापन में भ्रामकता एक व्यापारी (My G

Future) ने ६४% की छूट का विज्ञापन किया, लेकिन असली मूल्य दिखाने पर पता चला कि विज्ञापन किया गया 'मूल मूल्य' असली नहीं था। अदालत ने ₹५१९ ज़्यादा वसूले गए पैसे वापस करने और ₹१५,००० मुआवज़ा देने का आदेश दिया।

उत्तरी/केन्द्र-शासी / दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र

कोचिंग संस्थाओं के विज्ञापन में UPSC सेलेक्शन्स और 'No-1 Institute' जैसे दावे CCPA ने कई कोचिंग संस्थाओं को नोटिसें भेजीं और कुछ पर जुर्माना लगाया (लेकिन ये केंद्रीय कार्रवाई है; राज्य-विशेष जिला डेटा नहीं मिला)। उदाहरणः Sriram's IAS को ₹३ लाख का जुर्माना।

ओडिशा

IITian's Prashikshan Kendra (IITPK), Bhubaneswar पर CCPA ने ₹३ लाख जुर्माना लगाया – JEE/IIT results के बारे में misleading claims हेतु। राज्य-स्तरीय शिकायतें और CCPA कार्रवाइयाँ दर्शाती हैं कि कोचिंग संस्थानों की विज्ञापन-दावों पर निगरानी सुचारू रूप से चल रही है।

अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ – तुलना से सीख

फ्रांस/इटली में Shein पर भारी जुर्माने (pricing/greenwashing) लगे।

UK की ASA ने कई travel/aviation/auto कंपनियों को greenwashing या incomplete environmental claims के लिये कहा।

अमेरिका में FTC ने Match Group, Restoro-type tech-support cases और MediaAlpha पर कड़ी कार्यवाही की–यह दर्शाता है कि subscription guarantees, cancellation policies और deceptive telemarketing पर ग्रैंड देशों में सख्ती है।

मेष राशिः अक्तूबर २०२५ मेष राशि वालों के लिए एक रोमांचक रोलर कोस्टर की सवारी लाएगा। महीने की शुरुआत में मेहनत का रंग दिखेगा, लेकिन कामयाबी के लिए पसीना बहाना पड़ेगा। करियर और जीविका के लिए आपको अतिरिक्त जोश दिखाना होगा। दूसरे सप्ताह में अचानक धन लाभ की चमक दिख सकती है। सतर्क रहें वित्तीय लेन-देन में एक गलत कदम बड़े खर्च को न्योता दे सकता है। प्रेम और वैवाहिक जीवन में यह महीना संयम की परीक्षा लेगा। क्रोध और भावनात्मक फैसलों से बचें, वरना रिश्तों में तनाव की आंधी आ सकती है। महीने के मध्य में हवाएं अनुकूल होंगी, और लव पार्टनर के साथ गलतफहमियां धीरे-धीरे पिघलेंगी। परिवार और दोस्तों का सहयोग आपके मनोबल को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा। ।

वृषभ राशिः वृषभ राशि वालों, अक्तूबर २०२५ आपके लिए एक शानदार शुरुआत लेकर आएगा! महीने की शुरुआत में योजनाएं तेजी से फल देंगी, और आपकी बुद्धिमानी से पुराने अटके काम पूरे होंगे। सहकर्मी और करीबी लोग आपके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलेंगे, जिससे आपका आत्मविश्वास सातवें आसमान पर होगा। दूसरे सप्ताह में लंबी यात्रा का योग बनेगा, जो नए अनुभव और अवसर लेकर आएगी। जल्दबाजी में निवेश या कारोबारी फैसले नुकसान का सबब बन सकते हैं। वित्तीय लेन-देन में सतर्कता बरतें। महीने के मध्य में कार्यक्षेत्र में छोटी-मोटी बातों को तूल न दें, और सहकर्मियों के साथ तालमेल बनाए रखें। अचानक बड़े खर्च और पारिवारिक मुद्दे मन को परेशान कर सकते हैं, लेकिन धैर्य आपका सबसे बड़ा हथियार होगा।

मिथुन राशिः मिथुन राशि वालों, अक्तूबर २०२५ आपके लिए एक मिश्रित बैग लेकर आएगा शुरुआत में चुनौतियां, लेकिन अंत में सुखद सरप्राइज! पहले सप्ताह में बड़े खर्च और अचानक यात्रा से मानसिक तनाव हो सकता है। व्यवसाय में जल्दबाजी से बचें, क्योंकि एक गलत फैसला धन हानि करा सकता है। स्वास्थ्य और वित्त दोनों पर नजर रखें। दूसरे सप्ताह में प्रेम या जीवनसाथी के साथ गलतफहमियां परेशान कर सकती हैं। कारोबार में मंदी और स्वजनों से सहयोग की कमी मन को उदास कर सकती है। नौकरीपेशा लोग विरोधियों और धोखे से सावधान रहें। लेकिन घबराएं नहीं! उत्तरार्ध में सितारे आपके पक्ष में आएंगे। राजकीय कार्यों

में सफलता, शुभ समाचार और सुखद यात्राएं आपके चेहरे पर मुस्कान लाएंगी। जीवनसाथी के साथ बिताया समय दिल को सुकून देगा।

कर्क राशिः कर्क राशि वालों, अक्तूबर २०२५ आपके लिए ज्यादातर समय सितारों की मेहरबानी लेकर आएगा, सिवाय उत्तरार्ध के कुछ पलों के! शुरुआत में करियर और कारोबार में सितारे आपके साथ होंगे। धन लाभ और उन्नति के सुनहरे अवसर मिलेंगे। परिवार और दोस्तों का सहयोग आपके मन को हल्का करेगा, और अटके कार्य पूरे होने से राहत मिलेगी। दूसरे सप्ताह में आपकी मेहनत रंग लाएगी। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी, और पारिवारिक माहौल गर्मजोशी से भरा रहेगा। अचानक धन लाभ होगा, लेकिन लेन-देन में सावधानी बरतें। मध्य में सुख-सुविधाओं पर खर्च बढ़ेगा, और कारोबार में अप्रत्याशित लाभ खुशी को दोगुना करेगा। तीसरे सप्ताह में नए मित्र और सत्ता से संबंध आपके लिए नए दरवाजे खोलेंगे। लेकिन, उत्तरार्ध में सावधान रहें। कार्यों में बाधाएं, स्वास्थ्य समस्याएं और चोट का भय रह सकता है।

सिंह राशिः सिंह राशि वालों, अक्तूबर २०२५ आपके लिए मिश्रित रंग लेकर आएगा। शुरुआत में सावधानी बरतें, क्योंकि जल्दबाजी से कार्य बिगड़ सकते हैं। छात्रों को पढ़ाई पर फोकस करना होगा, और संयमित व्यवहार लाभ देगा। दूसरे सप्ताह में कठिनाइयों के बावजूद धन की व्यवस्था हो जाएगी, लेकिन व्यर्थ की चिंताएं मन को परेशान करेंगी। पार्टनरशिप कारोबार में लेन-देन और कागजी कार्यों में सावधानी बरतें। अत्यधिक भरोसे से बचें, वरना नुकसान हो सकता है। मध्य में स्वास्थ्य पर ध्यान दें, क्योंकि पुराना रोग उभर सकता है। वाहन चलाते समय सतर्क रहें और गुप्त शत्रुओं से बचें। तीसरे सप्ताह में आय के स्रोत बनेंगे, और भाई-बंधुओं का सहयोग बिगड़े कामों को बनाएगा। उत्तरार्ध

में कार्यक्षेत्र में सीनियर्स से तनाव और स्वास्थ्य समस्याएं परेशान कर सकती हैं। लेकिन, आपका आत्मविश्वास और साहस आपको हर मुश्किल से निकाल ले जाएगा।

कन्याः कन्या राशि वालों, अक्तूबर २०२५ आपके लिए एक सुनहरा महीना होगा! शुरुआत में भूमि-भवन और वाहन का सुख मिलेगा। पैतृक संपत्ति के विवाद बातचीत से सुलझ सकते हैं, और प्रभावी लोगों से संपर्क आपके दरवाजे पर नए अवसर लाएंगे। विदेश में करियर या कारोबार के सपने मध्य तक हकीकत बन सकते हैं। दूसरे सप्ताह में विदेश यात्रा के योग बनेंगे, जो आपके लिए नए रास्ते खोल सकती है। मध्य में धन लाभ और अटके कार्यों में सुधार होगा। संतान से संबंधित समस्याओं का समाधान मन को राहत देगा। प्रेम और वैवाहिक जीवन में मधुरता बनी रहेगी। तीसरे सप्ताह में किसी व्यक्ति के कारण तनाव हो सकता है, और घरेलू महिलाएं पूजा-पाठ में रमेंगी। उत्तरार्ध में व्यवसाय में लेन-देन में सावधानी बरतें। क्रोध से बचकर विनम्रता से काम करें, ताकि बनते काम बिगड़े नहीं।

तुला राशिः तुला राशि वालों, अक्तूबर २०२५ आपके लिए उतार-चढ़ाव की सैर कराएगा। शुरुआत में कार्यक्षेत्र में विरोधी सक्रिय रहेंगे, और अचानक बड़े खर्च से बजट बिगड़ सकता है। दूसरों की बातों को नजरअंदाज कर अपने लक्ष्य पर फोकस करें। दूसरे सप्ताह में करीबी लोगों से सहयोग की कमी मन को खिन्न कर सकती है। दूसरों पर भरोसा कम करें और अपने दम पर आगे बढ़ें। मध्य में कठिन परिश्रम से धन की प्राप्ति होगी, लेकिन यह किसी बड़े कार्य में खप सकता है। लेन-देन में सावधानी बरतें। तीसरे सप्ताह में व्यवसाय में अप्रत्याशित लाभ और सफलता मन को प्रसन्न करेगी। आय के नए स्रोत बनेंगे। लेकिन, उत्तरार्ध में फिर से कार्यों में बाधाएं और रिश्तों में तनाव हो सकता है। मौन और संयम इस समय आपका सबसे बड़ा सहारा होगा।

वृश्चिक राशिः वृश्चिक राशि वालों, अक्तूबर २०२५ आपके लिए उतार-चढ़ाव की लहरें लाएगा। शुरुआत में जोखिम भरे निवेश और दूसरों पर अत्यधिक भरोसे से बचें। कार्यों में असमंजस और मानसिक तनाव रहेगा। विद्यार्थियों का मन पढ़ाई से भटक सकता है, और उच्च शिक्षा के लिए बाधाएं आ सकती हैं। मध्य में सितारे आपके पक्ष में आएंगे, और अचानक धन लाभ की चमक दिखेगी। लेकिन, तीसरे सप्ताह में खर्च की अधिकता से बचत मुश्किल होगी। उत्तरार्ध में रिश्तों में मधुरता आएगी, और इष्टमित्र व परिजन आपके मनोबल को बढ़ाएंगे। प्रेम संबंधों में अनुकूलता बनी रहेगी। धैर्य और सावधानी से इस महीने को अपने पक्ष में करें।

धनु राशिः धनु राशि वालों, अक्तूबर २०२५ आपके लिए औसत फल लेकर आएगा, लेकिन सूझबूझ से आप इसे शानदार बना सकते हैं। शुरुआत में कार्यक्षेत्र में अनुकूलता रहेगी, और राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी। विशेष संपर्क आपके लिए नए दरवाजे खोलेंगे। दूसरे सप्ताह में शुभ समाचार और परिवार के साथ सुखद समय आपके मन को तरोताजा करेगा। यात्राएं लाभकारी साबित होंगी। लेकिन, व्यवसाय में नए प्रयोग और जोखिम भरे निवेश से बचें। मध्य में परिवार में वैचारिक मतभेद और नौकरी में परिवर्तन संभव है। विद्यार्थियों में आलस्य की अधिकता रहेगी। उत्तरार्ध में करियर और कारोबार में सुधार होगा, और धन लाभ के मार्ग खुलेंगे। परिवार में सकारात्मक माहौल बनेगा।

मकर राशिः मकर राशि वालों, अक्तूबर २०२५ आपके लिए शुभता और सौभाग्य का खजाना लेकर आएगा! शुरुआत में नौकरीपेशा लोगों के लिए पदोन्नति या मनचाहा स्थानांतरण संभव है। स्वजनों के साथ मधुर संबंध और दांपत्य जीवन में मधुरता आपके मन को खुशी से भर देगी। संतान की प्रगति आपकी मुस्कान को और चौड़ा करेगी। दूसरे सप्ताह में यात्राएं नए संबंधों का विस्तार करेंगी, और आपके नए मित्र आपकी ताकत को बढ़ाएंगे। मध्य में व्यवसाय में बड़ी डील और छात्रों के लिए अनुकूल समय रहेगा। उत्तरार्ध में पिकनिक या पर्यटन का प्रोग्राम बनेगा, और प्रेम संबंध विवाह में बदल सकते हैं। आपका मन धर्म-अध्यात्म में रमेगा, जो आपको आंतरिक शांति देगा।

कुंभ राशिः कुंभ राशि वालों, अक्तूबर २०२५ आपके लिए शुभता का सूरज उगाएगा! शुरुआत में अटका हुआ धन मिलेगा, और भूमि-भवन का सुख आपके जीवन को और रंगीन बनाएगा। व्यवसाय में अप्रत्याशित लाभ और संचित धन में वृद्धि होगी। संतान से शुभ समाचार और सामाजिक प्रतिष्ठा में इजाफा होगा। सिंगल लोगों के जीवन में कोई खास शख्स दस्तक दे सकता है, और पुराने प्रेम संबंध और गहरे होंगे। उत्तरार्ध में पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा, और शुभ कार्य होंगे। कोर्ट-कचहरी के मामले आपके पक्ष में आएंगे, और पिता का सहयोग आपकी ताकत बढ़ाएगा। वैवाहिक जीवन में सामंजस्य बना रहेगा।

मीन राशिः मीन राशि वालों, अक्तूबर २०२५ आपके लिए सुख और सौभाग्य का खजाना लेकर आएगा, सिवाय उत्तरार्ध के कुछ पलों के। शुरुआत में रोजी-रोजगार के प्रयास सफल होंगे, और कार्यक्षेत्र में आपके काम की तारीफ होगी। स्वजनों का सहयोग और भाई-बहनों का साथ आपके मन को सुकून देगा। दूसरे सप्ताह में अटके कार्यों में गति आएगी, और धन लाभ के नए रास्ते खुलेंगे। मध्य में मांगलिक कार्यों में भागीदारी और धार्मिक रुचि बढ़ेगी। तीसरे सप्ताह में अचानक यात्रा संभव है, और पूर्ण समर्पण से अप्रत्याशित सफलता मिलेगी। समाज, परिवार और कारोबार में सकारात्मक बदलाव आपके जीवन को नई दिशा देंगे। ■

अगर आप प्रकृति की गोद में सुकून ढूँढना चाहते हैं, तो केरल की वादियों में बसा मुन्नार आपका इंतज़ार कर रहा है। समुद्र तलसे १६०० मीटर की ऊँचाई पर बसा यह हिलस्टेशन चारों ओर फैले चाय के बागानों, धुंध से ढकी पहाड़ियों और मनमोहक झरनों के लिए दुनिया भर में मशहूर है। यही कारण है कि मुन्नार को अक्सर 'दक्षिण भारत का कश्मीर' कहा जाता है।

मुन्नार: चाय की वादियों में बसा स्वर्ग

मुन्नार, केरल के पश्चिमी घाट (Western Ghats) में स्थित एक विख्यात हिल स्टेशन है, जिसे प्रकृति प्रेमियों और पर्यटकों का स्वर्ग कहा जाता है। समुद्र तल से लगभग १,६०० मीटर की ऊँचाई पर बसा यह स्थान अपनी हरी-भरी घाटियों, अनंत चाय बागानों, जलप्रपातों और शीतल जलवायु के लिए प्रसिद्ध है। मुन्नार का नाम 'तीन नदियों का संगम' (Mudrapuzha, Nallathanni और Kundala नदियों) से बना है। यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य और शांत वातावरण इसे दक्षिण भारत का प्रमुख हनीमून और अवकाश गंतव्य बनाता है।

यहाँ की चाय और मसाले की खेती न सिर्फ स्थानीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है बल्कि पर्यटन का बड़ा आकर्षण भी है। चाय बागानों की हरियाली, नीले कुरिंजी फूलों का दुर्लभ दृश्य, और नीलगिरी तहर जैसे वन्य जीव इस जगह को और भी खास बनाते हैं।

मुन्नार सिर्फ प्राकृतिक सुंदरता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एडवेंचर पर्यटन (ट्रेकिंग, कैंपिंग, बोटिंग) और सांस्कृतिक अनुभवों के लिए भी मशहूर है। यहाँ आने वाले पर्यटक इको पॉइंट, मट्टुपेट्टी डैम, एराविकुलम नेशनल पार्क और अनामुड़ी पीक जैसी जगहों पर घूमकर अविस्मरणीय अनुभव प्राप्त करते हैं।

इस प्रकार, मुन्नार एक ऐसा पर्यटन स्थल है जहाँ प्रकृति, रोमांच और शांति - तीनों का अनोखा संगम मिलता है।

प्रमुख आकर्षण

टी गार्डन और म्यूज़ियम

मुन्नार अपनी चाय की खेती के लिए प्रसिद्ध है।

टाटा टी म्यूज़ियम में चाय उत्पादन का इतिहास और प्रक्रिया देखी जा सकती है।

एराविकुलम नेशनल पार्क (ॅनिर्ल्र्स्ॅूदर्हत ईैट)

यहाँ केवल पाए जाने वाले नीलगिरी तहर (एक दुर्लभ पर्वतीय बकरी) को देखा जा सकता है।

मार्च-अप्रैल में यह पार्क नीले कुरिंजी फूलों (१२ साल में एक बार खिलते हैं) के लिए भी प्रसिद्ध है।

मट्टुपेट्टी डैम (ईैल्जूब उेस)

पिकनिक और बोटिंग के लिए प्रसिद्ध स्थान।

आसपास के इलाक़े में ट्रेकिंग और घुड़सवारी भी होती है।

इको पॉइंट (म्प्द इ्दग्हू)

यहाँ की घाटी में बोलने पर आवाज़ गूंजकर वापस आती है।

पर्यटकों के बीच बेहद लोकप्रिय जगह।

अनामुड़ी पीक (ईैंस्ल् र्झ्ीं)

दक्षिण भारत की सबसे ऊँची चोटी (२६९५ मीटर)।

ट्रेकिंग और फोटोग्राफी के लिए प्रसिद्ध।

अट्टुकल जलप्रपात (ूर्ल्ंटूत्ति)

बरसात के मौसम में बेहद आकर्षक झरना।

प्रकृति प्रेमियों और एडवेंचर ट्रेकर्स के लि ए आदर्श।

□□ शॉपिंग और विशेषताएँ

मुन्नार क्यों खास है?

चाय की वादियाँ - फैली हुई हरियाली और टाटा टी म्यूज़ियम।

अनामुड़ी पीक - दक्षिण भारत की सबसे ऊँची पर्वत चोटी।

एराविकुलम नेशनलपार्क - नीलगिरी तहर और दुर्लभ कुरिंजी फूल।

इको पॉइंट और मट्टुपेट्टी डैम - पिकनिक, बोटिंग और गूंज का अनुभव।

जलप्रपात - अट्टुकल, लक्कम और पल्लिवस्सलजैसे झरने।

मसाले और हर्बलप्रोडक्ट्स - इलायची, काली मिर्च और आयुर्वेदिक औषधियाँ।

सालभर अनुकूलमौसम - गर्मियों में शीतलठंडक और सर्दियों में रोमांचक ठंड।

एडवेंचर टूरिज़्म - ट्रेकिंग, कैंपिंग और वाइल्डलाइफ़ फोटोग्राफी।

मुन्नार से आप चाय, कॉफी, मसाले (इलायची, दालचीनी, काली मिर्च), हर्बल प्रोडक्ट्स और शहद खरीद सकते हैं।

☐ कैसे पहुँचे?

हवाई मार्गः नज़दीकी हवाई अड्डा - कोचीन इंटरनेशनल एयरपोर्ट (११० किमी)।

रेल मार्गः अलुवा (११० किमी) और एर्नाकुलम (१३० किमी) नज़दीकी रेलवे स्टेशन।

सड़क मार्गः केरल और तमिलनाडु के बड़े शहरों से बस/टैक्सी उपलब्ध।

☐ ठहराव (ऍ़ब)

मुन्नार में लक्ज़री रिसॉर्ट से लेकर बजट होटल और होमस्टे तक सभी विकल्प उपलब्ध हैं।

चाय बागान के बीच बने रिसॉर्ट पर्यटकों में खास आकर्षण हैं।

☐ घूमने का सबसे अच्छा समय

सितंबर से मार्च - ठंडी और सुखद जलवायु, घूमने और हनीमून के लिए आदर्श।

जून-अगस्त - मानसून का मौसम; झरनों और हरियाली का सौंदर्य चरम पर, लेकिन ट्रेकिंग थोड़ी कठिन हो सकती है।

☐ मुन्नार प्रकृति प्रेमियों, हनीमून कपल्स और साहसिक यात्रियों ूाव्वे, ेंस्जे) - सबके लिए एक बेहतरीन गंतव्य है।

मुन्नार की पहचान उसके चाय बागानों से है। हरियाली से भरी घाटियों में फैले ये बागान न केवलआँखों को सुकून देते हैं, बल्कि टाटा टी म्यूज़ियम में आपको चाय की कहानी भी सुनाते हैं। इसके अलावा यहाँ से मिलने वाले मसाले - इलायची, दालचीनी, काली मिर्च - पर्यटकों की थैली में यादगार उपहार बनकर जाते हैं। चाहे आप हनीमून कपल हों, प्रकृति प्रेमी यात्री हों या एडवेंचर खोजी, मुन्नार हर किसी को अपना बना लेता है। ठंडी हवाओं में गरम चाय की चुस्की और झरनों की सरसराहट के बीच बिताया हर पल जीवन की किताब में सुनहरी याद बन जाता है।

देव आनंद : सपनों का जादूगर

मुंबई की गलियों में जब एक दुबला-पतला नौजवान सूट पहनकर, हाथ में फाइल दबाए, प्रोड्यूसरों के दफ़्तरों की सीढ़ियाँ चढ़ता-उतरता था, तब शायद किसी ने सोचा भी न होगा कि यही युवक आगे चलकर हिंदी सिनेमा का 'एवरग्रीन हीरो' कहलाएगा। यह कहानी है धर्मदेव पिशोरीमल आनंद की, जिन्हें दुनिया आज देव आनंद के नाम से जानती है। गुरदासपुर का यह लड़का अपने भीतर सपनों का समंदर लिए मुंबई आया था। जेब में पैसे कम थे, पर आँखों में चमक अनंत थी। चर्चगेट स्टेशन के बेंचों पर बैठकर, मित्रों संग फिल्मी दुनिया पर चर्चा करते हुए देव आनंद अक्सर कहा करते– 'एक दिन मेरी भी तस्वीरें इन सिनेमा हॉल के बड़े-बड़े पोस्टरों पर होंगी।' लोग मुस्कुरा देते, पर देव का विश्वास अडिग रहता।

१९४६ में चेतन आनंद की फ़िल्म 'हम एक हैं' से देव को पहला अवसर मिला। छोटे-से रोल में भी उनकी सहजता और मुस्कान सबका ध्यान खींच लेती थी। किस्मत की असली दस्तक 'ज़िद्दी' (१९४८) से हुई। अशोक कुमार की सिफारिश और पर्दे पर देव की उपस्थिति ने उन्हें अलग पहचान दी। परन्तु राह आसान नहीं थी–सामने थे दिलीप कुमार की गहराई और राज कपूर का अपनापन। देव को इन दोनों से भिन्न, अपनी शैली गढ़नी थी। और उन्होंने गढ़ी भी– झुकी हुई गर्दन, होंठों पर हल्की मुस्कान, आँखों में रोमांस और सिगरेट का अद्भुत अंदाज़। १९५० में उन्होंने चेतन और विजय आनंद संग नवकेतन फ़िल्म्स की नींव रखी। यह स्टूडियो देव आनंद के सपनों का घर था। 'गाइड' (१९६५) में उनका अभिनय सिर्फ रोमांटिक नहीं, बल्कि दार्शनिक गहराई का प्रतीक बना। 'हरे रामा हरे कृष्णा' (१९७१) ने उन्हें सामाजिक चिंतनशील कलाकार के रूप में स्थापित किया।

देव आनंद की सबसे बड़ी ताक़त थी उनकी यौवनमयी आभा। उम्र बढ़ती गई, पर उनके रोमांटिक अंदाज़ में कभी कमी न आई। दर्शकों के लिए वे हमेशा वही चमकते हुए नायक रहे– 'जैसे परदे पर कोई ताज़ा हवा का झोंका उतर आया हो।' उनका नाम ही दर्शकों में उत्सुकता भर देता था। देव आनंद को पद्म भूषण और दादा साहेब फाल्के पुरस्कार मिले, पर उनके लिए असली पुरस्कार था–लोगों का प्यार।

शाहरुख की कंपनी पर २ करोड़ का केस!

शाहरुख खान के बेटे आर्यन खान की पहली वेब सीरीज 'बैड्स ऑफ बॉलीवुड' रिलीज के साथ ही एक बड़े कानूनी विवाद में फंस गई है। भारतीय राजस्व सेवा (IRS) के अधिकारी समीर वानखेड़े ने सीरीज के खिलाफ दिल्ली हाईकोर्ट में एक याचिका दायर की है, जिसमें उन्होंने शाहरुख खान और गौरी खान की कंपनी रेड चिलीज एंटरटेनमेंट और नेटफ्लिक्स पर उनकी छवि खराब करने और राष्ट्रीय प्रतीक का अपमान करने का आरोप लगाया है। समीर वानखेड़े ने अपनी याचिका में २ करोड़ रुपये के हर्जाने की मांग की है। उन्होंने कहा है कि अगर वह यह मुकदमा जीतते हैं, तो हर्जाने की पूरी राशि टाटा मेमोरियल कैंसर अस्पताल को कैंसर रोगियों के इलाज के लिए दान कर देंगे।

समीर वानखेड़े ने अपनी याचिका में आरोप लगाया कि नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम हो रही यह वेब सीरीज झूठी और दुर्भावनापूर्ण है, जिसे

जानबूझकर उनकी प्रतिष्ठा को धूमिल करने के इरादे से बनाया गया है। उन्होंने कहा कि सीरीज में एक पुलिस अधिकारी का किरदार उन पर आधारित है और इसे नकारात्मक तरीके से पेश किया गया है, जबकि उनसे जुड़ा असली मामला अभी भी बॉम्बे हाईकोर्ट में लंबित है।

याचिका में आगे यह भी आरोप लगाया गया है कि सीरीज में न केवल ड्रग्स विरोधी एजेंसियों की नकारात्मक छवि दिखाकर कानून प्रवर्तन संस्थाओं में जनता के भरोसे को कम करने की कोशिश की गई है, बल्कि 'सत्यमेव जयते' का नारा लगाने के बाद एक किरदार द्वारा अश्लील इशारा दिखाकर राष्ट्रीय प्रतीक का भी अपमान किया गया है, जो राष्ट्रीय सम्मान अपमान निवारण अधिनियम का उल्लंघन है। समीर वानखेड़े ने अपनी शिकायत में यह भी कहा है कि सीरीज की सामग्री आईटी एक्ट और भारतीय न्याय संहिता (BNS) की कई धाराओं का भी उल्लंघन करती है। अब इस मामले पर दिल्ली हाईकोर्ट आगे की सुनवाई करेगा।

जीएसटी सुधार २०२५:
महाराष्ट्र की अर्थव्यवस्था को कैसे विभिन्न क्षेत्रों में होगा लाभ

मुख्य बिंदु

१. प्रसंस्कृत चीनी और खाद्य पदार्थ पर जीएसटी में कटौती से लागत में ६-७ प्रतिशत की कमी आयेगी - जिससे करीब ५० लाख किसानों और दो लाख कामगारों को लाभ होगा।
२. प्रसंस्कृत & संरक्षित मछली ५ प्रतिशत जीएसटी की वजह से सस्ती हो जायेगी- इससे दो लाख मछुआरों को लाभ होगा।
३. वस्त्र, चमड़ा, पैठणी और वरली कला पर जीएसटी कम होने से ११ लाख कामगारों और कारीगरों की आजीविका बेहतर होगी।
४. ऑटो, रक्षा और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जीएसटी में कटौती से इसके केन्द्रों को बढ़ावा मिलेगा जिसमें लाखों लोगों को रोजगार मिला हुआ है।
५. दवाओं पर जीएसटी कटौती और बीमा पर जीएसटी छूट से स्वास्थ्य सेवा और बीमा प्रीमियम सस्ते हो जाएँगे।

महाराष्ट्र में कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्र मजबूत स्थिति में है और हाल के जीएसटी सुधारों से इस राज्य को काफी लाभ होने वाला है। राज्य की अर्थव्यवस्था में पश्चिमी क्षेत्र में चीनी उत्पादन, नागपुर, नासिक, जलगाँव और कोंकण में फल और सब्ज़ियों का प्रसंस्करण और तटीय ज़िलों में मत्स्य पालन का योगदान है। यह इचलकरंजी और सोलापुर जैसे हथकरघा केंद्रों के साथ कोल्हापुरी चप्पल,वरली पेंटिंग और पैठणी साड़ियों जैसे प्रसिद्ध शिल्पों के साथ-साथ ऑटोमोबाइल, रक्षा और फार्मास्यूटिकल्स के औद्योगिक केन्द्रों के लिए भी समान रूप से जाना जाता है।

जीएसटी सुधारों से सभी क्षेत्रों में करों में कटौती हुई है जिससे दाम कम हुए हैं और उपभोक्ताओं को राहत मिली है। लागत में कटौती और प्रतिस्पर्धा बढ़ने से ये बदलाव सीधे तौर पर किसानों,कारीगरों,श्रमिकों और पेशेवरों के लिए फायदेमंद सिद्ध हुए हैं। नये ढांचे से उपभोक्ताओं की खरीद क्षमता बढ़ी है जिससे महाराष्ट्र की अर्थव्यवस्था मजबूत हुई है।

चीनी उद्योग

महाराष्ट्र का चीनी क्षेत्र पश्चिमी जिलों कोल्हापुर, सांगली,सतारा, पुणे, सोलापुर और अहमदनगर में फैला हुआ है। यह भारत का सबसे बड़ा चीनी उत्पादक क्षेत्र है और देश के कुल उत्पादन का लगभग ३५-४०፤ हिस्सा यहीं तैयार होता है। यह उद्योग २०० से अधिक चीनी मिलों में २,००,००० से अधिक श्रमिकों को प्रत्यक्ष रोजगार प्रदान करता है और अनुमानित तौर पर ५० लाख गन्ना किसानों की आजीविका का आधार है। परिष्कृत चीनी पर जीएसटी दर १२ प्रतिशत से घटाकर से ५ प्रतिशत किये जाने से थोक स्तर पर चीनी लगभग ६-७ प्रतिशत सस्ती हो गयी है। इससे विशाल खाद्य प्रसंस्करण उद्योग (कन्फेक्शनरी,पेय पदार्थ) की कच्चे माल की लागत कम होगी और घरेलू किराना खर्च कम होंगे।

प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ (फल और सब्जियां)

महाराष्ट्र में प्रसंस्कृत फल उत्पादों पर जीएसटी में कमी से खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र को बढ़ावा मिला है। फलों के रस,जैम,जेली और सॉस पर जीएसटी दर १२ प्रतिशत से घटाकर ५ प्रतिशत कर दी गई है। इस बदलाव से महाराष्ट्र के बागवानी क्षेत्रों को सीधा लाभ होगा। इसमें संतरे के लिए नागपुर, अंगूर, प्याज और टमाटर के लिए नासिक, केले के लिए जलगाँव और आम के लिए कोंकण क्षेत्र आते हैं। इस उद्योग में २,७२८ पंजीकृत खाद्य प्रसंस्करण इकाइयां (एफपीयू) हैं और इनसे लगभग दो लाख लोगों को रोजगार मिलता है,जो खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में भारत के कुल कार्यबल का १३ प्रतिशत हिस्सा है। व्यापार के संदर्भ में देखें तो २०२२-२३ के दौरान भारत के कृषि और खाद्य उत्पाद निर्यात में राज्य का योगदान भारत के कुल निर्यात का १७.६४ प्रतिशत था। जीएसटी की दर में कटौती से प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों की लागत में ६-७ प्रतिशत की कमी आयेगी। इससे खपत बढ़ने, मूल्य वर्द्धन को बढ़ावा मिलने और राज्य की बागवानी पट्टियों से किसानों के उत्पादों की खरीद बढ़ने की संभावना है।

मत्स्य पालन & समुद्री प्रसंस्करण

महाराष्ट्र की लंबी तटरेखा इसे देश का एक प्रमुख समुद्री मछली उत्पादक राज्य बनाती है। मत्स्य पालन

एवं समुद्री प्रसंस्करण क्षेत्र, कोंकण तट पर फैला एक महत्वपूर्ण पारंपरिक उद्योग है जिसका विस्तार मुंबई,रायगढ़,रत्नागिरी और सिंधुदुर्ग जिलों तक पहुंच गया है। यह लंबे समय से कोली समुदाय और अन्य तटीय समुदायों की आजीविका का मुख्य साधन रहा है। इससे २,००,००० से अधिक सक्रिय मछुआरों को रोजगार मिला हुआ है और प्रसंस्करण,परिवहन एवं खुदरा बिक्री जैसी संबद्ध सेवाओं में इससे लाखों लोग जुड़े हुए हैं। घरेलू मांग को पूरा करने के अलावा,यह उद्योग वैश्विक समुद्री खाद्य-पदार्थ के व्यापार में भी योगदान देता है। महाराष्ट्र से प्रसंस्कृत मछली और झींगा का निर्यात अंतर्राष्ट्रीय बाजारों,विशेष रूप से यूरोपीय संघ,जापान और दक्षिण पूर्व एशिया में किया जाता है। तैयार और संरक्षित मछली उत्पादों पर जीएसटी को १२ प्रतिशत से घटाकर ५ प्रतिशत करने से तटीय क्षेत्र में समुद्री खाद्य-पदार्थ प्रसंस्करण से जुड़े सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसएमई) को बढ़ावा मिलेगा। इससे उत्पाद घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों बाजारों में अधिक प्रतिस्पर्धी बनेंगे।

हथकरघा & हस्तशिल्प

महाराष्ट्र में कपास एवं वस्त्र उद्योग महाराष्ट्र का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जिसकी कई इलाकों में मज़बूत उपस्थिति है। प्रमुख वस्त्र केंद्रों में इचलकरंजी,जिसे अक्सर 'महाराष्ट्र का मैनचेस्टर' कहा जाता है और सोलापुर है जो अपने तौलियों और चादरों के लिए जाना जाता है। साथ ही मालेगांव एवं भिवंडी दोनों ही महत्वपूर्ण बुनाई और प्रसंस्करण केंद्र हैं। इसके अलावा विदर्भ के कपास उत्पादक क्षेत्र,विशेषकर यवतमाल और अमरावती और मराठवाड़ा के कुछ हिस्से भी इस क्षेत्र के प्रमुख केंद्र हैं।

कपड़ा क्षेत्र महाराष्ट्र में दूसरा सबसे बड़ा नियोक्ता है, जो कताई,बुनाई और परिधान उद्योग में ११ लाख से ज़्यादा लोगों को आजीविका प्रदान करता है। यह विदर्भ के कपास किसानों से लेकर बिजली करघा श्रमिकों और वस्त्र विनिर्माण से जुड़े लोगों के साथ लघु-स्तरीय वस्त्र निर्माताओं तक लाखों लोगों का भरण-पोषण करता है। महाराष्ट्र भारत के अग्रणी वस्त्र उत्पादक राज्यों में से एक है और सूत एवं कपड़ा उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अकेले सोलापुर में ही वस्त्र से जुड़े बाज़ार में अनुमानित कारोबार १५,००० करोड़ रुपये से ज़्यादा है।

धागे और कपड़ों पर जीएसटी दर १२ प्रतिशत से घटाकर ५ प्रतिशत करने से परिधान और घरेलू वस्त्र निर्माताओं की कच्चे माल की लागत में लगभग ६-७ प्रतिशत की कमी आने की संभावना है। इससे महाराष्ट्र के पावरलूम क्षेत्र की प्रतिस्पर्धा सीधे तौर पर बढ़ेगी।

कोल्हापुरी चप्पलें & चमड़े के सामान

कोल्हापुरी चप्पल और चमड़े के सामान से जुड़े उद्योग कोल्हापुर, सांगली के कुछ हिस्सों और मुंबई के धारावी स्थित चमड़ा प्रसंस्करण केंद्र में स्थित हैं। कोल्हापुरी चप्पल का जीआई-टैग शिल्प मुख्य रूप से हाशिए पर रहने वाले समुदायों के कारीगर परिवारों की पारंपरिक आजीविका का साधन है,जो पीढ़ियों से इन अनूठी चप्पलों को हाथ से बनाते आ रहे हैं। यह क्षेत्र कोल्हापुर क्षेत्र के ३०,००० से अधिक कारीगरों को प्रत्यक्ष रोजगार प्रदान करता है। इसके अलावा धारावी चमड़ा उद्योग में १५,००० से अधिक लोगों को रोजगार मिला हुआ है।

हाथ से बने ये उत्पाद पूरे भारत में बड़े पैमाने पर बेचे जाते हैं और अमेरिका,ऑस्ट्रेलिया और ब्रिटेन जैसे देशों को निर्यात भी किए जाते हैं। २,५०० रुपये प्रति जोड़ी या उससे कम कीमत वाले जूते-चप्पल और चमड़े पर संशोधित ५ प्रतिशत की जीएसटी दर से इस उद्योग को सीधे लाभ होने की उम्मीद है। उदाहरण के लिए,कोल्हापुरी चप्पलों की एक जोड़ी,जिसकी कीमत आमतौर पर ८००रुपये से २,०००रुपये के बीच होती है वह अब लगभग ६-७ प्रतिशत सस्ती हो जाएगी। इस कटौती से यह उत्पाद बाज़ार में अधिक किफायती और प्रतिस्पर्धी हो जाएगा,जिससे कारीगरों की बिक्री को बढ़ावा मिलेगा।

वरली चित्रकला और लोक कला

वरली चित्रकला और लोक कला पालघर जिले और सह्याद्रि पर्वतमाला के आसपास के आदिवासी क्षेत्रों में केन्द्रित है। यह पारंपरिक कला सैकड़ों कारीगर परिवारों विशेष रूप से वरली समुदाय के लोगों के लिए आजीविका का स्रोत है। अपनी साधारण और मनमोहक शैली के लिए जानी जाने वाली यह कला कैनवस,परिधान और घरेलू सजावट की वस्तुओं पर बेची जाती है। इसकी व्यापक लोकप्रियता ने इस क्षेत्र के कारीगरों द्वारा बनाई गई प्रामाणिक, हाथ से चित्रित कृतियों की मांग को बनाए रखने में मदद की है। हाथ से बनाई गई पेंटिंग्स पर जीएसटी को १२ प्रतिशत से घटाकर ५ प्रतिशत करने से व्यापक प्रभाव पड़ेगा। प्रामाणिक वरली पेंटिंग्स लगभग ६-७ प्रतिशत सस्ती होने की उम्मीद है। इस बदलाव से कारीगरों को बड़े पैमाने पर उत्पादित प्रिंटों के साथ अधिक प्रभावी ढंग से प्रतिस्पर्धा करने का अवसर मिलेगा और साथ ही उन्हें अपने पारंपरिक शिल्प से बेहतर आजीविका कमाने में भी मदद मिलेगी।

पैठणी साड़ियाँ

पैठणी साड़ियाँ महाराष्ट्र के सबसे शानदार हाथ से बुने वस्त्रों में से एक हैं। इन साड़ियों की बुनाई एक अत्यंत कुशल,पारंपरिक प्रथा है जो बुनकर परिवारों में पीढ़ियों से चली आ रही है। पैठण और येओला के बुनाई केन्द्र कई हज़ार बुनकर परिवारों को रोज़गार प्रदान करते हैं।

एक प्रीमियम और उच्च-मूल्य वाले उत्पाद के रूप में यह बाज़ार में एक विशिष्ट स्थान रखती है,जहां एक पैठणी साड़ी की कीमत १५,००० रुपये से लेकर ५ लाख रुपये से अधिक तक होती है। अपनी गहरी सांस्कृतिक पहचान के कारण ये साड़ियां महाराष्ट्रियन शादियों के लिए एक आवश्यक परिधान मानी जाती हैं।

रेशमी/ज़री धागे जैसे प्रमुख कच्चे माल पर जीएसटी १२ प्रतिशत से घटाकर ५ प्रतिशत करने से बुनकरों की उत्पादन लागत कम हो जाएगी। इससे उन्हें बेहतर मुनाफा या अपने उत्पादों की कीमत अधिक प्रतिस्पर्धी रूप से तय करने की सुविधा मिलेगी।

ऑटोमोटिव & ऑटो सहायक उपकरण केन्द्र

महाराष्ट्र में ऑटोमोटिव और ऑटो सहायक उपकरण क्षेत्र का पुणे-चाकन-तलेगांव बेल्ट,औरंगाबाद और नासिक में एक मज़बूत आधार है। यह एक उच्च-कौशल वाला क्षेत्र है जिसमें इंजीनियर,आईटीआई प्रशिक्षित कर्मी और बड़ी संख्या में असेंबली लाइन वाले कर्मचारी कार्यरत हैं। पुणे ऑटोमोटिव क्लस्टर भारत के सबसे बड़े क्लस्टरों में से एक है जो ५,००,००० से ज़्यादा लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोज़गार प्रदान करता है।

यह क्षेत्र न केवल भारत के ऑटोमोबाइल और ऑटो उपकरण विनिर्माण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है,बल्कि इसने महाराष्ट्र में शहरीकरण और आर्थिक विकास को भी बढ़ावा दिया है। यह एक प्रमुख निर्यात केंद्र भी है,जो भारत के कुल ऑटो निर्यात में २५ प्रतिशत से अधिक का योगदान देता है।

हाल ही में जीएसटी दर को २८ प्रतिशत से घटाकर १८ प्रतिशत करने से छोटी कारों, ३५० सीसी से कम क्षमता वाले मोटरसाइकिलों और ऑटो पार्ट्स पर करों में कटौती हो गयी है। बड़ी कारों के लिए,कंपनसेशन सेस हटा दिया गया है,जिससे इस श्रेणी की कारों की कीमतों पर और असर पड़ा है। संशोधित दरों से वाहनों और स्पेयर पार्ट्स की लागत में उल्लेखनीय कमी आने की उम्मीद है। उदाहरण के लिए,१० लाख रुपये की कीमत वाली कार ९०,००० रुपये से एक लाख रुपये तक सस्ती हो सकती है। इसके अलावा सर्विसिंग के लिए पुर्जों की लागत भी कम हो जाएगी। इससे पूरे क्षेत्र में मांग बढ़ेगी।

आमंत्रित नोबेल पुरस्कार विजेताओं ने दीक्षांत समारोह में स्नातकों को अपने उद्बोधन से किया प्रेरित

कीट डीम्ड विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर का तीन दिवसीय वार्षिक दीक्षांत समारोह:२०२५ संपन्न

भुवनेश्वर, २८ सितम्बरः कीट डीम्ड विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर का २१वां वार्षिक दीक्षांत समारोह :२०२५ रविवार को संपन्न हो गया। इस अवसर पर कुल ९,४६४ विद्यार्थियों को स्नातक और स्नातकोत्तर की डिग्री प्रदान की गई, जिनमें ७,२३५ स्नातक, २,०३४ स्नातकोत्तर और १९५ पीएच.डी. उपाधियाँ शामिल थीं। पहली बार विश्वविद्यालय के इतिहास में दीक्षांत समारोह तीन दिनों तक आयोजित किया गया ताकि बड़ी संख्या में स्नातकों और उनके परिजनों को समायोजित किया जा सके।

समारोह की गरिमा बढ़ाने हेतु नोबेल पुरस्कार विजेता प्रो. मोहन मुनेसिंघे (श्रीलंका), नोबेल शांति पुरस्कार विजेता हेर एक्स. ओइदेद बुशामाउई (ट्यूनीशिया) और डॉ. जस्टिस अब्दुलक़ावी अहमद यूसुफ, न्यायाधीश एवं अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय के पूर्व अध्यक्ष उपस्थित रहे। इस अवसर पर मानद उपाधि (डॉक्टरेट ऑफ लॉ - Honoris Causa) डॉ. फिदेल रेयेस ली (रेक्टर एवं सांसद, ग्वाटेमाला गणराज्य), डॉ. हुसैफा खोराकीवाला (कार्यकारी निदेशक, वॉकहार्ट लि. एवं वैश्विक मानवतावादी), श्री नॉर्बर्ट सॉयर (चेयरमैन, आर्कियोलॉजिकल पार्क, जर्मनी), श्री संजय हंस (संस्थापक चेयरमैन, लालचंद समूह), श्री एस. के. सचदेवा (चेयरमैन एवं संपादक, Competition Success Review) तथा ओइदेद बुशामाउई को प्रदान की गई। अपने संबोधन में प्रो. मुनेसिंघे ने बदलती दुनिया में शांति और सतत विकास की चुनौतियों पर जोर दिया और 'गरीबी, असमानता और संसाधनों की कमी' के गहरे संबंध को रेखांकित किया। जस्टिस यूसुफ ने स्नातकों को वैश्विक शांति दूत और न्याय के प्रवक्ता बनने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि कीट के स्नातक 'विश्वास की इमारतें और पुल' बनाएँ, जब 'अन्याय अंधेरे में फुसफुसाए तो उसके खिलाफ खड़े हों' और पीड़ितों व उपेक्षितों के प्रति करुणा दिखाएँ।

अपने उद्बोधन में हेर एक्स. बुशामाउई ने मानद उपाधि प्राप्त करने पर आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वे अपने को सौभाग्यशाली मानती हैं कि वे कीट आने वाले २३ अन्य नोबेल पुरस्कार विजेताओं की श्रेणी में शामिल हुई हैं। वक्ताओं ने कीट एवं कीस के संस्थापक महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत की दूरदर्शिता और अभूतपूर्व योगदान की सराहना की। डॉ. खोराकीवाला ने कहा कि कीठ और कीस शिक्षा और सामाजिक सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्टता के स्तंभ हैं। श्री सचदेवा ने प्रोफेसर सामंत को 'दूरदर्शी नेता और मानवतावादी' बताते हुए कहा कि उनका जीवन सेवा, दृढ़ता और करुणा का आदर्श है। डॉ. ली ने इसे भारत और ग्वाटेमाला के बीच शिक्षा, शांति और न्याय के रिश्ते का प्रतीक बताया। श्री अशोक कुमार परीजा, कुलपति (चांसलर), ने कहा कि 'स्नातक वर्ग २०२५ केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता ही नहीं बल्कि बदलाव के मशालवाहक बनने का साहस और संकल्प भी दर्शाता है।' प्रो. (डॉ.) एस. के. आचार्य, प्रो-कुलपति, ने छात्रों को निरंतर सीखते रहने की प्रेरणा दी।

कुलपति प्रो. सरंजीत सिंह, रजिस्ट्रार प्रो. जे. आर. महंती, विभागाध्यक्ष, संकाय सदस्य और हजारों छात्र-छात्राएँ समारोह में शामिल हुए। इस अवसर पर प्रोफेसर सामंत ने सभी स्नातकों को बधाई देते हुए कहा, 'हम उत्कृष्टता के प्रति अपनी संस्थागत प्रतिबद्धता को दोहराते हैं और शोध एवं नवाचार के माध्यम से शैक्षणिक प्रभाव को और गहरा करने की दिशा में आगे बढ़ते रहेंगे।'

- अशोक पाण्डेय

कीट डीम्ड विश्वविद्यालय के २१वें वार्षिक दीक्षांत समारोह पर एक अनुचिंतनः अच्युत सामंत

कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ़ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी (कीट) का २१वाँ वार्षिक दीक्षांत समारोह जो २६-२८ सितंबर को आयोजित हुआ है वह हमारे विश्वविद्यालय की यात्रा का एक ऐतिहासिक पड़ाव है। समारोह तीन दिनों तक आयोजित किया ताकि बड़ी संख्या में स्नातक हो रहे छात्रों और उनके परिजनों को समायोजित किया जा सके। इसमें ट्यूनीशिया और श्रीलंका के नोबेल पुरस्कार विजेता, अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीश अब्दुलक़ावी अहमद यूसुफ और न्यायमूर्ति दलवीर भंडारी तथा विश्व के कई प्रतिष्ठित गणमान्य अतिथिगण शामिल रहे हैं। ये नोबेल पुरस्कार विजेता उन बाईस महान हस्तियों की श्रृंखला में जुड़ते हैं जो पहले कीट का दौरा कर चुके हैं। यह इस बात का स्मरण कराता है कि किस प्रकार एक साधारण सपना, केवल २८ वर्षों में (संस्थान के रूप में) और २१ वर्षों में (डीम्ड विश्वविद्यालय के रूप में), एक वैश्विक शिक्षा केंद्र के रूप में विकसित हुआ है।

१९९७ में स्थापित, आज कीट भारत के प्रमुख विश्वविद्यालयों में से एक है जिसकी अटूट प्रतिबद्धता गुणवत्तापूर्ण शिक्षा है। यह ३६ वर्ग किलोमीटर के परिसर में ४०,००० भारतीय छात्रों और ७० देशों से आए २,००० अंतर्राष्ट्रीय छात्रों का घर है जो एक बहुसांस्कृतिक शैक्षणिक वातावरण का निर्माण करता है। कीट ने इंजीनियरिंग, चिकित्सा, विधि, प्रबंधन, जैव-प्रौद्योगिकी सहित विभिन्न क्षेत्रों में मानक स्थापित किया है। इसके २३ विद्यालयों में ३,००० से अधिक प्राध्यापक कार्यरत हैं। टाइम्स हायर एजुकेशन रैंकिंग में इसकी इंजीनियरिंग शिक्षा विश्वस्तरीय स्थान रखती है; विधि विद्यालय भारत के शीर्ष १० में शामिल है; कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेस (कीम्स) राष्ट्रीय स्तर पर २४वें स्थान पर है और जैव-प्रौद्योगिकी विद्यालय को 'सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस' के रूप में मान्यता प्राप्त है।

कीट का टेक्नोलॉजी बिजनेस इनक्यूबेटर देश का शीर्ष निजी जैव-इनक्यूबेटर है, जो नवाचार और स्टार्ट-अप को सतत बढ़ावा देता है। पिछले दो दशकों से विश्वविद्यालय ने केवल ६० प्रतिशत से अधिक अंक पाने वाले छात्रों को प्रवेश दिया है जिससे शैक्षिक गुणवत्ता बनी हुई है। क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग और टाइम्स हायर एजुकेशन ने कीट को वैश्विक स्तर पर रैंक किया है, तथा इसे IET (यूके) और ABET (यूएसए) की अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त है।

नौकरी में चयन कीट की विशेष पहचान है–शीर्ष कंपनियाँ यहाँ से भर्ती करती हैं और कई स्नातक विश्व-प्रसिद्ध संस्थानों में उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं। लेकिन आंकड़ों से बढ़कर, कीट अपने छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण पर गर्व करता है जहाँ छात्र और अभिभावक दोनों सुरक्षित और समर्थित महसूस करते हैं। कभी सीमित आर्थिक संसाधनों के साथ मैंने सुनिश्चित किया है कि आर्थिक बाधाएँ कभी भी कीट में शिक्षा के अवसरों को सीमित न करें।

शैक्षणिक गतिविधियों के अलावा हमारी विश्वस्तरीय अवसंरचना हमारे शैक्षणिक पारिस्थितिकी तंत्र की आधारशिला है। २,६००-बिस्तरों वाला कीम्स सुपर-विशेषज्ञता अस्पताल, सात मंज़िला केंद्रीय पुस्तकालय, २२ मंज़िला अनुसंधान और नवाचार टॉवर, और विशाल सभागार–जिनमें एक ५,००० सीटों वाला भी शामिल है–सीखने और विचार-विनिमय के जीवंत स्थल प्रदान करते हैं। ३० फुड कोर्ट, १८ खेल परिसर और हरित, पर्यावरण-अनुकूल परिदृश्य शिक्षा के साथ-साथ छात्रों के कल्याण को भी सुदृढ़ करते हैं।

यदि शिक्षा हमारी शक्ति है तो खेल हमारी समग्र शिक्षा-दर्शन का अभिन्न हिस्सा है। २४ ओलंपियन छात्रों के साथ, कीट खेलों का प्रमुख केंद्र बन चुका है और इसे राष्ट्रीय खेल प्रोत्साहन पुरस्कार, स्पोर्टस्टार अवार्ड और फिक्की स्पोर्ट्स अवार्ड से सम्मानित किया गया है। यह एशिया में फीफा के फुटबॉल फॉर स्कूल्स और एफआईवीबी के वॉलीबॉल फॉर ऑल का नोडल केंद्र भी है।

विश्वविद्यालय का वैश्विक विस्तार १०० से अधिक देशों तक फैला है, जहाँ इसके ३५० से अधिक साझेदारी कार्यक्रम और सहयोग चल रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र स्वयंसेवक (UN Volunteers) और अमेरिकन काउंसिल ऑफ़ यंग पॉलिटिकल लीडर्स के साथ भी इसके समझौते हैं। कीट दक्षिण एशिया का एकमात्र निजी विश्वविद्यालय है जिसे संयुक्त राष्ट्र-ECOSOC में 'विशेष परामर्शदात्री' दर्जा प्राप्त है। वर्षों से, यह २४ नोबेल पुरस्कार विजेताओं, १२० राजदूतों, २० राष्ट्राध्यक्षों और १,००० से अधिक नीति-निर्माताओं की मेज़बानी कर चुका है, जिससे छात्रों को वैश्विक नेतृत्व से परिचय मिला है।

तेजी से बदलती दुनिया में विश्वविद्यालय प्रतिबद्ध है कि ऐसे पेशेवर तैयार हों जो दक्षता के साथ करुणा, नवाचार के साथ उत्तरदायित्व, और सफलता के साथ विनम्रता का संतुलन रखें। कीट की उपलब्धियों के मूल में इसकी 'शिक्षा के साथ संस्कार' की दर्शनशास्त्र है। स्नातक हो रहे २०२५ के बैच को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। आशा है कि वे कीट के मूल्यों–ज्ञान के साथ विनम्रता, सफलता के साथ सेवा और नेतृत्व के साथ ईमानदारी–को आत्मसात करेंगे।

संस्थापकः कीट-कीस और कीम्स

भारत को अंतर्राष्ट्रीय मध्यस्थता का वैश्विक केंद्र बनाएगा कीट सेंटर फॉर इंटरनेशनल आर्बिट्रेशन एंड मेडिएशन : न्यायमूर्ति संदीप मेहता, सुप्रीम कोर्ट जज

भुवनेश्वर, २७ सितम्बरः स्थानीय स्वस्ति प्रीमियम होटल में सायंकाल चार बजे कीट सेंटर फॉर इंटरनेशनल आर्बिट्रेशन एंड मेडिएशन (KCIAM) का कर्टेन रेज़र एवं विज़न लॉन्च हुआ। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध न्यायाधीशों, न्यायविदों और विधि विशेषज्ञों ने इसे भारत को वैश्विक मध्यस्थता मानचित्र पर स्थापित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम बताया तथा इस ऐतिहासिक पहल के लिए कीट-कीस-कीम्स के संस्थापक प्रोफेसर अच्युत सामंत को साधुवाद दिया। सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश न्यायमूर्ति संदीप मेहता ने अपने सारगर्भित संबोधन में KCIAM को 'समयानुकूल और दूरदर्शी पहल' बताते हुए कहा कि यह सेंटर विश्वस्तरीय सुविधाएँ प्रदान करेगा, भावी मध्यस्थों को प्रशिक्षित करेगा तथा सर्वोत्तम परम्पराओं पर शोधकार्य को बढ़ावा देगा। उन्होंने कहा, 'KCIAM न केवल इस क्षेत्र की सेवा करेगा, बल्कि भारत को मध्यस्थता और सुलह का वैश्विक केंद्र बनाने के दृष्टिकोण में सार्थक योगदान देगा।'

कीट-कीस-कीम्स के संस्थापक प्रोफेसर अच्युत सामंत की गरिमयी उपस्थिति में KCIAM की वेबसाइट भी लॉंच हुई। अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय (ICJ) के न्यायमूर्ति अब्दुलक़ावी ए. यूसुफ ने अपने संबोधन में कहा कि भारत की परंपरा में मध्यस्थता और सुलह गहराई से जुड़ी रही है। उन्होंने विश्वास जताया कि यदि KCIAM निष्पक्षता और पेशेवर मानकों को बनाए रखेगा तो यह सिंगापुर और हांगकांग जैसे वैश्विक मानकों के समकक्ष खड़ा हो सकता है। पटना उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति संदीप कुमार ने कहा कि भुवनेश्वर इस केंद्र के लिए उपयुक्त स्थान है, क्योंकि यह प्रौद्योगिकी केंद्र के रूप में विकसित हो रहा है। उन्होंने बताया कि हाल के वर्षों में केवल सुलह (मेडिएशन) के माध्यम से ही ५८,००० से अधिक मामलों का समाधान हुआ है।

झारखंड उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति राजेश कुमार ने बताया कि हमें विवादों को विदेश भेजने की प्रवृत्ति कम करनी चाहिए। न्यायमूर्ति आनंद सेन ने कहा कि अब मध्यस्थता और सुलह वैकल्पिक उपाय न रहकर मुख्यधारा की न्यायिक प्रक्रिया का हिस्सा बनते जा रहे हैं। न्यायमूर्ति सुजीत नारायण प्रसाद ने भरोसा जताया कि KCIAM विश्वस्तरीय संस्थान बनेगा, जैसा कि प्रोफेसर अच्युत सामंत की विश्व स्तरीय शैक्षिक पहल कीट-कीस है। पूर्व अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल डॉ. पिंकी आनंद ने अपने संबोधन में यह बताया कि यह केंद्र भारत की तीव्र गति से बढ़ती अर्थव्यवस्था की आकांक्षाओं को दर्शाता है और न्यायिक ढांचे को मजबूत करता है। कीट विधि संकाय के प्रोफेसर एमेरिटस प्रो. एन. एल. मित्रा ने कहा कि KCIAM विश्वस्तरीय मध्यस्थता केंद्र होगा और इसमें उत्कृष्ट मध्यस्थों व विधि विशेषज्ञों का पैनल होगा।

KCIAM के चेयरमैन और सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता अशोक परीजा ने अपने सारगर्भित स्वागत भाषण में बताया कि यह अभूतपूर्व ऐतिहासिक पहल ओडिशा की आर्थिक प्रगति को नई गति प्रदान करेगी और न्याय को और अधिक सुलभ बनाएगी। कीट डीम्ड विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सरनजीत सिंह ने आभार व्यक्त किया।

स्वर्गीया इंदिरा पटनायक को प्रोफेसर अच्युत सामंत की ओर से दी गई श्रद्धांजलि

ओड़िशा के जानो-माने वरिष्ठतम ओड़िया पत्रकार तथा लोकप्रिय ओड़िया डेली समाज के अवकाशप्राप्त सम्पादक प्रदोष पटनायक की स्वर्गीया पत्नी स्वर्गीया इंदिरा पटनायक को प्रोफेसर अच्युत सामंत की ओर से श्रद्धांजलि दी गई। अवसर पर ऐडवोकेट मनोरंजन प्रधान, ऐडवोकेट अनिल परिडा, पत्रकार बिजय स्वईं, राजनेता डॉ तनमय स्वईं तथा पत्रकार अशोक पाण्डेय आदि उपस्थित थे। इंदिरा पटनायक का निधन कीम्स अस्पताल में हो गया था। वे लगभग ७३ साल की थीं। प्रोफेसर सामंत ने दिवंगत आत्मा की चिर शांति हेतु भगवान जगन्नाथ से प्रार्थना की।

कीस की मेधावी छात्रा जामुनी झांकार बनीं चुकतिया भुंजिया जनजाति की पहली शोधार्थी

कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (कीस) जो हज़ारों छात्रों के जीवन को संवार रहा है, आत्मनिर्भर बना रहा है वह भी केजी कक्षा से लेकर पीजी कक्षा तक निःशुल्क और उत्कृष्ट शिक्षा के द्वारा उसी कीस की एक मेधावी शोधार्थी जामुनी झांकार, जिन्हें चुकतिया भुंजिया जनजाति (विशेष रूप से असुरक्षित जनजातीय समूह - PVTG), जो नुआपाड़ा जिले के दूरस्थ वन क्षेत्रों में निवास करती है, से पहली शोध छात्रा बनने का गौरव प्राप्त हुआ है। जामुनी ने कीस में शोध छात्रा के रूप में प्रवेश लिया और सफलतापूर्वक अपना शोध कार्य पूर्ण करने के बाद अब उन्हें पीएच.डी. की उपाधि के लिए योग्य घोषित किया गया है।

३० वर्षीय इस आदिवासी शोधार्थी ने आयुर्वेदिक औषधियों पर पीएच.डी. पूरी की है। उसका शोध विशेष रूप से वैदिक चिकित्सा, औषधीय गुणों और आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों की खुराक पर केंद्रित है। उन्होंने नुआपाड़ा और आसपास के जिलों में व्यापक शोध किया और परंपरागत वैद्यों व आयुर्वेद चिकित्सकों से संवाद कर स्थानीय जानकारियों का संकलन किया। उनका यह कार्य प्राचीन ज्ञान को आधुनिक विज्ञान से जोड़ने के साथ-साथ आदिवासी चिकित्सा पद्धतियों को भी संरक्षित करता है।

जामुनी ने आयुर्वेदिक चिकित्सा में अपना शोध पूरा कर एक चमत्कार कर दिया है। उनके पिता बिजय झांकार और माता बैदेही की शिक्षा-प्रेरणा के कारण ही जामुनी और उनकी छह बहनें सभी शिक्षित हो पाईं। उनकी इस असाधारण उपलब्धि की व्यापक सराहना हुई है। ओडिशा विधानसभा की अध्यक्ष सुरमा पाढ़ी, उपमुख्यमंत्री श्री के वी. सिंहदेव और प्रभाती परिडा ने उन्हें बधाई दी है। आज जामुनी ने स्वयं जाकर डॉ. अच्युत सामंत, कीट और कीस के संस्थापक से आशीर्वाद लिया। डॉ. सामंत ने उनकी सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त की जश्न और उसके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ दीं। अब जामुनी आदिवासी बच्चों के लिए प्रेरणा बन गई हैं।

गौरतलब है कि कीस विश्व का सबसे बड़ा आदिवासी शैक्षणिक संस्था है, जिसमें विद्यालय, महाविद्यालय और डीम्ड विश्वविद्यालय सम्मिलित हैं। यहाँ पढ़ने वाले अनेक वंचित आदिवासी छात्र डॉक्टर, इंजीनियर, प्राध्यापक, ओएएस और ओजेएस अधिकारी बने हैं, तो कई कीट, एनआईटी और आईआईएम जैसी प्रतिष्ठित संस्थाओं में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। शैक्षणिक क्षेत्र के अलावा कीस के छात्र ओडिशा राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में भी राज्य और देश का गौरव बढ़ाते हैं। अपनी सफलता पर आभार व्यक्त करते हुए जामुनी ने डॉ. सामंत, कीस डी.यू. और अपनी शोध-निर्देशिका डॉ. रश्मि महापात्रा को धन्यवाद दिया।

महान् शिक्षाविद् प्रो. अच्युत सामंतः न कभी थकते हैं, न ही कभी आराम करते हैं

महान् शिक्षाविद् प्रो. अच्युत सामंतः संस्थापक कीट-कीस-कीम्स तथा पूर्व सांसद राज्यसभा और लोकसभा(कंधमाल) पिछले लगभग ३० सालों से न कभी थकते हैं, न ही कभी आराम करते हैं। प्रतिदिन १८-१८ घण्टे काम (शिक्षा, स्वास्थ्य, खेलकूद, समाजसेवा तथा लोकसेवा आदि) करते रहते हैं। हंसमुख, सहृय, मृदुभाषी, अति सरल और सहज स्वभाव के प्रोफेसर अच्युत सामंत का व्यक्तिगत जीवन एक खुली किताब है जिसे कोई भी सहजता के साथ पढ़ सकता है। सच कहा जाय तो उनके व्यक्तिगत जीवन- रुपी- किताब का प्रत्येक पन्ना करुणा, दया, सहयोग, सहानुभूति और ऑर्ट ऑफ गिविंग का पावन संदेश देता है।

वे अपने द्वारा स्थापित कीट-कीस के बच्चों को देश का एक चरित्रवान, जिम्मेवार,कर्तव्यनिष्ठ तथा ईमानदार नागरिक बनाते हैं। इसीलिए कीस आज दुनिया की एकमात्र ऐसी शैक्षिक संस्था बन चुकी है जहां पर सिर्फ सच्चरित्र और देशहित के लिए जिम्मेदार नागरिक ही तैयार होते हैं। सच कहा जाय तो चरित्रवान मानव-निर्माण करनेवाली एकमात्र शैक्षिक संस्था कीस है जिसे प्रोफेसर अच्युत सामंत ने बड़े शोक से और करुणा का बीज डालकर तैयार किया है। लगभग ५९ वर्षों से प्रो.अच्युत सामंत का विदेह जीवन सत्य, अहिंसा, त्याग और तपस्या की अमर गाथा बन चुका है। आदिवासी समुदाय के के लिए तो वे दानवीर कर्ण हैं। अपने गुरुकुल कीस के आदिवासी बच्चों के जीवन के वे सच्चे पथप्रदर्शक हैं। वे निष्काम भाव से नर सेवा को नारायण सेवा मानकर करते हैं। वे सभी के लिए आलोकपुरुष हैं। वे महात्मा हैं, संत हैं, संन्यासी हैं। उनका पारदर्शी व्यक्तित्व आदर्श, अनुकरणीय और वंदनीय है। वे अपने अच्छे कार्यों की छाप दूसरों पर अमिट रुप से छोड़ देते हैं। वे अपनी सेवा-धुन के भी पक्के हैं। वे हमेशा यह कहते हैं कि सच कह देना ही सत्य नहीं है और झूठ कह देना ही झूठ नहीं है। जिससे लोगों का सबसे अधिक हित हो वह वाणी सत्य है और जिस वाणी से सबसे अधिक दुख और कष्ट पहुंचे वह झूठ है। इस प्रकार महान् शिक्षाविद् प्रो. अच्युत सामंत न कभी थकते हैं, न ही कभी आराम ही करते हैं।

-अशोक पाण्डेय

India UK: ब्रिटिश PM आने वाले हैं मुंबई, ट्रेड डील के बाद पहली यात्रा

विदेश मंत्रालय (MEA) ने घोषणा की है कि यूनाइटेड किंगडम के प्रधानमंत्री कीर स्टारमर, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निमंत्रण पर ८-९ अक्टूबर, २०२५ को भारत की अपनी पहली आधिकारिक यात्रा करेंगे। इस दो दिवसीय यात्रा के दौरान, नेताओं द्वारा 'विज़न २०३५' रोडमैप के तहत भारत-यूके व्यापक रणनीतिक साझेदारी में प्रगति की समीक्षा करने की उम्मीद है। यह एक १०-वर्षीय योजना है जिसमें व्यापार और निवेश, प्रौद्योगिकी और नवाचार, रक्षा और सुरक्षा, जलवायु और ऊर्जा, स्वास्थ्य, शिक्षा और लोगों के बीच संबंधों को शामिल किया गया है।

९ अक्टूबर को मुंबई में, मोदी और स्टार्मर व्यापार और उद्योग जगत के दिग्गजों से मिलेंगे और द्विपक्षीय आर्थिक साझेदारी के एक प्रमुख स्तंभ, भारत-ब्रिटेन व्यापक आर्थिक और व्यापार समझौते (सीईटीए) के तहत अवसरों का पता लगाएंगे। दोनों नेता महत्वपूर्ण क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर भी विचारों का आदान-प्रदान करेंगे। दोनों प्रधानमंत्री मुंबई में ग्लोबल फिनटेक फेस्ट के छठे संस्करण में भाग लेंगे, मुख्य भाषण देंगे तथा नीति निर्माताओं, नवप्रवर्तकों और उद्योग विशेषज्ञों के साथ विचार-विमर्श करेंगे। यह यात्रा जुलाई २०२५ में मोदी की यूके यात्रा के बाद हो रही है और इसे आर्थिक, तकनीकी और रणनीतिक क्षेत्रों में भारत-यूके संबंधों को और मजबूत करने के अवसर के रूप में देखा जा रहा है, जो एक दूरंदेशी साझेदारी के लिए उनके साझा दृष्टिकोण की पुष्टि करता है।

दार्जिलिंग में भारी बारिश-भूस्खलन का कहर, पुल टूटा-रास्ते बंद

मूसलाधार बारिश और भूस्खलन के कारण दार्जिलिंग में सात लोगों की दुखद मौत हुई, जिससे सिलीगुड़ी-दार्जिलिंग संपर्क बाधित हो गया और बचाव कार्य प्रभावित हुए। स्थानीय सांसद ने स्थिति पर चिंता व्यक्त की है, जबकि मौसम विभाग ने अलीपुरद्वार के लिए रेड अलर्ट और दार्जिलिंग सहित कई जिलों के लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले में रविवार को भारी बारिश के कारण हुए भूस्खलन और बाढ़ जैसी स्थिति ने बड़े पैमाने पर तबाही मचाई है, जिसमें कम से कम सात लोगों की मौत हो गई है। अत्यधिक बारिश के कारण दुधिया लोहे के पुल का एक हिस्सा ढह गया। यह पुल सिलीगुड़ी और मिरिक को जोड़ता था। पुल ढहने के परिणामस्वरूप, सिलीगुड़ी-दार्जिलिंग एसएच-१२ सड़क पर वाहनों की आवाजाही पूरी तरह से ठप हो गई है।

दार्जिलिंग के सांसद और भाजपा नेता राजू बिष्ट ने इस घटना पर दुख व्यक्त किया। उन्होंने एक्स पर लिखा कि उन्हें दार्जिलिंग और कलिम्पोंग जिलों के कई हिस्सों में अत्यधिक भारी बारिश के कारण हुए भारी नुकसान के बारे में जानकर बेहद दुख हुआ है। मौतें हुई हैं, संपत्ति का नुकसान हुआ है और बुनियादी ढांचे को नुकसान पहुंचा है। उन्होंने यह भी बताया कि वह स्थिति का जायजा ले रहे हैं और संबंधित अधिकारियों के संपर्क में हैं।

भारतीय मौसम विभाग ने क्षेत्र के लिए गंभीर मौसम चेतावनी जारी की है। विभाग ने अलीपुरद्वार के लिए रेड अलर्ट जारी है, जबकि कूचबिहार, दार्जिलिंग, कलिम्पोंग और जलपाईगुड़ी के लिए भारी बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। इससे पहले, विभाग ने शनिवार को उप-हिमालयी जिले के साथ-साथ कलिम्पोंग, कूचबिहार, जलपाईगुड़ी और अलीपुरद्वार के लिए रेड अलर्ट जारी किया गया था।

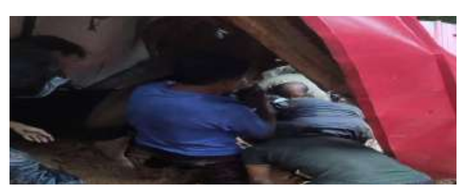

कृत्रिम वर्षा को मंजूरी, दिल्ली सरकार व आईआईटी कानपुर के बीच समझौता

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में प्रदूषण की समस्या से निपटने के लिए दिल्ली सरकार ने एक अहम पहल की है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की उपस्थिति में दिल्ली सरकार और आईआईटी कानपुर के बीच शुक्रवार को क्लाउड सीडिंग आधारित कृत्रिम वर्षा हेतु समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए। इस परियोजना के अंतर्गत अक्टूबर से नवंबर माह के बीच पायलट स्तर पर कृत्रिम वर्षा कराने का प्रयास किया जाएगा। इसके लिए नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने आवश्यक अनुमति प्रदान कर दी है।

मुख्य बिंदु

प्रारम्भिक चरण में पाँच उड़ानों (सॉर्टीज़) के माध्यम से वर्षा कराने का प्रयास किया जाएगा।

सभी उड़ानें हिंडन वायुसेना अड्डे से संचालित होंगी तथा उत्तर और उत्तर-पश्चिमी दिल्ली के क्षेत्रों को प्राथमिकता दी जाएगी।

परियोजना पर अनुमानित व्यय लगभग साढ़े तीन करोड़ रुपये होगा।

इस योजना का वैज्ञानिक क्रियान्वयन व निगरानी आईआईटी कानपुर द्वारा की जाएगी।

उद्देश्य है वायु में विद्यमान सूक्ष्म कणों (PM2.5 और PM10) को कृत्रिम वर्षा के माध्यम से नीचे गिराकर प्रदूषण को घटाना। विशेषज्ञों का मानना है कि कृत्रिम वर्षा की सफलता पूर्णतया मौसम की स्थिति और बादलों की उपलब्धता पर निर्भर करेगी। यह कदम प्रदूषण से केवल तात्कालिक राहत दिला सकता है; प्रदूषण के मूल स्रोतों–जैसे वाहन, उद्योग और निर्माण कार्य–पर नियंत्रण अनिवार्य रहेगा।

दिल्ली सरकार का कहना है कि प्रदूषण नियंत्रण की दीर्घकालिक रणनीति के साथ-साथ यह पहल नागरिकों को आगामी शीतकालीन मौसम में स्वच्छ हवा उपलब्ध कराने की दिशा में 'एक प्रयोगात्मक लेकिन महत्त्वपूर्ण कदम' है।

श्रीसीम यौन शोषण केस- चैतन्यानंद आगरा से गिरफ्तार:१७ छात्राओं ने शिकायत दर्ज कराई थी

दिल्ली के वसंत कुंज स्थित श्री शारदा इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन मैनेजमेंट-रिसर्च के हेड स्वामी चैतन्यानंद सरस्वती उर्फ पार्थसारथी को दिल्ली पुलिस ने शनिवार देर रात आगरा से गिरफ्तार किया। चैतन्यानंद पर कई छात्राओं के यौन उत्पीड़न का गंभीर आरोप लगा है। चैतन्यानंद फरार था और उसकी आखिरी लोकेशन आगरा में मिली थी। दिल्ली पुलिस की कई टीमें लगातार छापेमारी कर रही थी। चैतन्यानंद को वसंत कुंज पुलिस स्टेशन लाया गया है, जहां पूछताछ जारी है। पुलिस के मुताबिक, आरोपी छात्राओं को धमकाकर, अश्लील मैसेज भेजकर और विदेश यात्रा का लालच देकर अपने जाल में फंसाता था। उसने कई बार स्टूडेंट को देर रात कमरे में बुलाया और कम ग्रेड देने की धमकी दी। जांच के दौरान बरामद वॉट्सएप मैसेज में सामने आया था कि चैतन्यानंद छात्राओं को 'बेबी', 'आई लव यू', 'आई अडोर यू' जैसे मैसेज भेजता था। इसके साथ ही उनके बालों और कपड़ों की भी तारीफ करता था। पुलिस की जांच में ये भी सामने आया कि तीन महिला वार्डन और फैकल्टी भी आरोपी की मदद करती थीं। वे छात्राओं पर दबाव डालकर चैट्स डिलीट करवाती और उन्हें चुप रहने के लिए कहती थीं। आरोपी ने आर्थिक रूप से कमजोर छात्राओं को निशाना बनाया

आरोपी ने ईडब्ल्यूएस कोटे की छात्राओं को टारगेट किया क्योंकि वे आर्थिक रूप से कमजोर थीं और स्कॉलरशिप पर पढ़ रही थीं। पुलिस ने बताया, ३२ छात्राओं से पूछताछ हुई, जिनमें से १७ ने सीधे यौन उत्पीड़न व मानसिक प्रताड़ना की शिकायत दर्ज कराई। अब तक १६ छात्राएं मजिस्ट्रेट के सामने बयान दर्ज करा चुकी हैं। यह भी खुलासा हुआ कि कुछ छात्राओं को आरोपी की ओर से विदेश टूर का झांसा भी दिया गया था। पुलिस की जांच में सामने आया था कि चैतन्यानंद ने छात्राओं को डराने-धमकाने और लालच देने की रणनीति अपनाई। वह अक्सर अश्लील मैसेज भेजता था। उसके मैसेज में लिखा होता- मेरे कमरे में आओ, मैं तुम्हें विदेश ले जाऊंगा, तुम्हें कुछ खर्च नहीं करना होगा, अगर मेरी बात नहीं मानी तो तुम्हें परीक्षा में फेल कर दूंगा। आरोपी रात में छात्राओं को अपने कमरे में बुलाता और मना करने पर उन्हें कम ग्रेड देने की धमकी देता।

स्वामी चैतन्यानंद सरस्वती के खिलाफ पहले से भी कई आपराधिक मामले दर्ज हैं। २००९ में उसके खिलाफ दिल्ली के डिफेंस कॉलोनी में धोखाधड़ी और छेड़छाड़ का एक मामला दर्ज किया गया था। २०१६ में वसंत कुंज में एक महिला ने उसके खिलाफ छेड़छाड़ का मामला दर्ज कराया था। हालांकि चैतन्यानंद के निजी जीवन से जुड़ी ज्यादा जानकारी अभी सामने नहीं आई है।

'मैं जल्लाद हूँ बाबू' लड़के को पीठ पर लादते हुए खूनी आँखों से मेरी ओर देख कर लड़खड़ाती आवाज़ में उसने कहा-'मैं कुछ रुपयों का सरकारी गुलाम हूँ। मैं सरकार की इच्छानुसार लोगों को बेंत लगाता हूँ तो प्रति प्रहार कुछ पैसे पाता हूँ और प्राण लेता हूँ तो प्रति प्राण कुछ रुपये।' 'फाँसी की सजा पाने वालों से तो नहीं, बेंत खाने वालों से सुविधानुसार मैं रिश्वत भी खाता हूँ। सरकार की तलब से मैंने तो बाबू यही देखा है- बहुत कम सरकारी नौकरों की गुजर हो सकती है। इसी से सभी अपने-अपने इलाकों में ऊपरी कमाई के 'कर' फैलाए रहते हैं। मैं गरीब छोटा सा गुलाम हूँ, मेरी रिश्वत की चर्चा तो वैसी चमकीली है भी नहीं कि किसी के आगे कहने में मुझे कोई भय हो। मैं तो सबसे कहता हूँ कि कोई मुझे ...

जल्लाद

प्रातः आठ साढ़े आठ बजे का समय था। रात को किसी पारसी कम्पनी का कोई रद्दी तमाशा अपने पैसे वसूल करने के लिए दो बजे तक झख मार-मार कर देखते रहने के कारण सुबह नींद कुछ विलम्ब से टूटी। इसी से उस दिन हवाखोरी के लिए निकलने में कुछ देर हो गई थी और लौटने में भी। मैं वायु सेवन के लिए अपने घर से कोई चार मील की दूरी तक रोज ही आया-जाया करता था। मेरे घर और उस रास्ते के बीच में हमारे शहर का जिला जेल भी पड़ता था, जिसकी मटमैली, लम्बी-चौड़ी और उदास चहारदीवारियाँ रोज मेरी आँखों के आगे पड़ती और मेरे मन में एक प्रकार की अप्रिय और भयावनी सिहर पैदा किया करती थी।

मगर उस दिन उसी जेल के दक्षिणी कोने पर अनेक घने और विस्तृत वृक्षों की अनुज्ज्वल छाया में मैंने जो कुछ देखा, उसे मैं बहुत दिनों तक चेष्टा करने पर भी शायद न भूल सकूँगा। मैंने देखा कि मुश्किल से तेरह-चौदह वर्ष का कोई रूखा पर सुन्दर लड़का, एक पेड़ की जड़ के पास अर्धनग्नावस्था में पड़ा तड़प रहा है और हिचक-हिचक कर बिलख रहा है। उसी लड़के के सामने एक कोई परम भयानक पुरुष असुन्दर भाव से खड़ा हुआ, रूखे शब्दों में उससे कुछ पूछ-ताछ कर रहा था। यह सब मैंने उस छोटी सड़क पर से देखा, जो उस स्थान से कोई पचीस-तीस गज की दूरी पर थी। यद्यपि दिन की बाढ़ के साथ-साथ तपन की गरमी भी बढ़ रही थी और यद्यपि मैं थका और अनमना सा भी था, पर मेरे मन की उत्सुकता उस दयनीय दृश्य का भेद जानने को मचल उठी। मैं धीरे-धीरे उन दोनों की नज़र बचाता हुआ उनकी तरफ बढ़ा।

अब मुझे ज्ञात हुआ कि लड़का क्यों बिलख रहा था। मैंने देखा, उसके शरीर के मध्य-भाग पर, जो खुला हुआ था, प्रहार के अनेक काले और भयावने चिह्न थे। उसको बेंत लगाए गए थे। उस कोमल-मति गरीब बालक को अदालत की आज्ञा से। मेरा दिल धक् से होकर रह गया। न्याय ऐसा अहृदय, ऐसा क्रूर होता है? अब मैं आड़ में लुक कर उस तमाशे को न देख सका। झट मैं उन दोनों के सामने आ खड़ा हुआ और उस भयानक प्राणी से प्रश्न करने लगा-क्या इसको बेंत लगाए गए हैं? हाँ, उत्तर देने से अधिक गुर्रा कर उस व्यक्ति ने कहा-देखते नहीं हैं आप? ससुरे ने जमींदार के बाग से दो कटहल चुराए थे।

लड़का फिर पीड़ा और अपमान से बिलबिला उठा। इस समय वह छाती के बल पड़ा हुआ था, क्योंकि उसके घाव उसे आराम से बेहोश भी नहीं होने देना चाहते थे। वह एक बार तड़पा और दाहिनी करवट होकर मेरी ओर देखने की कोशिश करने लगा। पर अभागा वैसा न कर सका। लाचार फिर पहले ही सा लेट कर अवरुद्ध कण्ठ से कहने लगा-नहीं बाबू, चुरा कहाँ सका? भूख से व्याकुल होकर लोभ में पड़ कर मैं उन्हें चुरा जरूर रहा था, पर जमींदार के रखवालों ने मुझे तुरन्त ही गिरफ़्तार कर लिया। 'गिरफ़्तार कर लिया तो तेरे घर वाले उस वक्त कहाँ थे? 'नीरस और शासन के स्वर में उस भयानक पुरुष ने उससे पूछा- 'क्या वे मर गए थे? तुझे बचाने-जमींदार से, पुलीस से, बेंत से-क्यों नहीं आए?'

'तुम विश्वास ही नहीं करते?' लड़के ने रोते-रोते उत्तर दिया-'मैंने कहा नहीं, मैं विक्रमपुर गाँव का एक अनाथ भिखमंगा बालक हूँ। मेरे माता-पिता मुझे छोड़ कर कब और कहाँ चले गए, मुझे मालूम नहीं। वे थे भी या नहीं, मैं नहीं जानता। छुटपन से अब तक दूसरों की जूठन और फटकारों में पला हूँ। मेरे अगर कोई होता तो मैं उस गाँव के जमींदार का चोर क्यों बनता? मेरी यह दुर्गति क्यों होती?...आह...बाप रे... बाप...।' वह गरीब फिर अपनी पुकारों से मेरे कलेजे को बेधने लगा। मैं मन ही मन सोचने लगा कि किस रूप से मैं इस बेचारे की कोई सहायता करूँ। मगर उसी समय मेरी दृष्टि उस भयानक पुरुष पर पड़ी, जो जरा तेजी से उस लड़के की

ओर बढ़ रहा था। उसने हाथ पकड़ कर अपना बल देकर उसको खड़ा किया। 'तू मेरी पीठ पर सवार हो जा।' उसी रूखे स्वर में उसने कहा-'मैं तुझे अपने घर ले चलूँगा।'

'अपने घर?' मैंने विवश भाव से उस रूखे राक्षस से पूछा-- 'तुम कौन हो? कहाँ है तुम्हारा घर?...और इसको अब वहाँ क्यों लिए जाते हो?' 'मैं जल्लाद हूँ बाबू' लड़के को पीठ पर लादते हुए खूनी आँखों से मेरी ओर देख कर लड़खड़ाती आवाज़ में उसने कहा-'मैं कुछ रुपयों का सरकारी गुलाम हूँ। मैं सरकार की इच्छानुसार लोगों को बेंत लगाता हूँ तो प्रति प्रहार कुछ पैसे पाता हूँ और प्राण लेता हूँ तो प्रति प्राण कुछ रुपये।' 'फाँसी की सजा पाने वालों से तो नहीं, बेंत खाने वालों से सुविधानुसार मैं रिश्वत भी खाता हूँ। सरकार की तलब से मैंने तो बाबू यही देखा है- बहुत कम सरकारी नौकरों की गुजर हो सकती है। इसी से सभी अपने-अपने इलाकों में ऊपरी कमाई के 'कर' फैलाए रहते हैं। मैं गरीब छोटा सा गुलाम हूँ, मेरी रिश्वत की चर्चा तो वैसी चमकीली है भी नहीं कि किसी के आगे कहने में मुझे कोई भय हो। मैं तो सबसे कहता हूँ कि कोई मुझे पूजे तो मैं उसके सगे-सम्बन्धियों को 'सुच्चे' बेंत न लगा कर 'हलके' लगाऊँ। और नहीं...तो सड़ासड़...सड़ासड़...।

उसने ऐसी मुद्रा बना ली जैसे किसी को बेंत लगा रहा हो। वह भूल गया कि उसकी पीठ पर उसकी 'सड़ासड़' का एक गरीब शिकार काँप रहा है। 'मगर इस अनाथ को 'सुच्चे' बेंत लगा कर मैंने ठीक काम नहीं किया। इसने जेल में ही बताया था कि मेरे कोई नहीं है। मगर मैंने विश्वास नहीं किया। मैं अपने जिस शिकार का विश्वास नहीं करता, उसके प्रति भयानक हो उठता हूँ, और मेरा भयानक होना कैसा वीभत्स होता है, इसे आप इस लड़के की पीठ पर देखें। मगर इसे काट कर मैंने गलती की। यही न जाने क्यों मेरा मन कह रहा है। 'इसी से बाबू मैं इसे अपने घर ले जा रहा हूँ, वहाँ इसके घाव पर केले का रस लगाऊँगा और इसको थोड़ा आराम देने के लिए 'दारू' पिलाऊँगा, बिना इसको चंगा किए मेरा मन सन्तुष्ट न होगा, यह मैं खूब जानता हूँ।' भैंसे की तरह अपनी कठोर और रूखी पीठ पर उस अनाथ अपराधी को लाद कर वह एक ओर बढ़ चला। मगर मैंने उसे बाधा दी-

'सुनो तो, मुझसे भी यह एक रुपया लेते जाओ। मुझको भी इस लड़के की दुर्दशा पर दया आती है।' 'क्या होगा रुपया बाबू? भयानकता से मुस्करा कर उसने रुपये की ओर देखा और उसको मेरी उँगलियों से छीन कर अपनी उंगलियों में ले लिया।' 'उसको दारू पिलाना, पीड़ा कम हो जाएगी। अभी एक ही रुपया जेब में था, मैं शाम को इसके लिए कुछ और देना चाहता हूँ। तुम्हारा घर कहाँ है? नाम क्या है?' 'मैं शहर के पूरब उस कबरिस्तान के पास के डोमाने में रहता हूँ, डोमों का चौधरी हूँ, मेरा नाम रामरूप है। पूछ लीजिएगा।'

उस अनाथ लड़के का नाम 'अलियार' था, यह मुझे उस घटना के सातवें या आठवें दिन मालूम हुआ। ग्रामीणों में अलियार शब्द 'कूड़ा-कर्कट' के पर्याय रूप में प्रचलित है। उस लड़के ने मुझे बताया। उसके गाँव वालों का कहना है कि उसे पहले-पहल गाँव के एक 'भर' ने अलियार पर पड़ा पाया था। उसी ने कई वर्षों तक उसे पाला भी और उसका उक्त नामकरण भी किया। अलियार के अंग पर के बेंतों के घाव, बधिक रामरूप के सफल उपायों से तीन-चार दिनों के भीतर ही सूख चले, मगर वह बालक बड़ा दुर्बल-तन और दुर्बल-हृदय था।

सम्भव है, उसको बारह बेंतों की सजा सुनाने वाले मजिस्ट्रेट ने, पुलिस की मायामयी डायरियों पर विश्वास कर, उसकी उम्र अठारह या बीस वर्ष मान ली हो, मगर मेरी नज़रों में तो वह बेचारा चौदह-पन्द्रह वर्षों से अधिक वयस का नहीं मालूम पड़ा। तिस पर उसकी यह रूखी-सूखी काया, आश्चर्य, किसी डाक्टर ने किस तरह उसको बेंत खाने योग्य घोषित किया होगा। जेल के किसी जिम्मेदार और शरीफ अधिकारी ने किस तरह अपने सामने उस बेचारे को बेंतों से कटवाया होगा।

जब तक अलियार खाट पर पड़ा-पड़ा कराहता रहा, अपने उसे बेंत खाने के भयानक अनुभव का स्वप्न देख-देख कर अपनी रक्षा के लिए करुण दुहाइयाँ देता रहा, तब तक मैं बराबर, एक बार रोज, रामरूप की गन्दी झोपड़ी में जाता था और अपनी शक्ति के अनुसार प्रभु के उस असहाय प्राणी की मन और धन से सेवा करता था, मगर मेरे इस अनुराग में एक आकर्षण था और यह था जल्लाद रामरूप। न जाने क्यों उसका यह 'अलकतरा' रंग, उसकी भयानक नैपालियों-सी नाटी काया, उसका वह मोटा, वीभत्स अधर और पतला ओंठ, जिस पर घनी काली, भयावनी तथा अव्यवस्थित मूँछों का भार अशोभायमान था, मुझे कुछ अपूर्ण सा मालूम पड़ता था। न जाने क्यों उसकी बड़ी-बड़ी, डोरीली, नीरस और रक्तपूर्ण आँखें मेरे मन में एक तरह की सिहर सी पैदा कर देती थीं। पर आश्चर्य, इतने पर भी मैं उसे अधिक से अधिक देखना और समझना चाहता था। उसकी मिट्टी की झोपड़ी में उसके अलावा उसकी प्रौढ़ा स्त्री भी थी। एक दिन जब मैंने रामरूप से उसकी जीवनी पूछी और यह पूछा कि उसके परिवार का कोई और भी कहीं है या नहीं, तो उसने अपनी विचित्र कहानी मुझे सुनाई।

'बाबू' उसने बताया-'पुश्त दो पुश्त से नहीं, मेरे खानदान में तेरह पुश्तों से यही जल्लादी का काम होता है। हाँ, उसके पहले मुसलमानी राज में मेरे पुरखे डाके डाला करते थे। मेरे दादा के दादा ऐसे प्रतापी थे कि सन् ५७ के गदर में उन्होंने इसी शहर के उस दक्षिणी मैदान में सरकार बहादुर के हुकुम से पाँच सौ और तीन पचीस और दो दस आदमियों को चन्द दिनों के भीतर ही फाँसी पर लटका दिया था। उन दिनों वह आठों पहर शराब छाने रहा करते थे। ...और कैसी शराब? मामूली नहीं बाबू, गोरों के पीने वाली-अंगरेजी।'

मैंने उसे टोका-रामरूप, क्या अब भी फाँसी देने से पूर्व तुम लोगों को शराब मिलती है?

'हाँ, हाँ, मिलती क्यों नहीं बाबू, मगर देसी की एक बोतल का दाम मिलता है, विलायती का नहीं, जिसको छान-छान कर मेरे दादा के दादा गाहियों के गाही लोगों को काल के पालने पर सुला देते थे। यही मेरे खानदान में सबसे अधिक धनी और जबरदस्त भी थे। लम्बे-चौड़े तो वह ऐसे थे कि बड़े-बड़े पलटनिये साहब उनका मुँह बकर-बकर ताका करते थे। मगर उनमें एक दोष भी बहुत बड़ा था। वह शराब बहुत पीते थे। इसी में वह तबाह हो गए और मरते-मरते गदर की सारी कमाई फूँक-ताप गए। हाँ, मैं भूल कर गया बाबू, वह मरे नहीं, बल्कि शराब के नशे में एक दिन बड़ी नदी में कूद पड़े और तब से लापता हो गए। नदी के उस ऊँचे घाट पर हमारे दादा ने उनका 'चौरा' भी वनवाया है, जिसकी सैकड़ों डोम पूजा किया करते हैं और हमारे वंश के तो वह 'वीर' ही हैं।'

अपने वीर परदादा के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए, उनकी कहानी समाप्त करते-करते रामरूप ने धीरे से अपने कान उमेठे। 'रामरूप', मैंने कहा-'जाने दो अपने पुरखों की कहानी। वह बड़ी ही भयानक है। अब तुम यह बताओ

मगर संयोग को कौन टाल सकता है? जिस दिन अलियार को दुनिया के उस पार फेंक देने का निश्चय हो गया था, उससे एक दिन पूर्व मैंने उसको अन्तिम बार पुनः देखा। हाथ में एक हाँडी लिए परम उत्तेजित भाव से वह शहर की एक चौमुहानी पर खड़ा था और उसको घेरे हुए लड़कों, युवकों और बेकारों की एक भीड़ खड़ी थी। अजीब-अजीब प्रश्न लोग उस पर बरसा रहे थे और वह उनके रोमांचकारी उत्तर दे रहा था। किसी ने पूछा-'तुम कौन हो भाई...' 'मैं?' वह मुस्कराया- 'मैं महापुरुष हूँ। आह, पर अफसोस, तुम नहीं जानते कि मैं महापुरुष क्यों हो सकता हूँ, क्योंकि मैं तो खानदानी जल्लाद रामरूप हूँ। पर अफसोस, तुम नहीं जानते कि प्रत्येक जल्लाद महापुरुष होता है।' 'अच्छा यार,'एक ने कहा- 'हमने मान लिया कि तुम महापुरुष हो। पर यह तो बताओ कि आज यहाँ' इस तरह क्यों खड़े हो?' 'यह हाँडी,' उसने हाँडी का मुँह भीड़ के सामने किया- इसमें फाँसी की रस्सी है जरूर, यह असली नहीं है। असली रस्सी तो दुरुस्त करके आज ही जेल में ऐसे ही एक बरतन में रख आया हूँ। वह रस्सी इससे कहीं सुन्दर, कहीं मजबूत है। इसको तो केवल अभ्यास के लिए अपने साथ लेता आया हूँ।

कि तुम्हारे कोई बच्ची-बच्चा भी है?'

'नहीं बाबू', किंचित गम्भीर होकर उसने कहा-'मेरी औरतिया को, कोई सात बरस हुए-एक लड़का हुआ ज़रूर था, मगर वह दो साल का होकर जाता रहा। बच्चे तो वैसे भी मेरे खानदान में बहुत कम जीते हैं। न जाने क्यों, जहाँ तक मुझे मालूम है, मेरे किसी भी पुरखे का एक से ज्यादा बच्चा नहीं बचा। मुझको तो वह भी नसीब नहीं। मेरी लुगैया तो अब बूढ़ी हो जाने पर भी बच्चा-बच्चा रिरियाती रहती है। मगर यह मेरे बस की बात तो है नहीं। मैं तो आप ही चाहता हूँ कि मेरे एक वीर बच्चा हो, जो हमारे इस पुश्तैनी रोजगार को मेरे बाद संभाले, पर जब दाता देता ही नहीं तब कोई क्या करे?'

'जब तक तुम्हारे और कोई नहीं है' मैंने उस जल्लाद के हृदय की थाह ली-'तब तक तुम इसी भिखमंगे को क्यों नहीं पालते-पोसते? तुमने कुछ अन्दाज लगाया है? कैसा है उसका मिजाज? यह तुम्हारे यहाँ खप जाने लायक है?'

'है तो, और मेरी लुगइया उसको चाहती भी है।' रामरूप ने ज़रा मुस्करा कर कहा-'पर मेरे अन्दाज से वह अलियार कुछ दब्बू और डर्रू है। और मेरे लड़के को तो ऐसा निडर होना चाहिए कि जरूरत पड़े तो बिना डरे काल की भी खाल खींच ले और जान निकाल ले। यह मंगन छोकरा भला मेरे रोजगार को क्या सँभालेगा?'

'कोई दूसरा रोजगार देखो रामरूप', मैंने कहा-'छोड़ो इस हत्यारे व्यापार को, इसमें भला तुम्हें क्या आनन्द मिलता होगा। ग़ज़ब की है तुम्हारी छाती, जो तुम लोगों को प्रसन्न भाव से बेंत लगाते हो और फाँसी के तख्ते पर चढ़ा कर अपने परदादा के शब्दों में काल के पालने में सुला देते हो, मगर यह सुन्दर नही।' 'हा, हा, हा, हा' रामरूप ठठाया- 'आप कहते हैं यह सुन्दर नहीं। नहीं बाबू, हमारे लिए यह परम सुन्दर है। आप जानते ही हैं कि मैं आप लोगों की 'नीच जाति' का एक तुच्छ प्राणी हूँ। आप तो नए ख़याल के आदमी हैं, इसलिए न जाने क्या समझ कर इस लड़के के प्रेम में मेरी झोपड़ी तक आए भी हैं, नहीं तो मैं और मेरी जाति इस इज्जत के योग्य कहाँ?

मेरे घर वाले जल्लादी न करते, तो आप लोगों के मैले साफ करते और कुत्तों को मारते। मगर-हा, हा, हा, हा- कुत्तों को मारने से तो आदमी मारना कहीं अच्छा है, इसे आप भी मानेंगे, यद्यपि मेरी समझ से कुत्ता मारना और आदमी मारना, जल्लाद के लिए एक ही बात है। हमारे लिए वे भी अपरिचित और निरपराध और ये भी। दूसरों के कहने पर हम कुत्तों को भी मारते हैं और कुत्तों से ज्यादा समझदारों-आदमियों- को भी।'

इसके बाद मुझे एक काम के सिलसिले में बम्बई जाना पड़ा और वहीं पूरे दो महीने रुकना पड़ा। लौटने पर भूल गया उस जल्लाद को और परिचित उस अलियार को। प्रायः दो बरस तक उनकी कोई खबर न ली। फुर्सत भी अपनी मानविक हाय-हायों से, इतनी न थी कि उनकी ओर ध्यान देता।

मगर उस दिन अचानक अलियार दिखाई पड़ा, और मैंने नहीं, उसी ने मुझको पहचाना भी। मुझे इस बार वह कुछ अधिक स्वस्थ, प्रसन्न और सुन्दर मालूम पड़ा।

'कहां रहते हो आजकल अलियार?' मैंने दरियाफ्त किया, 'और वह अद्भुत मित्र कैसे हैं, जिनको तुम शायद सपने में भी न भूल सकते होगे।'

'वह मजे में है,' उसने उत्तर दिया- 'और मैं तभी से उसी के साथ रहता हूँ। तभी से उसकी वह स्त्री मुझको अपने बेटे की तरह मानती और पालती है।'

'तो क्या अब तुम भी वही व्यापार सीख रहे हो और रामरूप की गद्दी के हकदार बनने के यत्न में हो?'

'मुझे स्वयं तो पसन्द नहीं है उसका वह हत्या-व्यापार, मगर उसकी रोटी खाता हूँ तो बातें भी माननी पड़ती हैं। वह अब अक्सर मुझे फाँसी या बेंत लगाने के वक्त अपने साथ जेल में ले जाता है और अपने निर्दय व्यापार को बार-बार मुझे दिखा कर अपना ही सा बनाना चाहता है।'

'तुम जेल में जाने कैसे पाते हो?' मैंने पूछा-'वहाँ तो बिना अफसरों की आज्ञा के कोई भी जाने नहीं पाता है। फिर खास कर बेंत मारने और फाँसी के वक्त तो और भी बाहरी लोगों की मनाही रहती है।'

'मगर' उसने उत्तर दिया- 'अब तो मैं उसे मामा कह कर पुकारता हूँ और वह मुझे

बहिन का लड़का और अपना गोद लिया हुआ बेटा कहकर अफसरों के आगे पेश करता है। कहता है, हमारे खानदान के सभी लड़कों ने इसी तरह देख-देख कर इस विद्या का अभ्यास किया था।' 'तो तुम भी अब,' मैंने एक उदास साँस ली-'जल्लाद बनने की धुन में हो? वही जल्लाद, जिसके अस्तित्व के कारण उस दिन जेल के उस कोने में पड़े तुम तड़प रहे थे और अपने भावी मामा की ओर देख-देख कर उसकी क्रूरता को कोस रहे थे। बाप रे... तुम उस भयानक रामरूप को प्यार करते हो- कर सकते हो?'

मेरे इस प्रश्न पर कुछ देर तक अलियार चुप और गम्भीर रहा। फिर बोला- 'नहीं बाबू जी मैं उस पशु को कदापि नहीं प्यार करता, बलिक आपसे सच कहता हूँ, उससे घृणा करता हूँ। जब-जब मेरी नजर उस पर पड़ती है, तब-तब मैं उसे उसी रूप में देखता हूँ, जिस रूप में उस दिन देखा था, जिसकी आप अभी चर्चा कर रहे थे। पर मैं उसकी स्त्री का आदर करता हूँ, जो हत्यारे की औरत होने पर भी हत्यारिणी नहीं, माँ है। बस उसी कारण मैं वहाँ रुका हूँ, नहीं तो मेरा बस चले तो मैं उस रामरूप को एक ही दिन इस पृथ्वी पर से उठा दूँ, जो लोगों की हत्या करके अपनी जीविका चलाता है। और आपसे छिपाता नहीं, मैं शीघ्र ही किसी न किसी तरह उसको इस व्यापार से अलग करूँगा, इसमें कोई सन्देह नहीं।'

'वह ऐसा कपड़ा नहीं है अलियार' मैंने कहा- 'जिस पर कोई दूसरा रंग भी चढ़ सके। रामरूप को, जहाँ तक मैंने समझा है, स्वयं भगवान भी उसके व्यापार से अलग नहीं कर सकते। दूसरे जल्लाद चाहे कुछ कच्चे अधिक हों, मगर तुम्हारा यह मामा तो जरूर ही सभी जल्लादों का दादा गुरू है। बचना तुम उससे ...और उसको उसके पथ से विरत करना नहीं सो सावधान, वह ऐसा निर्दय है कि कुछ उलटी-सीधी समझते ही तुम्हारे प्राणों तक को मसल डालेगा।'

'पर बाबू' अलियार ने सच-सच कहा-'अब तो वह भी मुझको प्यार करने लग गया है। मुझे तो कभी-कभी ऐसा ही मालूम पड़ता है। आश्चर्य से चकित हो कर कभी-कभी मेरी वह नई माँ भी ऐसा ही कहा और सोचा करती है। वह क्रुद्ध होने पर अब भी अक्सर मेरी माँ को बुरी तरह मारने लगता है, पर मेरी ओर-बड़ा से बड़ा अपराध होने पर भी - न जाने क्यों, तर्जनी उँगली तक नहीं उठाता। मुझे अपने ही साथ खिलाता भी है, और यहाँ-वहाँ-जेल में और छोटे-मोटे अफसरों के पास-ले भी जाता है। मगर इतने पर भी मैं उससे घृणा करता हूँ। उसका अमंगल और सर्वनाश चाहता हूँ।' 'क्यों...न जाने क्यों?' मैंने आश्चर्य से पूछा। उसने उत्तर दिया-'मैं उस पशु को कभी प्यार नहीं कर सकता। अच्छा बाबू, आपको भी देर हो रही है, मुझे भी। यहाँ रहा तो फिर कभी सलाम करने आ जाऊँगा। इस वक्त जाने दीजिए-सलाम।'

मुझको यह विश्वास नहीं था कि वह दुबला-पतला भिखमंगा बालक अपने निश्चय का ऐसा पक्का निकलेगा कि एक दिन सारे शहर में तहलका मचा कर छोड़ेगा पर वह विचित्र निकला। एक दिन प्रातःकाल होते ही शहर में जोरों की सनसनी फैली कि आज स्थानीय जिला-जेल से कोई बड़ा मशहूर फाँसी का कैदी भाग निकला है। यद्यपि उसके भागने के वक्त पहरेदार वार्डरों को कुछ आहट मिल गई थी, पर उससे कोई फायदा नहीं हो सका। भागने वाला तो भाग ही गया। हाँ, भगाने वालों में से एक नवयुवक पकड़ा गया है।

समाचार तो आकर्षक था, इसलिए कि फाँसी का कोई कैदी भागा था। मेरे जी में आया कि जरा जेल की ओर टहलता हुआ चलूँ। देखूँ, वहाँ शायद रामरूप या अलियार मिलें। उन दोनों में से किसी के भी मिलने से बहुत सी भीतरी बातों का पता चल सकेगा।

कपड़े पहन और टहलने की छड़ी हाथ में लेकर जब मैं जेल के पास पहुँचा तो वहाँ का हँगामा देखकर एक बार आश्चर्य में आ गया। फाटक के बाहर अपने क्वार्टरों के सामने मैदान में ड्यूटी से बचे हुए अनेक वार्डर हताश और उदास खड़े गत रात्रि की घटना पर मनोरंजक ढंग से वाद-विवाद कर रहे थे। 'भीतर बड़े साहब और कलेक्टर' एक ने दरियाफ्त किया- 'उसका बयान ले रहे हैं, गज़ब कर दिया उस लौंडे ने। ऐसे जालिम आदमी को भगा दिया, जिसे कि, अब सरकार पा ही नहीं सकती। मैंने पहले इस छोकरे को ऐसा नहीं समझा था।'

'अरे उसको छोकरा कहते हो?' दूसरे मुसलमान वार्डर ने कहा- 'साला चाहे तो बड़े-बड़ों को चरा के छोड़ दे। मगर उस पाजी की वजह से बेचारा रामरूप पिस जाएगा, क्योंकि अपना-अपना बोझ हलका हल्का करने के लिए सभी गरीब रामरूप पर टूटेंगे। उसी की वजह से वह जेल में आने-जाने और उसके भेद पाने लायक हुआ था। अब देखना है, रामरूप की डोंगी किस घाट लगती है।'

'वह भी अफसरों के सामने जेलर साहब द्वारा बुलाया गया है। शायद उसको भी बयान देना होगा।'

'नहीं', किसी गम्भीर वार्डर ने कहा-'जेल के कर्मचारियों से जब कोई गलती हो जाती है, तब अपनी सारी ताकत लगा कर वह उसे छिपाने की कोशिश करते हैं। मुझे ठीक मालूम है कि उस लड़के के सिलसिले में रामरूप का नाम लिया ही न जाय और यह साबित ही न होने दिया जाय कि वह पहले से यहाँ आता-जाता था। यह बात रामरूप को और उस लौंडे को भी समझा दी गई है।'

'मगर वह पाजी छोकरा, जिसने उस मशहूर डाकू को भगा कर हमारे सर पर आफत का पहाड़ ढा दिया है, जेलर की सलाह मानेगा ही क्यों? अगर अपने बयान में वही कुछ कह दे?'

'अजी कहेगा ज़रूर ही', किसी बूढ़े वार्डर ने राय दी- 'आखिर इस भगाई में एक खून भी तो हुआ है। माना कि खून लड़के ने नहीं, उस डाकू के किसी साथी ने किया होगा, पर अगर दूसरे न पकड़े गए तो उस वार्डर का खून तो इसी छोकरे के माथे मढ़ा जाएगा। उफ, बड़े जीवट की यह घटना हुई है। मैं तो तीस साल से इस नौकरी में हूँ। इस बीच में पचासों कैदियों के भागने की बातें मैंने सुनीं, मगर उनमें ऐसी घटना एक भी नहीं। फाँसी के कैदी का भाग जाना और भाग जाने पाना-कमाल है। अरे, इस मामले में जेल का सारा स्टाफ बदल दिया जाएगा- बड़े साहब से लेकर छोटे जमादार तक। लोग तनज़्ज़ुल होंगे, सो अलग।'

इसी समय रामरूप जेल के फाटक से बाहर आता दिखाई पड़ा। सबकी नज़र उस पर पड़ी।

'वह देखो', एक ने कहा- 'वह बाहर आया,

ओह, कैसी लाल हैं आज उसकी आँखें। कैसे उसके होंठ फड़क रहे हैं। जरा बुलाओ तो इधर। पूछा जाय कि भीतर क्या हो रहा है।' 'क्या हो रहा है रामरूप?' अपनी ओर बुलाकर वार्डरों ने उससे दरियाफ्त किया- 'क्या कलेक्टर के आगे तुम्हारा नाम भी लिया जा रहा है?'

'नहीं बाबू,' उसने दाँत किटकिटा कर कहा- 'आप लोगों की दया से मेरा नाम तो नहीं लिया जा रहा है। वह छोकरा भी इस बारे में चुप है। कुछ बोलता ही नहीं, सिवा इसके कि- हाँ, मैंने ही उस डाकू को भगा दिया है। मैंने ही मारा भी है उस वार्डर को। मेरी सहायता में और लोग भी थे, मगर मैं उन्हें इस बारे में नहीं फँसाना चाहता। मेरी सज़ा हो, मुझको फाँसी दी जाय, मैं तैयार हूँ।'

'फिर क्या होगा, रामरूप' एक ने पूछा- 'लच्छन कैसे दिखाई पड़ते हैं।'

'क्या होगा, इसे आज ही कौन बता सकता है जमादार साहब?' उसने नीरस उत्तर दिया- 'अभी तो सरकार उस डाकू और उसके साथियों को पकड़ने की कोशिश करेगी। इसके बाद उस साले भिखमंगे को फाँसी दी जाएगी, इसमें कोई सन्देह नहीं, वह पाजी जरूर फाँसी पर लटकाया जाएगा। मैं फाँसी पाने वालों की आँखें पहचान जाता हूँ और सच कहता हूँ कि भैरव बाबा की दया से मैं उस शैतान के बच्चे को मृत्यु के झूले पर टांगूँगा।'

न जाने क्या विचार कर रामरूप एकाएक उत्तेजित हो उठा- 'इन्हीं हाथों से मैंने अच्छे-अच्छे और बड़े-बड़ों को फाँसी पर टाँग दिया है। सच मानना जमादार साहब, आज तक चार बीस और सात आदमियों को लटका चुका हूँ। अब यह साला आठवाँ होगा, हाँ, हाँ, आठवाँ होगा-आठवाँ होगा।'

उत्तेजित रामरूप उस भीड़ से दूर एक ओर तेजी से बड़बड़ाता हुआ बढ़ गया। उस समय उससे कुछ पूछने की हिम्मत न हुई।

मगर आश्चर्य की बात तो यह है कि धीरे-धीरे वह क्रूर हृदय जल्लाद उस अलियार को प्यार करने लग गया था। अलियार उस दिन बिलकुल सच कह रहा था। क्योंकि सेशन अदालत से, और किसी प्रामाणिक मुजरिम के अभाव में और प्रमाणों के आधिक्य से, अलियार को फाँसी की सजा सुनाई गई, तब वही रामरूप कुछ ऐसा उत्तेजित हो उठा कि पागल सा हो गया।

'हा हा हा हा?' वह अदालत के बाहर ही निस्संकोच बड़बड़ाने लगा- 'अब लूँगा-अब बच्चू से लूँगा बदला। क्यों न लूँ बदला उससे? मैंन सरकारी हुक्म से उसको, उस दिन बेंत मारे थे, जिसका उसने मुझसे ऐसा भयानक बदला लिया है। मेरी रोजी मारते-मारते बचा। वह तो बचा ही, उस पापी ने मेरी औरत को अपने प्रेम में खाट पकड़वा दी है। अब भोगो बेटे, अब झूलो पालना बच्चू। हा हा हा हा।'

यद्यपि अलियार की फाँसी की सजा सुन कर जल्लाद अट्टहास कर उठा, पर मेरा तो कलेजा धक् से होकर रह गया। मुझको ऐसी आशा नहीं थी कि जिस कहानी का आरम्भ, उस दिन जेल के कोने में, अलियार और जल्लाद से मेरे परिचित होने से हुआ था, उसका अन्त ऐसा वीभत्स होगा। मैंने बड़े दुख के साथ, उस दिन यह निश्चय किया कि अब मैं कभी उस रामरूप के सामने न जाऊँगा।

मगर संयोग को कौन टाल सकता है? जिस दिन अलियार को दुनिया के उस पार फेंक देने का निश्चय हो गया था, उससे एक दिन पूर्व मैंने उसको अन्तिम बार पुनः देखा। हाथ में एक हाँडी लिए परम उत्तेजित भाव से वह शहर की एक चौमुहानी पर खड़ा था और उसको घेरे हुए लड़कों, युवकों और बेकारों की एक भीड़ खड़ी थी। अजीब-अजीब प्रश्न लोग उस पर बरसा रहे थे और वह उनके रोमांचकारी उत्तर दे रहा था। किसी ने पूछा- 'तुम कौन हो भाई...'

'मैं?' वह मुस्कराया- 'मैं महापुरुष हूँ। आह, पर अफसोस, तुम नहीं जानते कि मैं महापुरुष क्यों हो सकता हूँ, क्योंकि मैं तो खानदानी जल्लाद रामरूप हूँ। पर अफसोस, तुम नहीं जानते कि प्रत्येक जल्लाद महापुरुष होता है।' 'अच्छा यार,'एक ने कहा-'हमने मान लिया कि तुम महापुरुष हो। पर यह तो बताओ कि आज यहाँ' इस तरह क्यों खड़े हो?'

'यह हाँडी,' उसने हाँडी का मुँह भीड़ के सामने किया- इसमें फाँसी की रस्सी है जरूर, यह असली नहीं है। असली रस्सी तो दुरुस्त करके आज ही जेल में ऐसे ही एक बरतन में रख आया हूँ। वह रस्सी इससे कहीं सुन्दर, कहीं मजबूत है। इसको तो केवल अभ्यास के लिए अपने साथ लेता आया हूँ।

आज रात भर इन उस्ताद हाथों को फाँसी देने का अभ्यास जोर-शोर से कराऊँगा। क्योंकि इस बार मामूली आदमी को नहीं लटकाना है। इस बार उसको लटकाना है, जिसके झूलते ही कोई आश्चर्य नहीं, जो मेरी औरतिया भी इस दुनिया से कूच कर जाये, क्योंकि वह उस पापी को प्यार करती है।

किसी ने कहा-जरा अपने गले में इस रस्सी को लगा कर दिखाओ तो रामरूप कि फाँसी की गाँठ कैसे दी जाती है? 'हाँ, हाँ' उसने रस्सी को अपने गले में चारों ओर लपेट कर, गाँठ देना शुरू किया। 'यह देखो, यह गले का कण्ठ है और यह है मेरी मृत्यु-गाँठ। बस, अब केवल चबूतरे पर खड़ाकर झुला देने की कसर है। जहाँ एक झटका दिया कि बच्चू गए जग-धाम। यह देखो...यह देखो...।'

अपने गले में उस रस्सी को उसी तरह लपेटे वह उन्मत्त रामरूप हाँडी फेंक कर, भीड़ को चीरता हुआ एक ओर बेतहाशा भाग गया।

दूसरे दिन अलियार को फाँसी देने के लिए जब सशस्त्र पुलिस, मैजिस्ट्रेट, जेल-सुपरिन्टेंडेंट और अन्य अधिकारी एकत्र हुए तो मालूम हुआ कि जल्लाद रामरूप हाजिर नहीं है। पुलिस दौड़ी, जेल के वार्डर दौड़े, उसको ढूँढने के लिए। मगर वह मिल न सका। न जाने कहाँ गायब हो गया। अलियार को उस दिन फाँसी नहीं हो सकी।

मगर उसी दिन दोपहर को कुछ लोगों ने रामरूप को शहर के बाहर एक बरगद की डाल में, फाँसी पर टँगे देखा। उसकी गर्दन में वही रस्सी थी, जिसको कुछ घण्टे पूर्व शहर के अनेक लोगों ने उसके हाथ में देखा था। उस समय भी उसकी आँखें खुली, भयानक और नीरस थीं। जीभ मुँह से कोई बारह अंगुल बाहर निकल आई थी कि बड़े-बड़े हिम्मती तक उसकी ओर देख कर दहल उठते थे। ■

पांडेय शर्मा 'उग्र'

('चाँद' के फाँसी अंक से)

MONAD
UNIVERSITY
Recognized & Approved by :
UGC
UP Govt.
PCI
BCI
NCTE
AIU
आज़ादी का
अमृत महोत्सव
बेटी बचाओ
बेटी पढ़ाओ
शिक्षित महिला - सशक्त भारत
ADMISSIONS OPEN 2024-25
*Free
Education
for Girls.
COURSES OFFERED

काजल फुट वेयर
हमारे यहां सभी प्रकार के फुटवेयर उपलब्ध है
कर्जत स्टेशन के पास (वेस्ट)
स्पेशल
ऑफर के
साथ

'दादी का आँगन'

एक सुबह, रश्मि ऑफिस जाने के लिए जल्दी में थी। उसने सास से कहा– 'मम्मीजी, आप आरव को स्कूल के लिए तैयार कर दें, मैं लंच पैक कर लूँगी।' सविता देवी ने अखबा़र से नज़रें हटाए बिना कहा– 'बिटिया, मुझे तो अभी वॉक पर जाना है। तुम ही कर लो।' रश्मि के चेहरे पर नाराज़गी साफ झलक आई। 'क्या फायदा ऐसी दादी के होने का, जिन्हें अपने पोते की भी फिक्र नहीं!' उसने मन ही मन सोचा।

मुंबई की चमचमाती इमारतों के बीच एक अपार्टमेंट में रश्मि और आकाश रहते थे। दोनों नौकरीपेशा थे और दो छोटे बच्चों–आरव (७ साल) और नायरा (४ साल)–की परवरिश में लगातार व्यस्त रहते। कुछ महीने पहले आकाश की माँ, सविता देवी, गाँव छोड़कर उनके साथ रहने आई थीं। रश्मि को लगा, 'अब बच्चों की देखभाल आसान हो जाएगी। आखिर दादी आ गई हैं, बच्चे तो उनके ही पास बड़े होंगे।'

एक सुबह, रश्मि ऑफिस जाने के लिए जल्दी में थी। उसने सास से कहा– 'मम्मीजी, आप आरव को स्कूल के लिए तैयार कर दें, मैं लंच पैक कर लूँगी।' सविता देवी ने अखबा़र से नज़रें हटाए बिना कहा– 'बिटिया, मुझे तो अभी वॉक पर जाना है। तुम ही कर लो।' रश्मि के चेहरे पर नाराज़गी साफ झलक आई। 'क्या फायदा ऐसी दादी के होने का, जिन्हें अपने पोते की भी फिक्र नहीं!' उसने मन ही मन सोचा।

दिन गुजरते गए। सविता देवी बच्चों से ज़्यादा अपने शौकों–सहेलियों से मिलना, सत्संग जाना, मंदिर जाना–में व्यस्त रहतीं। रश्मि अक्सर आकाश से शिकायत करती– 'तुम्हारी माँ को बच्चों से कोई लगाव ही नहीं है। पहले की दादियाँ तो बच्चों को गोदी से उतारती ही नहीं थीं।'

आकाश टाल देता–

'रश्मि, हर किसी की अपनी दुनिया होती है। मम्मी को मत कोसो।' लेकिन रश्मि का मन खिन्न होता गया। नायरा की तबीयत बिगड़ना

एक दिन अचानक नायरा को तेज़ बुखार हो गया। रश्मि ऑफिस में थी, आकाश बाहर मीटिंग में। घर पर सिर्फ़ सविता देवी थीं। वो घबराईं, लेकिन तुरंत नायरा को गोद में लिया, दवा दी, ठंडी पट्टियाँ रखीं। रातभर उन्होंने बच्ची का सिर सहलाया, भजन गुनगुनाती रहीं।

सुबह जब रश्मि लौटी तो उसने देखा–

उसकी नन्ही नायरा दादी की गोद में चैन की नींद सो रही थी। पास में दवा की बोतलें और पानी रखा था।

रश्मि की आँखें भर आईं। उसने कहा– 'मम्मीजी! आपने तो रातभर जागकर नायरा का ख्याल रखा। मैं तो सोचती थी कि आपको बच्चों से कोई मतलब ही नहीं।'

सविता देवी ने गहरी साँस ली। 'बिटिया, ममता कभी खत्म नहीं होती। पर सच यह है कि अब मेरी उम्र हो गई है। दिनभर बच्चों के पीछे भागना, खिलाना-पिलाना... मेरी ताक़त नहीं रही। पर जब बच्चों को सच में मेरी ज़रूरत होती है, मैं हमेशा खड़ी मिलूँगी।'

उस दिन से रश्मि की सोच बदल गई। उसने सास की भूमिका को नए नज़रिए से देखना शुरू किया। अब बच्चों के कपड़े, खाना, स्कूल की तैयारी–ये सब रश्मि और आकाश सँभालते।

लेकिन– हर रात दादी कहानियाँ सुनातीं।

शाम को आरव को गणित पढ़ातीं।

नायरा को गोदी में बैठाकर लोकगीत सुनातीं।

त्योहारों पर बच्चों को परंपराओं से रूबरू करातीं। बच्चे दादी की कहानियों और हँसी-मज़ाक के बिना रह ही नहीं पाते।

एक दिन रश्मि ने बच्चों से पूछा–

'आरव, तुम्हें दादी सबसे ज़्यादा क्यों अच्छी लगती हैं?'

आरव ने मासूमियत से जवाब दिया–

'क्योंकि दादी कहानियों में जादू कर देती हैं! और जब मैं डरता हूँ तो बस उनके पास बैठने से ही डर भाग जाता है।'

रश्मि मुस्कराई। उसे समझ आ गया था कि बच्चों की परवरिश सिर्फ़ खाने-पिलाने से नहीं होती, बल्कि प्यार, संस्कार और सुरक्षा की छाँव से पूरी होती है। और यह भूमिका सास यानी दादी ने बखूबी निभा ली थी। हर पीढ़ी की अपनी सीमाएँ और ज़िम्मेदारियाँ होती हैं। आज की दादियाँ शायद रोज़मर्रा की देखभाल न कर पाएँ, लेकिन उनका अनुभव, कहानियाँ और स्नेह बच्चों की सबसे बड़ी धरोहर हैं। ■

Ram Creations
Jewelry & Gifts
28974 Orchard Lake Rd, Farmington Hills | ramcreations.com | (248) 851-1400

WORLD PLAYER
WORLD PLAYER MENSWEAR
MEGABUY
₹149-499
SAVE ₹ 100
MENS 100% CORDUROY 16 WALE WASHED SHIRTS
MRP ₹ 599
MEGABUY
₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS 100% COTTON SEMI FORMAL SHIRTS
MRP ₹ 599
MEGABUY
₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS FORMAL TROUSERS
MRP ₹ 699
MEGABUY
₹ 599

तेनालीरामा...

तेनालीराम का जन्म १६ वीं शताब्दी में भारत के आन्ध्रप्रदेश राज्य के गुन्टूर जिले के गाँव - गरलापाडु में हुआ था। तेनालीराम एक तेलुगू ब्राह्मण परिवार में जन्मे थे। वह पेशे से कवि थे, व तेलुगू साहित्य के महान ज्ञानी थे। अपने वाक चातुर्य के कारण वह काफी प्रख्यात थे। और उन्हे 'विकट कवि' के उपनाम से संबोधित किया जाता था। तेनालीराम को पाठशाला का विधिवत अभ्यास नहीं प्राप्त हुआ था, पर उनकी सीखने की तीव्र इच्छा और ज्ञान के प्रति धुन के कारण उन्हे शिष्यावृति प्राप्त हुई थी। परंतु उनके पूर्व शिव भक्त होने के कारण उन्हे वैष्णव अनुयायियों द्वारा एक शिष्य की तरह स्वीकारा नहीं गया था, फिर एक महान संत ने उन्हे काली की पूजा करने की सलाह दी।

स्वर्ग की खोज

महाराज कृष्णदेव राय अपने बचपन में सुनी कथा अनुसार यह विश्वास करते थे कि संसार-ब्रह्मांड की सबसे उत्तम और मनमोहक जगह स्वर्ग है। एक दिन अचानक महाराज को स्वर्ग देखने की इच्छा उत्पन्न होती है, इसलिए दरबार में उपस्थित मंत्रियों से पूछते हैं, ' बताइए स्वर्ग कहाँ है ?' सारे मंत्रीगण सिर खुजाते बैठे रहते हैं पर चतुर तेनालीराम महाराज कृष्णदेव राय को स्वर्ग का पता बताने का वचन देते हैं। और इस काम के लिए दस हजार सोने के सिक्के और दो माह का समय मांगते हैं।

महाराज कृष्णदेव राय तेनालीराम को सोने के सिक्के और दो माह का समय दे देते हैं और शर्त रखते हैं कि अगर तेनालीराम ऐसा न कर सके तो उन्हे कड़ा दंड दिया जाएगा। अन्य दरबारी तेनालीराम की कुशलता से काफी जलते हैं। और इस बात से मन ही मन बहुत खुश होते हैं कि तेनालीराम स्वर्ग नहीं खोज पाएगा और सजा भुगतेगा।

दो माह की अवधि बीत जाती है, महाराज कृष्णदेव राय तेनालीराम को दरबार में बुलवाते हैं। तेनालीराम कहते हैं के उन्होने स्वर्ग ढूंढ लिया है और वे कल सुबह स्वर्ग देखने के लिए प्रस्थान करेंगे।

अगले दिन तेनालीराम, महाराज कृष्णदेव राय और उनके खास मंत्रीगणों को एक सुंदर स्थान पर ले जाते हैं। जहां खूब हरियाली, चहचहाते पक्षी, और वातावरण को शुद्ध करने वाले पेड़ पौधे होते हैं। जगह का सौंदर्य देख महाराज कृष्णदेव राय अति प्रसन्न होते हैं। पर उनके अन्य मंत्री गण स्वर्ग देखने की बात महाराज कृष्णदेव राय को याद दिलाते रहते हैं। महाराज कृष्णदेव राय भी तेनालीराम से उसका वादा निभाने को कहते हैं। उसके जवाब में तेनालीराम कहते हैं कि जब हमारी पृथ्वी पर फल, फूल, पेड़, पौधे, अनंत प्रकार के पशु, पक्षी, और अद्भुत वातावरण और अलौकिक सौन्दर्य है। फिर स्वर्ग की कामना क्यों? जबकि स्वर्ग जैसी कोई जगह है भी इसका कोई प्रमाण नहीं है।

महाराज कृष्णदेव राय को चतुर तेनालीराम की बात समझ आ जाती है और वो उनकी प्रसंशा करते हैं।बाकी मंत्री जलन के मारे महाराज को दस हज़ार सोने के सिक्कों की याद दिलाते हैं। तब महाराज कृष्णदेव राय तेनालीराम से पूछते हैं कि उन्होंने उन सिक्को का क्या किया? तब तेनालीराम कहते हैं कि वह तो उन्होने खर्च कर दिये! तेनालीराम कहते हैं कि आपने जो दस हजार सोने के सिक्के दिये थे उनसे मैंने इस जगह से उत्तम पौधे और उच्च कोटी के बीज खरीदे हैं। जिनको हम अपने राज्य विजयनगर की जमीन में प्रत्यर्पित करेंगे; ताकि हमारा राज्य भी इस सुंदर स्थान के समीप आकर्षक और उपजाऊ बन जाए।

महाराज इस बात से और भी प्रसन्न हो जाते हैं और तेनालीराम को ढेरों इनाम देते हैं। और एक बार फिर बाकी मंत्री अपना सा मुंह ले कर रह जाते हैं! ■

Good Vibes Onion Hairfall Control Oil I Strengthening I Hair Growth I No Parabens, No Sulphates, No Mineral Oil, No Animal Testing (100 ml)

Good Vibes Argan Oil Hairfall Control Vitalizing Serum I Frizz Control, Shine, Stregthening I No Parabens, No Sulphates, No Animal Testing (50 ml)

स्वर्णिम मुंबई

प्रतियोगिता नंबर-101

सभी के लिए सुनहरा

दीजिए आसान से सवालों का जवाब और

जीतिये 2,000/- का नकद इनाम!

अवसर!

१. कौन-सा तत्व सबसे कम सक्रिय होता है?
२. संविधान सभा के प्रारूप समिति में कुल कितने सदस्य थे?
३. सबसे छोटा कोशिकीय अंग कौन-सा है?
४. अलाउद्दीन खिलजी ने किसे दीवान-ए-रियासत नियुक्त किया था?
५. बेगम अख्तर गायन की किस विधा से संबद्ध हैं?
६. एक प्रकाश वर्ष कितनी दूरी के बराबर होता है?
७. ओलम्पिक मशाल किस पदार्थ से प्रज्वलित की जाती है?
८. भारत में जिलों की कुल संख्या कितनी है?
९. सल्तनतकालीन सुल्तानों के शासन काल में किसके शासन काल में सर्वाधिक दास थे?
१०. माईक पाण्डेय किस क्षेत्र से संबद्ध हैं?
११. पदार्थ के संवेग और वेग के अनुपात से कौन-सी भौतिक राशि प्राप्त होती है?
१२. संविधान सभा के झंडा समिति के कौन अध्यक्ष थे?
१३. लोहा एवं गंधक का मिश्रण कौन-सा मिश्रण है?
१४. औरंगजेब ने शिवाजी के विरुद्ध किसे दक्कन का सूबेदार बनाकर भेजा था?
१५. यहूदी मेनुहीन किस वाद्य यंत्र के प्रमुख वादक थे?
१६. सूर्य के अपेक्षाकृत ठंडे भाग, जिसका तापमान १५०० अु ण होता है, क्या कहलाता है?
१७. विश्व में सर्वप्रथम किस अंग का प्रत्यारोपण संभव हुआ?
१८. जनगणना की तर्ज पर मृत्यु गणना वाला पहला राज्य कौन-सा है?
१९. किस मुगल बादशाह ने वसीयत लिखकर अपने पुत्रों को यह निर्देश दिया था कि वे असद खाँ को बजीर बनाए?
२०. ह्विटनी ह्यूस्टन किस क्षेत्र से संबद्ध थे?

आपके द्वारा सही जवाब की पहेली इस माह की २५ तारीख तक डाक द्वारा हमारे कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए। भरी गयी पहेली का रिजल्ट लॉटरी सिस्टम द्वारा निकाला जाएगा। विजेता के नाम और सही हल अगले माह के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। परिजन विजेता बच्चे का फोटो व उसका पहचान पत्र लेकर हमारे कार्यालय में आएं और मुंबई के बाहर रहने वाले विजेता अपने पहचान पत्र की सत्यापित प्रति डाक या मेल से निम्न पते पर भेजें।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station
Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website: swarnimumbai.com

नामः ....

पूरा पताः ....
....
....

फोन नं.ः ....

ई-मेलः ....

Festive Collection
WELCOME THE FESTIVITIES WITH A BURST OF GLAMOUROUS COLOUR
SHOP NOW
www.festivacollection.com

रीढ़ की हड्डीः शरीर का जीवनदायिनी स्तंभ

हमारा शरीर जिस ढांचे पर टिका है, वह है रीढ़ की हड्डी। यह केवल हड्डियों का ढेर नहीं है, बल्कि हमारे स्वास्थ्य की नींव है। चलना, बैठना, खड़ा होना, झुकना - हर गतिविधि में रीढ़ की भूमिका होती है। इतना ही नहीं, रीढ़ के भीतर से गुजरने वाली स्पाइनल कॉर्ड और नसें हमारे मस्तिष्क और शरीर के बीच संपर्क बनाए रखती हैं। यही कारण है कि डॉक्टर इसे शरीर का जीवनदायिनी स्तंभ कहते हैं।

रीढ़ की संरचना

रीढ़ की हड्डी में कुल ३३ कशेरुकाएँ (vertebrae) होती हैं। इनमें से २४ अलग-अलग हड्डियाँ होती हैं, जबकि नीचे की ९ हड्डियाँ आपस में जुड़कर ठोस हड्डी का रूप ले लेती हैं।

सर्वाइकल स्पाइन (Cervical Spine)ः गर्दन का हिस्सा, ७ हड्डियाँ (C1–C7)।

थोरेसिक स्पाइन (Thoracic Spine)ः ऊपरी पीठ, १२ हड्डियाँ (T1–T12)।

लम्बर स्पाइन (Lumbar Spine)ः कमर का हिस्सा, ५ हड्डियाँ (L1–L5)।

सैक्रम और कॉक्सिक्स (Sacrum & Coccyx)ः पूँछ की हड्डी, ९ जुड़े हुए कशेरुक।

रीढ़ और नसों का संबंध

रीढ़ की हड्डियों के बीच से स्पाइनल नसें निकलती हैं, जो शरीर के लगभग हर हिस्से तक जाती हैं।

C1–C7 (गर्दन की नसें)ः सिर, आँख, कान, थायरॉयड, हृदय और फेफड़ों तक जुड़ी होती हैं।

T1–T12 (पीठ की नसें)ः हृदय, फेफड़े, पेट, यकृत, अग्न्याशय, गुर्दे, पित्ताशय और प्रजनन अंगों से संबंधित होती हैं।

L1–L5 (कमर की नसें)ः पेट, मूत्राशय, प्रजनन अंग, प्रोस्टेट और पैरों तक संदेश पहुँचाती हैं।

सैक्रम और कॉक्सिक्सः नितंब, मलाशय,

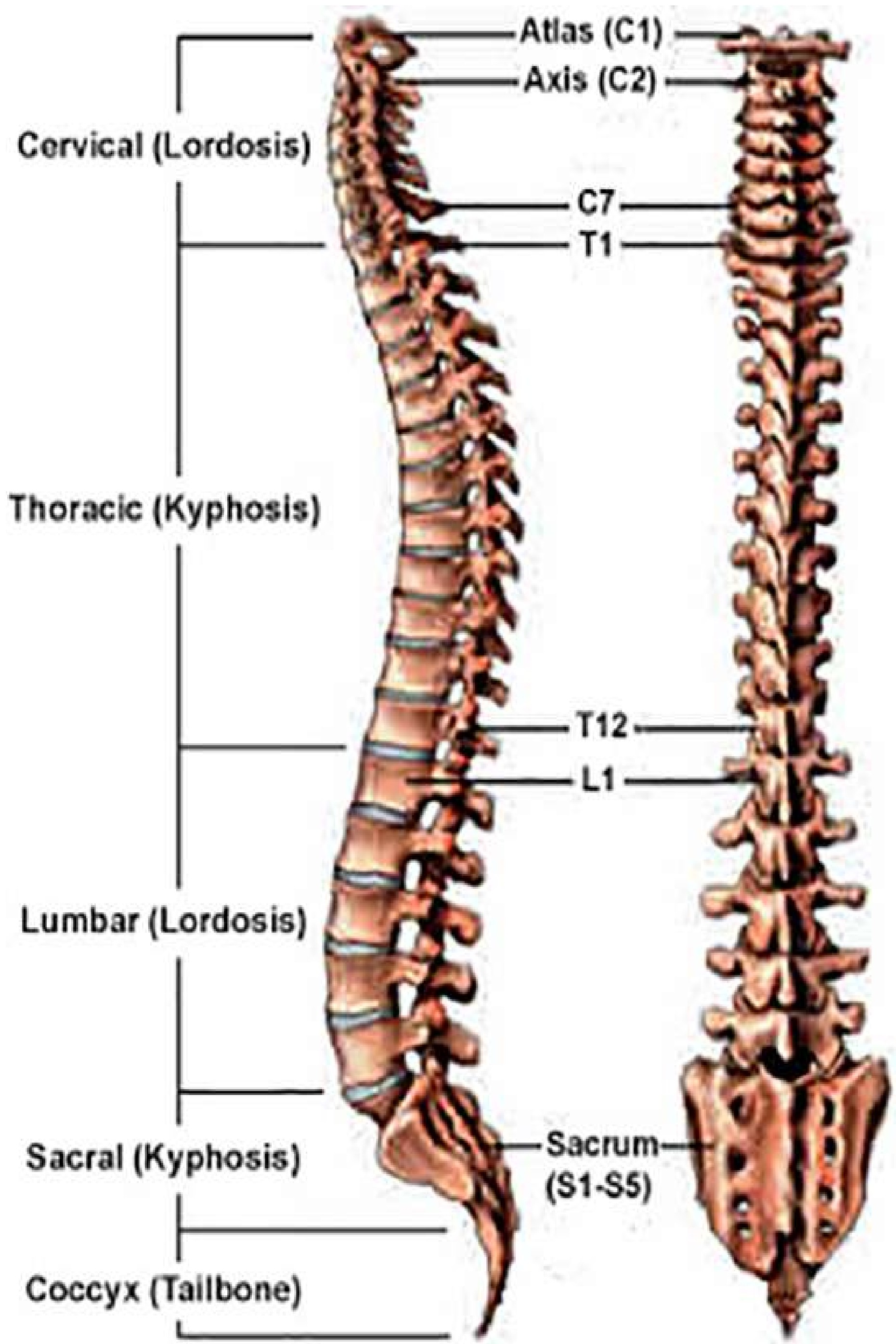

मूत्राशय और पैरों की नसों से जुड़े रहते हैं। इस प्रकार, रीढ़ केवल हड्डियों का ढांचा नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण शरीर का कंट्रोल टॉवर है।

रीढ़ की गड़बड़ियाँ और उनके प्रभाव

रीढ़ का सही ढंग से काम करना आपके स्वास्थ्य के लिए ज़रूरी है। लेकिन कभी-कभी सबलक्सेशन (Subluxation) यानी रीढ़ का हल्का सा विकार बिना दर्द के भी हो सकता है। इससे नसों पर दबाव पड़ता है और मस्तिष्क और शरीर के बीच का संदेश तंत्र प्रभावित होता है।

इसका असर कई तरह से दिख सकता है:

लगातार सिरदर्द या माइग्रेन

कमर दर्द और सर्वाइकल दर्द

थायरॉयड या हार्मोनल असंतुलन

पाचन संबंधी दिक्कतें

थकान और ऊर्जा की कमी

जोड़ों और पैरों में दर्द

रीढ़ की देखभाल क्यों ज़रूरी है?

रीढ़ हमारी मुद्रा (Posture), संतुलन और अंगों के स्वास्थ्य को बनाए रखती है। अगर रीढ़ मजबूत है तो शरीर भी ऊर्जावान रहता है। लेकिन लंबे समय तक गलत आदतें जैसे–

झुककर बैठना,

मोबाइल या लैपटॉप पर घंटों झुके रहना,

भारी सामान गलत ढंग से उठाना,

व्यायाम की कमी–

ये सभी रीढ़ की सेहत को नुकसान पहुँचाते हैं।

रीढ़ को स्वस्थ रखने के उपाय

१. सही बैठने और खड़े होने की आदत

कुर्सी पर बैठते समय रीढ़ सीधी रखें।

लंबे समय तक बैठने पर बीच-बीच में उठकर टहलें। खड़े होते समय दोनों पैरों पर समान भार डालें।

२. योग और व्यायाम

योगासन रीढ़ की लचक और मजबूती के लिए सबसे प्रभावी हैं।

भुजंगासन - कमर की नसों और मांसपेशियों के लिए।

ताड़ासन - रीढ़ को सीधा और मजबूत रखने के लिए।

अर्धमत्स्येन्द्रासन - नसों और डिस्क की लचक बनाए रखने के लिए।

शलभासन - कमर दर्द में राहत के लिए।

३. सही जीवनशैली

पर्याप्त नींद लें और सोते समय कठोर गद्दे का प्रयोग करें।

धूम्रपान और शराब जैसी आदतों से बचें, क्योंकि ये हड्डियों को कमजोर करती हैं।

संतुलित आहार लें जिसमें कैल्शियम, विटामिन D और प्रोटीन प्रचुर मात्रा में हों।

४. नियमित जांच

कायरोप्रैक्टिक (Chiropractic) या फिजियोथेरेपी विशेषज्ञ से समय-समय पर जांच कराएँ। छोटे विकार समय रहते ठीक हो सकते हैं, वरना आगे चलकर गंभीर बीमारियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। रीढ़ की हड्डी हमारे शरीर का आधार है। यह मस्तिष्क और शरीर के बीच संदेश पहुँचाने वाली एक जीवंत डोर है। इसकी देखभाल करना उतना ही ज़रूरी है जितना दिल या दिमाग का ख्याल रखना। सही मुद्रा, योग, नियमित व्यायाम और समय पर जांच से आप न केवल रीढ़ को मजबूत बना सकते हैं, बल्कि पूरे शरीर की सेहत को जीवनभर सुरक्षित रख सकते हैं।

याद रखें - स्वस्थ रीढ़, स्वस्थ जीवन।

आपकी स्पाइनल कॉर्ड, जो अरबों नसों से बनी होती है, इसी रीढ़ की हड्डी के अंदर स्थित होती है और चारों तरफ से हड्डी द्वारा सुरक्षित रहती है। स्पाइनल नसें (spinal nerves) कशेरुकाओं के बीच की जगह से निकलकर आपके आंतरिक अंगों, मांसपेशियों, जोड़, लिगामेंट्स, टेंडन और शरीर के अन्य भागों से जुड़ती हैं। यह संबंध आपके स्वास्थ्य और जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है।वर्टिब्रल सबलक्सेशन कॉम्प्लेक्स (Vertebral Subluxation Complex) – यह अक्सर बिना दर्द वाला रीढ़ का विकार होता है, जो स्पाइनल नसों को उत्तेजित या क्षतिग्रस्त कर सकता है, मस्तिष्क और शरीर के बीच के संबंध में बाधा डाल सकता है और रीढ़, नसों, डिस्क, मांसपेशियों, अंगों और समग्र स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। कायरोप्रैक्टिक चिकित्सक (Doctors of Chiropractic) इस विकार का पता लगाने और सुधार करने में विशेषज्ञ होते हैं। उनका कार्य शरीर में संचार की रेखाओं को पुनःस्थापित करना, शरीर के समग्र कार्य, उपचार क्षमता और स्वास्थ्य को बेहतर बनाना होता है।

U-Tropicana-Beach-Resort-in-Alibaug

One of the most beautiful resorts near Mumbai for family is the U Tropicana at Alibaug

30% off
Enriched With
Vitamin E
Keeps eyes nourished
E
Almond Oil
Gives a smooth glide for an
intense black color in one stroke
Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

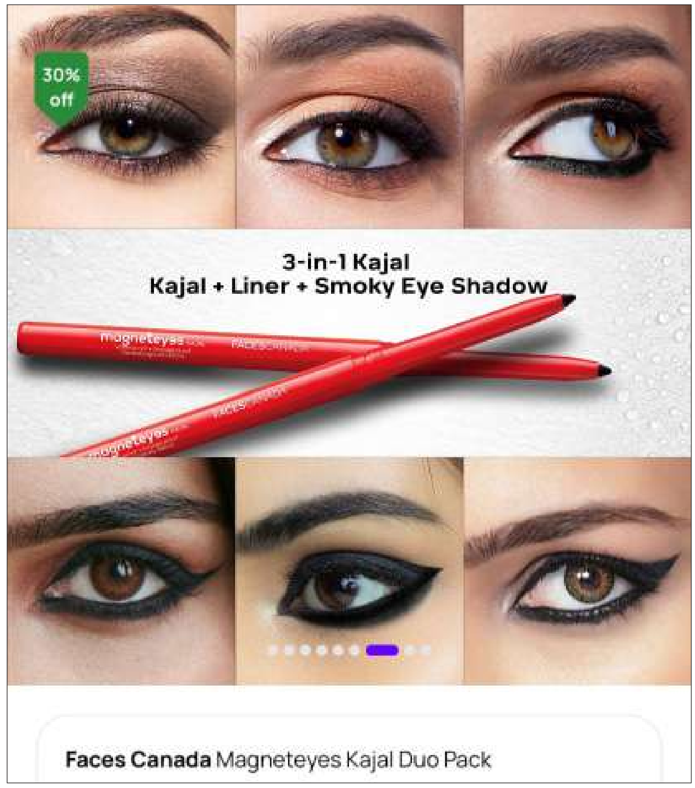
30% off
3-in-1 Kajal
Kajal + Liner + Smoky Eye Shadow
Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

17% off
GLOWING SKIN
UBTAN RANGE
GOOD VIBES
UBTAN RANGE
CTSM

30% off
SUPER SAVER
DEEP CLEANSING
CHARCOAL COMBO
DEEP CLEANSING
GOOD VIBES
SKIN PURIFYING FACE WASH
Activated Charcoal
DEEP CLEANSING FACE SCRUB
PEEL OFF MASK
DEEP CLEANSING SHEET MASK
Activated Charcoal

जानलेवा खांसी सिरप!

तमिलनाडु के खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग के एक अधिकारी ने शनिवार को कहा कि नमूनों में मिलावट पाए जाने के बाद पूरे तमिलनाडु में इसके उत्पादन और बिक्री पर प्रतिबंध लगा दिया गया। हमने निर्माता से स्पष्टीकरण मांगा है। अगले आदेश तक संयंत्र में उत्पादन को बंद कर दिया गया है। राजस्थान सरकार ने भी जयपुर स्थित कायसन फार्मा के सभी १९ दवाओं के वितरण पर प्रतिबंध लगा दिया है। राजस्थान में इस कंपनी के डेक्सट्रामेथारफन कफ सिरप की वजह से दो बच्चों की मौत हुई है। वहीं केरल की स्वास्थ्य मंत्री वीना जॉर्ज ने भी शनिवार को कहा कि राज्य औषधि नियंत्रण विभाग ने राज्य में कोल्ड्रिफ कफ सिरप की बिक्री पर रोक लगा दी है। यह फैसला अन्य राज्यों से आई रिपोर्टों के बाद लिया गया है।

मध्यप्रदेश और राजस्थान में कथित तौर पर खांसी की सिरप से १४ बच्चों की मौत के बाद केंद्र और राज्यों की सरकारें सतर्क हो गई हैं। मामले में सीडीएससीओ ने छह राज्यों में फैक्ट्रियों की जांच शुरू की है। शुरुआती जांच में कुछ गंभीर बातें भी सामने आई हैं। मध्यप्रदेश और राजस्थान में कथित तौर पर खांसी की दवाओं से १४ बच्चों की मौत के बाद केंद्र और राज्यों की सरकारें सक्रिय हो गई हैं। केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) ने हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, गुजरात, तमिलनाडु, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र में उन फैक्ट्रियों की जांच शुरू कर दी है जहां से संदिग्ध दवाएं बनी थीं। बता दें कि मामले में सीडीएससीओ ने १९ दवाओं के सैंपल इकट्ठे किए हैं, जिनमें खांसी की सिरप, एंटीबायोटिक और बुखार की दवाएं शामिल हैं।

मामले की शुरुआती जांच में छह दवाओं में डाइएथिलीन ग्लाइकोल (डीईजी) और एथिलीन ग्लाइकोल (ईजी) नहीं पाए गए, जो बच्चों की किडनी फेलियर का कारण बन सकते हैं। लेकिन कोल्डरिफ सिरप के सैंपल में डीईजी की मात्रा तय सीमा से अधिक पाई गई। यह सिरप तमिलनाडु के कांचीपुरम में बनी थी। तमिलनाडु और मध्यप्रदेश सरकार ने इस सिरप की बिक्री पर रोक लगा दी है और बाजार से इसे हटाने के आदेश दिए हैं। इस मामले में अब केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने सभी राज्यों को सलाह दी है कि दो साल से कम उम्र के बच्चों को कफ सिरप न दी जाए। वहीं पांच साल से कम उम्र के बच्चों के लिए कफ सिरप का इस्तेमाल डॉक्टर की सलाह, सीमित मात्रा और सावधानी के साथ किया जाए। इसके साथ ही गर्भवती महिलाओं और बच्चों के लिए नुकसानदेह दवाओं पर अब चेतावनी लेबल लगाना अनिवार्य होगा।

मध्यप्रदेश और राजस्थान में कथित रूप से खांसी की दूषित दवाओं से बच्चों की मौत की खबरों के बीच गुजरात सरकार भी एक्शन में आती हुई नजर आ रही है। इसके तहत सरकार ने एहतियात के तौर पर राज्य में बिक रही खांसी की सभी दवाओं की जांच के आदेश दिए हैं। मामले में गुजरात के स्वास्थ्य मंत्री ऋषिकेश पटेल ने गांधीनगर में पत्रकारों को बताया कि जिन कंपनियों की दवाओं पर सवाल उठ रहे हैं, वे गुजरात मेडिकल सर्विसेज कॉर्पोरेशन लिमिटेड (जीएमएससीएल) की खरीदार सूची में नहीं हैं।

मंत्री ने कहा कि हमें मीडिया से पता चला है कि मध्यप्रदेश और राजस्थान में कुछ बच्चों की मौत खांसी की दवाएं पीने के बाद हुई है। रिपोर्ट्स में बताया गया है कि राजस्थान में डेक्सट्रोमेथोर्फन और एमपी में कोल्डरिफ सिरप के सेवन से बच्चों की मौत हुई। उन्होंने बताया कि स्वास्थ्य विभाग ने जांच की कि क्या इन दवाओं की खरीद जीएमएससीएल के जरिए की गई थी। जांच में पता चला कि ये कंपनियां राज्य की खरीदार सूची में नहीं हैं। हालांकि कोई सीधी खरीद नहीं हुई, लेकिन सरकार ने सतर्कता बरतते हुए राज्य में बिक रही सभी खांसी की दवाओं में हानिकारक तत्वों की जांच के आदेश दे दिए हैं।

इससे पहले मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा जिले में सात सितंबर से अब तक ११ बच्चों की मौत के बाद कोल्डरिफ सिरप की बिक्री पर रोक लगा दी गई है। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने इन मौतों को बेहद दुखद बताया। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट में लिखा कि पूरे राज्य में कोल्ड्रिफ कफ सिरप की बिक्री पर रोक लगा दी गई है। सिरप बनाने वाली कंपनी के अन्य उत्पादों पर भी पाबंदी लगाई जा रही है। राज्य स्तर पर मामले की जांच जारी है। दोषियों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा। उन्होंने यह बताया कि कफ सिरप बनाने वाली फैक्टरी कांचीपुरम में है, इसलिए तमिलनाडु सरकार से जांच कराने के लिए पत्र भेजा गया था। शनिवार सुबह रिपोर्ट मिलने के बाद इसके आधार पर अन्य उत्पादों पर भी पाबंदी लगाने का फैसला किया गया। दूसरी ओर कफ सिरप पीने से बच्चों की मौत के बाद अब तेलंगाना सरकार भी सतर्क

हो गई है। शनिवार को तेलंगाना ड्रग्स कंट्रोल एडमिनिस्ट्रेशन (डीसीए) ने इस सिरप को लेकर स्टॉप यूज नोटिस और पब्लिक अलर्ट जारी किया है। प्रशासन ने बताया कि उन्हें मध्यप्रदेश और राजस्थान में बच्चों की मौत की खबरों से सतर्क किया गया है। ये मौतें कथित तौर पर सिरप के सेवन के बाद हुईं, जिसमें Batch No. SR-१३ शामिल है।

क्या है खतरा?

मामले में तंलगाना सरकार की तरफ से जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, कोल्ड्रिफ सिरप के इस बैच में डायएथिलीन ग्लाइकोल (डीईजी) नाम का जहरीला रसायन मिला है, जो शरीर के गुर्दों (किडनी) को गंभीर नुकसान पहुंचा सकता है और जानलेवा साबित हो सकता है। इसी कारण तेलंगाना में इस सिरप को लेकर लोगों को उपयोग तुरंत बंद करने की चेतावनी दी गई है। उधर, तमिलनाडु के खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग के एक अधिकारी ने शनिवार को कहा कि नमूनों में मिलावट पाए जाने के बाद पूरे तमिलनाडु में इसके उत्पादन और बिक्री पर प्रतिबंध लगा दिया गया। हमने निर्माता से स्पष्टीकरण मांगा है। अगले आदेश तक संयंत्र में उत्पादन को बंद कर दिया गया है। राजस्थान सरकार ने भी जयपुर स्थित कायसन फार्मा के सभी १९ दवाओं के वितरण पर प्रतिबंध लगा दिया है। राजस्थान में इस कंपनी के डेक्सट्रामेथारफन कफ सिरप की वजह से दो बच्चों की मौत हुई है। वहीं केरल की स्वास्थ्य मंत्री वीना जॉर्ज ने भी शनिवार को कहा कि राज्य औषधि नियंत्रण विभाग ने राज्य में कोल्ड्रिफ कफ सिरप की बिक्री पर रोक लगा दी है। यह फैसला अन्य राज्यों से आई रिपोर्टों के बाद लिया गया है।

राजस्थान सरकार ने राज्य के ड्रग कंट्रोलर राजाराम शर्मा को निलंबित कर दिया है। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के मुताबिक, यह निलंबन दवा मानकों के निर्धारण की प्रक्रिया को कथित तौर पर प्रभावित करने के आरोप में किया गया है। कफ सिरप से मौतों के बाद केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) ने भी १९ दवाओं की निर्माण इकाइयों में निरीक्षण शुरू कर दिया है।

नमूनों में पाया गया रसायन सेहत के लिए घातक

मध्य प्रदेश के राज्य खाद्य एवं औषधि नियंत्रक दिनेश कुमार मौर्य ने शनिवार को कहा कि प्रतिबंधित कोल्ड्रिफ सिरप में डीईजी रसायन की मात्रा अनुमत सीमा (०.१%) से अधिक पाई गई। उन्होंने कहा कि तमिलनाडु में निर्मित कोल्ड्रिफ की जांच रिपोर्ट आने के बाद इसकी आपूर्ति वाले हर स्थान का गहन निरीक्षण करने, सैंपलिंग करने और स्टॉक जब्त करने के निर्देश दिए गए हैं। मध्य प्रदेश के खाद्य एवं औषधि प्रशासन नियंत्रक कार्यालय की तरफ से जारी पाबंदी संबंधी निर्देश के मुताबिक, कफ सिरप को डाइएथिलीन ग्लाइकॉल (४८.६% डब्ल्यू/वी) की अधिक मात्रा के कारण मानक गुणवत्ता वाला नहीं पाया गया है। इसलिए इसे पूरे राज्य में प्रतिबंधित कर दिया गया है। डीईजी यह एक तरह का विषाक्त रसायन होता है जो सेहत के हानिकारक है।

मध्य प्रदेश के खाद्य एवं औषधि नियंत्रक ने यह भी बताया कि हिमाचल प्रदेश में निर्मित एक और कफ सिरप की जांच जारी है। रिपोर्ट आने के बाद उपयुक्त कार्रवाई की जाएगी। मौर्य ने कहा कि कुल १९ नमूने एकत्र किए गए है, जिनमें १३ हमारे पास हैं और उनकी जांच जारी रही है। चार नमूनों की रिपोर्ट आ चुकी है और बाकी की जांच की जा रही है।

जन्मदिन मुबारक हो

श्री आनंद कुमार पाण्डेय सपरिवार २४ सितंबर अपना जन्मदिन तंजानिया में मना रहे हैं जहां पर वे फिलहाल कार्यरत हैं। आनंद कुमार पाण्डेय अशोक पाण्डेय,राष्ट्रपति पुरस्कारप्राप्त केन्द्रीय विद्यालय संगठन के एक अवकाशप्राप्त प्राचार्य हैं। अनन्य जगन्नाथ भक्त अशोक पाण्डेय के दो बेटे हैं-इंजीनियर अनुप कुमार पाण्डेय जो अभी बेल्जियम में इंजीनियर पद पर प्रतिनियुक्त हैं और दूसरे आनंद कुमार पाण्डेय जो तंजानिया में पिछले कुछ महीनों से डेनमार्क की एक कंपनी में वरिष्ठ मैनेजर के पद पर कार्यरत हैं। आनंद की पत्नी श्रीमती ज्योति पाण्डेय, बैंगलुरु के एक कॉलेज में कंप्यूटर प्राध्यापिका थीं जो फिलहाल तंजानिया से ऑनलाइन ट्यूशन लेती हैं। आनंद की दो बेटियां हैं-कश्वी पाण्डेय और रोमी पाण्डेय। कश्वी तानजानिया के इण्डिय स्कूल में पढ़ती हैं जबकि रोमी घर के सारे सामानों को तितर-बितरकर अपनी मां ज्योति को पढ़ाती रहती है और अपने पिताश्री आनंद की गोद में खेलती नजर आती है। सबसे अनोखी बात अनुप और आनंद के विषय में यह है कि दोनों का जन्म सितंबर का ही है। अनुप का जन्म १४ सितंबर, हिन्दी दिवस के दिन का है जबकि आनंद का जन्म २४ सितंबर राष्ट्रीय बेटी दिवस के दिन का है। एक और रोचक बात अनुप और आनंद को संतान के रुप में बेटियां(लक्ष्मीजी) ही हैं। अनुप की बेटी कीर्तिका पाण्डेय है जबकि आनंद की कश्वी पाण्डेय तथा रोमी पाण्डेय हैं।

आनंद ने कई शहरों जैसेः पुरी, जाजपुर (ओड़िशा), मुंबई, जम्मू, कुबैत और बैंगलुरु में सफलतापूर्वक काम किया क्योंकि वह कीट डीम्ड विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर से एमबीए किया था जो एशिया का एक नामी विश्वविद्यालय है। आज उसके जन्मदिन पर उसके पिताजी अशोक पाण्डेय,माताजी श्रीमती आशा पाण्डेय,बड़े भाई अनुप पाण्डेय के साथ-साथ गोपभरवली,बक्सर,बिहार के समस्त पाण्डेय-परिवार के सदस्यगण आनंद को हैप्पी बर्थडे बोल रहे हैं। अशोक पाण्डेय की ओर से एकबार फिर आनंद के सपरिवार सानंद,खुशहाल और शतायु होने की प्रार्थना महाप्रभु जगन्नाथ जी से और आशीर्वाद।

गाजर की खेती...

भारत में गाजर मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, कर्नाटक और बिहार जैसे राज्यों में बड़े पैमाने पर उगाई जाती है। उत्तर भारत में सर्दियों के मौसम में इसकी खेती व्यापक रूप से की जाती है, जबकि दक्षिण भारत में यह लगभग सालभर उगाई जाती है। गाजर का उपयोग केवलसलाद और सब्ज़ी के रूप में ही नहीं, बल्कि गाजर का हलवा, जूस, अचार, मुरब्बा और सूप बनाने में भी होता है। औद्योगिक स्तर पर इसका उपयोग बेबी फूड, जूस इंडस्ट्री, पिकलिंग और पाउडर बनाने में भी किया जाता है। इस प्रकार, गाजर एक ऐसी सब्ज़ी है जो पोषण, स्वाद और आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है और किसानों को अच्छी आमदनी भी देती हैं।

गाजर सभी सब्ज़ियों में से सबसे पौष्टिक मानी जाती है। 'इनमें रेशे (फाइबर) की भरपूर मात्रा होती है और ये कई विटामिन और एंटीऑक्सीडेंट का अच्छा स्रोत हैं, जिनमें बीटा कैरोटीन भी शामिल है – यही तत्व गाजर को उसका चमकीला नारंगी रंग देता है,' बताती हैं रहाफ़ अल बोची, पंजीकृत डायटीशियन और एकेडमी ऑफ़ न्यूट्रिशन एंड डाइटेटिक्स की प्रवक्ता। जब आप गाजर खाते हैं, तो आपका शरीर बीटा कैरोटीन को विटामिन A में बदल देता है, जो स्वस्थ त्वचा, मज़बूत हड्डियों और तेज़ नज़र के लिए ज़रूरी है। साथ ही यह आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली को भी मज़बूत करता है। 'बीटा कैरोटीन और अन्य कैरोटिनॉयड्स का संबंध लंबे समय तक होने वाली बीमारियों, जैसे हृदय रोग और कैंसर के खतरे को कम करने से भी है।

गाजर की किस्में कौन-कौन सी हैं?

गाजर अजवाइन (parsley) परिवार की सदस्य है, जिसमें २,५०० से अधिक प्रकार के पौधे शामिल हैं। इसमें सोआ (dill), शाहजीरा (caraway), ज़ीरा (cumin), धनिया (coriander), अजवाइन (celery), सौंफ (fennel) और अन्य जड़ वाली सब्ज़ियाँ जैसे पार्सनिप (parsnip) भी आती हैं। सैकड़ों किस्मों की गाजरें पाई जाती हैं, लेकिन इन्हें चार प्रमुख

श्रेणियों में बाँटा जा सकता हैः

इम्पेरेटर (Imperator)ः लंबी और पतली, बेहद मीठी।

डैनवर्स (Danvers)ः पारंपरिक आकार वाली गाजर, जो लंबे समय तक सुरक्षित रहती है।

नांत (Nantes)ः गोल सिरों वाली और लगभग बेलनाकार, जूस बनाने के लिए आदर्श।

शांतने (Chantenay)ः छोटी और मोटी, इन्हें जमाने (freezing) और डिब्बाबंदी (canning) के लिए सबसे उपयुक्त माना जाता है।

गाजर (Carrot) एक महत्वपूर्ण जड़ वाली सब्ज़ी है, जिसे इसके पोषण मूल्य, स्वाद और विविध उपयोगों के कारण 'स्वास्थ्यवर्धक आहार' माना जाता है। इसमें विटामिन A (बीटा-कैरोटीन) प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, जो आँखों की रोशनी और त्वचा के लिए अत्यंत लाभकारी है। इसके अलावा गाजर में विटामिन C, कैल्शियम, आयरन और फाइबर भी पर्याप्त मात्रा में होते हैं।

भारत में गाजर मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, कर्नाटक और बिहार जैसे राज्यों में बड़े पैमाने पर उगाई जाती है। उत्तर भारत में सर्दियों के मौसम में इसकी खेती व्यापक रूप से की जाती है, जबकि दक्षिण भारत में यह लगभग सालभर उगाई जाती है।गाजर का उपयोग केवलसलाद और सब्ज़ी के रूप में ही नहीं, बल्कि गाजर का हलवा, जूस, अचार, मुरब्बा और सूप बनाने में भी होता है। औद्योगिक स्तर पर इसका उपयोग बेबी फ़ूड, जूस इंडस्ट्री, पिकलिंग और पाउडर बनाने में भी किया जाता है। इस प्रकार, गाजर एक ऐसी सब्ज़ी है जो पोषण, स्वाद और आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है और किसानों को अच्छी आमदनी भी देती हैं।

१. जलवायु और मौसम

गाजर ठंडी और शुष्क जलवायु की फसलहै।

बुवाई का समयः

उत्तर भारत - अक्टूबर से दिसंबर तक।

दक्षिण भारत/मैदानी क्षेत्र - अगस्त से जनवरी तक।

पहाड़ी क्षेत्र - मार्च से जुलाई तक।

तापमान १५ष्टण से २५ष्टण सबसे अच्छा है।

२. मिट्टी (एदग्त)

हल्की, बलुई-दोमट (ऍंह्ब र्त्दस) मिट्टी सबसे उपयुक्त।

गहरी, भुरभुरी और अच्छे जलनिकास वाली भूमि चाहिए।

pH मान ६.० से ७.० उपयुक्त है।

मिट्टी सख्त या पत्थरीली न हो, वरना गाजर टेढ़ी-मेढ़ी होगी।

३. भूमि की तैयारी

खेत की ३-४ बार जुताई करें और मिट्टी को भुरभुरी बनाएं।

गोबर की सड़ी खाद/कम्पोस्ट (२०-२५ टन प्रति हेक्टेयर) डालें।

क्यारियाँ (Raised beds) या मेढ़ बनाकर बुवाई करना बेहतर है।

४. बीज और बुवाई

बीज दरः ४-६ किग्रा प्रति हेक्टेयर।

बीजों को बोने से पहले १२ घंटे गुनगुने पानी में भिगोकर सुखा लें।

कतार से कतार की दूरी २५-३० सेमी, पौधों की दूरी ५-७ सेमी रखें।

बीज १.५-२ सेमी गहराई में बोएँ।

५. सिंचाई (Irrigation)

बुवाई के तुरंत बाद हल्की सिंचाई।

शुरुआत में ६-७ दिन के अंतर पर, बाद में १०-१२ दिन पर सिंचाई करें।

पानी का रुकाव नहीं होना चाहिए, वरना

गाजर सड़ने लगती है।

ड्रिप सिंचाई सबसे बेहतर है।

६. खाद और उर्वरक

गोबर की खाद - २०-२५ टन/हेक्टेयर (जुताई के समय)।

रासायनिक खाद (प्रति हेक्टेयर):

नाइट्रोजन (N) - ४०-५० किग्रा

फास्फोरस (P) - ५०-६० किग्रा

पोटाश (K) - ८०-१०० किग्रा

आधा नाइट्रोजन और पूरा P-K बुवाई के समय दें।

शेष नाइट्रोजन ३०-४० दिन बाद टॉप ड्रेसिंग करें।

७. निराई-गुड़ाई और पतलाई (Thinning)

बुवाई के १५-२० दिन बाद पतलाई करें, ताकि पौधों में उचित दूरी बनी रहे।

खरपतवार नियंत्रण के लिए २-३ निराई-गुड़ाई करें।

८. रोग और कीट नियंत्रण

अल्टरनेरिया पत्ताझुलसा - कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का छिड़काव।

झुलसा रोग (Blight) - मैंकोजेब का छिड़काव।

गाजर मक्खी (Carrot Fly) - नीम तेलस्प्रे या जैविक कीटनाशक।

खेत की अच्छी सफाई और फसलचक्र अपनाना जरूरी है।

९. फसलकी कटाई

बुवाई के ९०-१२० दिन बाद गाजर तैयार हो जाती है (किस्म के अनुसार)। जड़ों को धीरे-धीरे उखाड़कर निकालें। कटाई के बाद पत्तियाँ काटकर अलग कर दें।

१०. उपज (Yield)

अच्छी देखभालपर २५०-३०० क्विंटलप्रति हेक्टेयर उपज मिलती है।

११. भंडारण और विपणन

गाजर जल्दी खराब होती है, इसलिए तुरंत बेचें। ठंडे गोदाम (०-४°C तापमान) में ३-४ महीने तक रखी जा सकती है।

लेखकों से निवेदन

मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें। रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें। ज्यादा लंबी रचना न भेजें। सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, साहित्यक, स्वास्थ्य, बैंक व व्यवसायिक से संबंधित रचनाएँ आप भेज सकते हैं। प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें, साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें। आप अपनी रचना ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं। रचना यदि डाक द्वारा भेज रहे हैं तो डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। स्वीकृत व प्रकाशित रचना का ही उचित भुगतान किया जायेगा। किसी विशेष अवसर पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम एक या दो माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके। रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

Add: A-102, A-1 Wing, Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:WWW.swarnimumbai.com

www.swarnimumbai.com

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

ADVERTISEMENT TARRIF

No.	Page	Colour	Rate
1.	Last Cover full page	Colour	30,000/-
2.	Back inside full page	Colour	25,000/-
3.	Inside full page	Colour	20,000/-
4.	Inside Half page	Colour	15,000/-
5.	Inside Quater page	Colour	07,000/-
6.	Complimenty Adv.	Colour	03,000/-
7.	Bottam Patti	Colour	2500/-

6 Months Adv. 20% Discount

1 Year Adv. 50% Discount

Mechanical Data: **Size of page:** **290mm x 230mm**

PLEASE SEND YOUR RELEASE ORDER ALONG WITH ART WORK IN PDF & CDR FORMAT

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra. Phone: 9082391833, 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:WWW.swarnimumbai.com

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

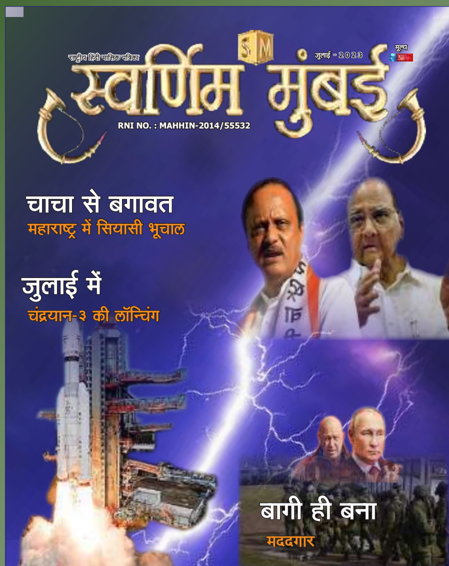

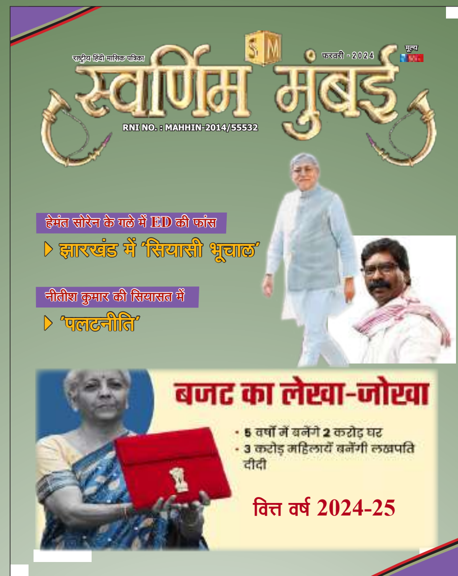

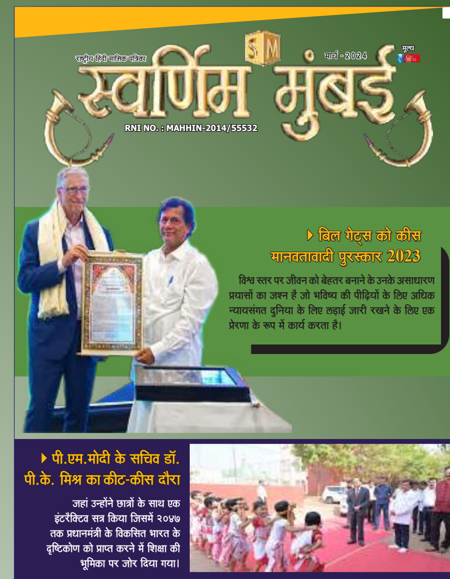

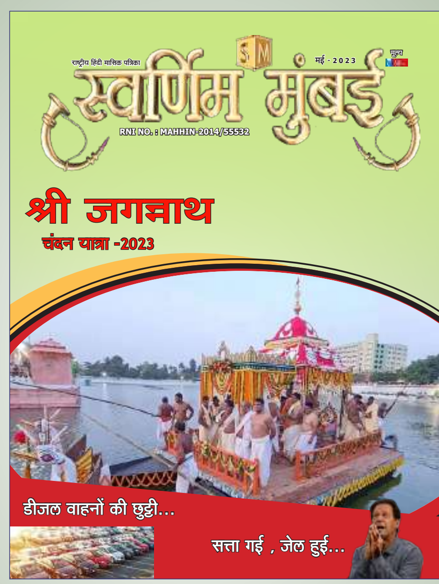

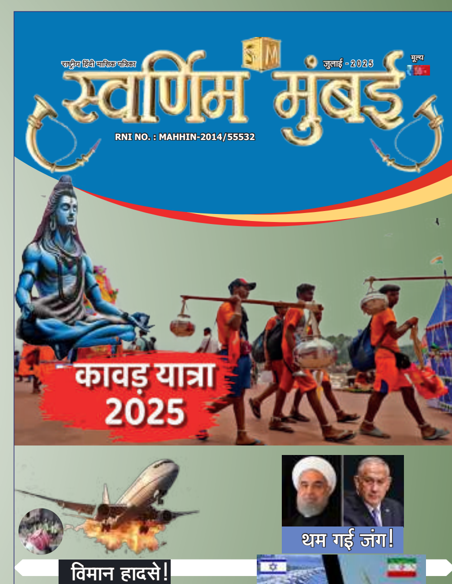

SWARNIM MUMBAI MAGAZINE

राजनीति, कहानियां, ज्ञान,
मनोरंजन, प्रेरणा सब कुछ
'स्वर्णिम मुंबई' मासिक पत्रिका में

Read Now / अभी पढ़ें

www.swarnimumbai.com

संपर्क: 9082391833, 9820820147